गन्तीग रोजायनमः॥प्रताम्पसर्वत्तपदारविंदं स्रोर्महें प्रस्पपदांवुर्जचतमे।तितर्फ्रातयंत्र ८ कन्बेषां राजस्यटी को मलयेंदुस्त्रिः ९ अग्रप्रयतः प्रारंभितस्पमकतग्रंथसारभूतस्पर्यचराजग्रंथस्पनि र्ततरांतरायनिर्वापणाय शिष्यपरंपराखन्नचयगमनाय जन्त जनमनः तल्पडमायमा एस्वाभी छदे वतागुरुनमत्त्रारएर्वप्रयोजनसहतग्रंथा विधेयमादने ग्रंथकारः फ्रांसर्वज्ञ परांडजंह दिपरां मश्पप्रजावप्रदेष्त्रीमंतमदनात्वा सरिष्ठगुरंत्वल्पा एग्वल्पडमं लोकाना दितकाम्पयात्रहुरुते सग्रेत्रगजागमं नानाजेद्यतं चमत्क्रति करंसरिमदेंद्राभिधः • स्परार्थमेतत्॥ अत्रसर्वज्ञप दारविदप्रणमनं अक्तमेवेति तेनैवणास्त्रे असर्व ज्ञायाः संजावात् अप्रयग्रं यक्तदेतन्करण कारएमाह्ग-अपारेसंसारेकतिकतिवृञ्चवर्ननुनराः परंतेडेर्वाधंग/एतमराविश्रेा 6मति। क्तः ततः बासंसारं विश्वदमिद्मत्यंतमगमं वितन्वदं शास्त्रं हृदयहदानं द क्रतये २ क्रुआ

गम

वयाभरेः भोटरला खरेतप्र श्वेविमुद्धः परभतमित नयाम सन्यामयनि जुवापि पंत्रल स्नामे ए क् स्तयाबदुबिधायवनेः स्ववारापा यंशागाप्ता निजनिजप्र तिनाविशेषात् सान्वारिधीनिववि ,लाट्रारअधाययावनत्सारभूतमखिलंत्रतिपाधतेत्रेण्ड्रास्प्रश्रार्थाश्रयस्वक्रादेवयंत्रगनमहिमां ेनमा चरेरे क्या नहत्रे एरकस्त्रेयेवार्यः ४ इदमपिप्रसिद्धं न्य्रचप्रत्यं शेराष्ट्रपेशस्पक्रमजीवाके एकाःक लादिकाः संगतरा लित्वंते गञ्जय ज्ञमज्यः नयना यत्पा द्ववाधः कतिका दिकंतदतीत भोगपातरत्वं उत्तमं यस्पाहतं एयपालेनयतं अमेन्द्रमें क्रियाडुन की टिमेर्वि ५००, म्प याचा अनकी टिजा नयने जनकी दिनागाना मधसाधक लिका विकला दिकंनवति तरा तरती तमा गणंतर रवेड के नगु था नं यह्याहतं राज्यंप्रलेशिसं अमेरन्द्रमां च भुजको दिमेशिसात् १७०० जे। २१ - २१ गा रेवः परमको ति आगा २२१३५ एयंग जुज ज्यानयनार्थ एतएव जुजांशाः करवंते । यथारा शित्र यस जुज संत्ता इति । त - अवोगराशिः विंशरदेश एते बांगु जन्यानय नंयया गय मा नन्य नंय नग अमन्या के एक अयो विं र्णनामधस्तात्राप्तंफलंकेला १४०५ विकला ३९ तम्पांतरं ५७।३९ अनेनअजनागा नामधस्याः कला र्य उएवंते जाता १९९४११२६० अधस्त मं कस्प यसाना गेलव्या २९उपरि हिष्युं ते जाता कला २०१६

2 25/22 43 42 47 49 40 40 88 86 89 89 86 84 78 88 83 57 80 38 38 38 38 39 38 38 38 38 38 38 38 38 38 38 38 an 35 46 28 2 31 1 1 2 28 3 1 4 24 24 2 224 3 3232 46 3 14 2278388 1 24 40 43 4 7) . ···· 1 5. 5. 8. 4. 0. 2. 5. 1 64 21 81 31 6 25 32 45 15 65 25 45 8 56 25 35 35 The 11 m 4 . 3 . 2 . 5 . 3 - 3 . 1 4 46 48 4 1 5 88 8. 36 31 2 5 1 2 5 23 44 4. 13 32 33 . WILL & 3 x y & s = e + 12 12 13 1x 14 15 10 12 14 2 71 27 23 25 24 29 3 25 24 29 30 25 24 29 30 Digitized with financial assistance from the overnment o aharashtra

on 11 June, 2017

एयां यह्यानागे खेळ्याः कलाः ३३/३९ इर्द्ध कला ९४०६/३६ यो ज्याजाते परमका तिनागते ज जज्याकला दिका १४४०१ ९९१ अध्यक्ष मेरणको विज्यानपते ११ देकी त्यं ग्राः एव नुजन्मागा २३/३५ १ ते ने वते फ्लानाः ६६/२९ इर्द्ध किनागते मेथः आतं फलं कला ३२९८/४६ नदधो ज्ञारं २५१३ अने नजज नागा नामध स्थितं २९ संछ एप यह्या विन्तज्य कला २०१६ उपरितनां केक्र मेरण दिप्युते जाते. को विज्या ३२९९ १९२ अधिक्ष मेरण जुजज्या नयने ११ जुजनागा २३/३५ उत्झ्रमज्याका एव के अर्थु जना गाना मधः आतं कुला दि २८६/९९ नदधो त्तरं २६५ २ अने नाधस्तनाः कला गुरुएयं ते यह्या जागे लघ्दे अर्थु जना गाना मधः आतं कुला दि २८६/९९ नदधो त्तरं २६५ २ अने नाधस्तनाः कला गुरुएयं ते यह्या जागे लघ्दे १४/ ३६ उपरितनां के यो ज्या जाताः परमकां ते रूद्ध मज्या दिव्या प्रान्त केला ग्रा २५३५ उत्झ्रमज्या के एव २४/२ अप ज्क्रमे सिंका दि २९४९ १९ नदधो त्तरं २६५ २२ अने नाधस्तनाः कला गुरुएयं ते यह्या जागे लघ्दे १४/ अप ज्क्रमे सिंका दि २९४९ १९ व्या प्राग्रक्त के दिभागा ६६।२२ तत उक्झमज्या की एव के छको एनगग नामधः आतं कला दि २९३९ १९ व्या मेरा गुक्त की दिभागा ६६।२२ तत उक्झमज्या की एव को एनगग नामधः आतं कला दि २९३९ १४ व्या मे गुक्त की दिभागा ६६।२२ तत उक्झमज्या की एव को छको एनगग तामधः आतं कला दि २९३९ १४ व्या स्वजन्म की दिभा मे मुझ की लिज जा सिंग के को दिन्या तम्ब पान जना ॥ गते फलां के जनको दिमार्क्या स्वर्ध गाल्झा प्रखवाः स्थितो काः यह्या इत्य प्र्यं

• :

5 3 = 4 10 111 13 18 14 16 1 10 10 10 20 21 22 23 20 24 28 26 00 44 45 30 44 47 49 85 88 80 34 31 20 20 15 4 3 34 48 18 6 44 49 38 3. 14 . E 277 20 20 20 20 20 14 14 14 14 18 18 18 18 18 18 18 19 19 19 19 19 14 14 14 14 14 14 15 15 13 13 39 1 88 39 14 4 49 88 20 - 0 44 83 88 - 2 42 32 98 9 86 29 3 44 28 8 88 24 8 4 09 18 40 30 . 1 34 16 48 20 40 24 13 33 42 42 32 0 13 39 25 43 24 44 32 5 44 39 80 83

तरकेषि जत्तः क्रमाक्तमाभ्यांतदधः कलादि ५ व्याव्या ॥ हर्वनु जज्याका टिज्याच साधिता तस्य जत्यप्रा प्रस्त ज्वेपति तदूर्धकेषि कां काधनुरंणः स्षः श्रे यं यषिष्ठां के एकाधः श्यितां के न क्रमेए विक्तन्तं धनुरं प्राना मधत्ता न्यत्तं क्रमान्त्रा माभ्यां कवादि वंधनुर्श्ववति ॥ उदा दर रणं ॥ हर्वि वहु जज्ञ मन्त्या ९४७ । ९५ श्वस्याः श्वधस्त्रियाविंधाति तमका एकाधास्यितक मज्या के एकांका ९७० ६ १३९ पाति ता श्रेषं २२९ २९ यष्टपा संग्रंथात्रे याविंधाति तमका एकाधास्यितक मज्या के एकांका ९७० ६ १३९ पाति ता श्रेषं २२९ २९ यष्टपा संग्रंथात्रे मात्रे २० ९९ एत धत्तन को एकांत रांकेन थ्या २२ २२ राज्य ति स्वतंका २९ धनुरं प्रानामधोद स्वाधनुरं शासपन्ताः एवं सर्वेत्र वापसाधनकार्ये॥ अध्यत्रत्य राश्वित्र प्रान्त्र या २९ धनुरं प्रानामधोद स्वाधनुरं शासपन्ताः एवं सर्वेत्र वापसाधनकार्ये॥ अध्यत्त्वे राश्वित्र व्याक्त्र या १९ स=ांति के एवन / लत्यते ॥ अधक्रांत्यानयनं ॥ स्वादधश्वित्व कि विकादिक स्यादनी त्रे भग्यत्य २ ताष्ठितंतत् यष्टाहतं ज्वत्वति अत्र यंत्रे स्प्रराः क्रातिक सान्वतंत्रि २ ० प्रस्य व्यास्त्रा लवानां ज्व नां प्रान्त स्वान्ता दत्व ति अत्वन्त्वति तदा स्वतीन न्योग्यां तर्या उत्त यत्या नक्तं ज्व ज्या हा स्वान्त्र स्याहतं व्यात्र का लवाति यत्र स्थान्त्र त्या प्रितं वर्यान्य के ज्वात्र

8.

षु तद्दशानामधः प्राप्तं प्रतं वला दि २२९२२ नदधोन्तरं २२९४२ अनेनां सरे एप र्र्वास्त निंशत २० उएपंते झाता ५६०१९२२ अधें वर्ष्त्य यक्षानाणे सच्याः विकला २० उपरिव्रसाझाता १०० जनः य ष्या नसाः तब्यं ९९९५० एन5न प्रखे २३९१२ नियुक्तं क्रांतिकलाः संपन्धा २५०१५२ एवं सर्व झापि लवाना मधः कला दिवं नवति तत्रे पंत्र जीया अर्थ जांद्र रोग नवति ९० ते यां मधः कला दिवं नास्ति ततः क्रांति प्रख्या देवं नवत्यं प्राप्ता नामधः प्राप्तं प्रखं कांद्र रेश्व के यां मधः कला दिवं नास्ति ततः क्रांति प्रख्या देवं नवत्यं प्राप्ता नामधः प्राप्तं प्रखं कांद्र २०९७ एता नवति न्जा गा नैःत्म कस्प एष्ट्रा झ्यास्य परम्क्रांतियला नवति । अप्रासामेव वर्खाना वर्ष्यान्जा जे तब्या परम क्रां संग्रा २२७४ रवमन्य झापिक्रांतिसाधनं कांधी ॥ अयमत्यं प्रार्था नाम्र प्रात्ना नां विप्रात्र में प्रात्न कां प्राप्ता व्याप्त त्वमन्य झापिक्रांतिसाधनं कांधी ॥ अयमत्यं प्रार्था प्राय्तान्ता जीत्र क्या प्रात्ना क्रां त्रां प्राय्ता कां विप्रीतमाधी मेयप्रमाणेन १९१९ इताहताच अत्रस्य पानुक्रमयातृ तोय झव्यं प्रतं नच्छक्त दिनस्य प्राप्त्या मार्थे अर्जा प्रातानां याविप्रीतमेत्रि मेयप्रमाणि नद्र त्यु जक्र प्रज्या नकता आप्रायन्प्रतं नदि तस्य श्रव्यक्तं र्थि अत्र क्रां या प्राप्त प्रयाप्त्र क्रांतन्त्र उत्तक्र मज्यया नकता

ब्ह्युमा ? एवामुन्क्रमज्या ०१३२ इयंमैधतुलाप्रमालिन १९१३ टगुएपंतेजाता ११६२७ भूभभ अधलनां तस्प •لع ब्रह्माभागेलच्चं २० ग्रेचं ५४ लव्यांका २० उपरितनां के यो जिना ६४ ० एघाम पिषसा भागे लव्याः १० जन्दर भाजसाधी एक उपरितनप्रत्यस्यानेस्यापिताः जातान्त्रमे एान्द्रनाद्य १०१४७१५४ ततः स्त्रासां नुजन्नमज्यया ६२.५५ いちちゃつ नागदानार्यदेशयस्यागु एयते ६०० एतन्मध्ये सिप्यंतेज्ञाता ५४० गप्थ एवं जुज्ज मन्पां केपि ६२ म शागरितः पंचाराद्यतः ३७७० एभिः ह्वीकस्पनागे लब्दंप्रलंनागार्ये ०१० एतन्वधमंग्रस्य गुझ्याफलसकलंउच्यतेग एवंनवत्यंशग्न यावघुझ्याखंडकानिप्रतिफलानिसाध्यानिगज्ययनव L'ENERGY I तेरधिकेरेख गुज्याग्वंडोत्या-नं अप्रदर्धमानेनवतेर खांग्रेके दिक्रमज्याति मयातु यक्त तुलाजमानेन १९१३ इता विलका काम ज्यया वा इज या खवादि ९११ प्रसादया त्या नवते रूप विशो स्थित शतपर्व तं यग्रं यद्य क्रियति नदाको टिकमज्पया अंत्यमज्यासदिनयामेषत्र ना भानेन गरणनया जनकमज्यया अक्तया सब्ये सवादिनवत्य धिका प्रकान गुज्या खंडा निभवंति ॥ अत्र्या राष्ट्रण ॥ अप्र राष्ट्रपादि संदर्भ ११०१० वेंड्राडुनान यनं पया "आद्गितयाद विकल्पंच्य धिकं वेंड्र विरोगध्य नयं झ्या अग्र धिक मूर्न "

वर्षिर्मबाधितंशोधये खञांत् ॥व्याख्या॥ राशित्रितस्य ते इमिति संज्ञा ॥ तच्च ते इंश्राचित्रया श राशित्रयात् अबितर्खं किचिन्नयास मित्पर्यः तच्च ते इमेव गुजाः ॥ तच्च थितं सत् खऊः शेण ध्येत् यउधिक ते इंश्वार्क्त रुवे में वाधिक ते दं ईचका प्रशिक्ष रुगे ध्येत् सर्वजापि शे बांको गुजाः अञ्च ज्याधिक ते इमम्ती ति ब्रङ्गा श्वेतिः केंद्रात शेधते शे ये जुजाः २०२९००० ग जतः को दि रानी यते ॥ राशित्रयाद स्मिन् जजे पति ते शे खाके दिः ०० ९००० जरम्पा को निक्र मज्या ६२ ९५० द्वां स्वार्ग्य थ्व सहिता ३६६२ ५५० मे य वुलामाने न ९४७ द गे ग्राम् त्रिक्त या छल्पते जो ते तिक्र मज्या ६२ ९७ त्वं त्यज्या ३६०० सहिता ३६६२ ५५० मे य वुलामाने न ९४७ द गे मुद्ध त्र त्व क्या ग्राल्या को निक्र मज्या ६२ ९७ त्व ये त्र म्य १९६० अधसानां केस्य ९९० खर्पाना ग्रे लब्धा द्वा ग्रे त्व कया छल्पते जा ते त्व स्वात्य दे ९० द स्विता ज्य द १९६० अधसानां केस्य ९९० खर्पाना ग्रे लब्धां ३९ एतन्मधे ९५० जिप्पते ज्ञातं २९९ त्व ये तन्मध्य १३९ ९५५ निप्पं ते जातं २९९२ ७२० एस्यामापि यह्या न्या ग्रे लब्धां त्व ज्या का ज्या द २९२ रो ये २०१४ लब्धां का उ पर्य के ६९५० द सेप्यं तातं २९९२ ९४० एस्रामापि यह्या न्या ग्रे लब्धां २९२२ रो यं २०१४ लब्धां त्वाउ ग नव्य मे कनवत्यं शानां युज्या प्र लं त्वा प्र उ र ९ एवं युज्या पत्वानां इपया २९९२ रेप्या अच्यार्थन वां शा कानां युज्या प्र लं यहन्तं गण्य इत्ता राके यः छाहिया तर्द्य केंड तचाव्या भ्य

| मरा | ٩ | 2 | 3 | r | ٩ | E | 6 | 7 | ~ | 2. | 12 | 12 | 13 | 18 7 | 1-1-1 | 4 | de | 39 | 25 | 2. | 22 | 22 | 23 | 25 | 24 | 24 | 26 | 35 | २९ | 90 |
|---------------------|-----|---------|------|-----|-----|------|---------|-----|-------|-----|-----|---------|----|---------|-------|----|------|-----|--------|-----|-------|------|-------|------|-----|------|----------|-----|------|------|
| g7 | 0 | 02 | 00 | 00 | 80 | 09 | . 1 | 02 | 12 | 50 | 09 | 02 | 02 | 12. | 2 | 2 | 2 | 3 | 3 | 3 | Éa | 3 | 8 | 8 | 8 | ¥ | 8 | 8 | 4 | 4 |
| | 10 | 20 | 30 | 81 | 49 | ٥٩ | 12 | 22 | 32 | 83 | 42 | 03 | 18 | 38 | YE | 64 | 44 | .5 | 25 | 20 | 35 | 84 | 0 | 20 | 29 | 32 | 83 | 48 | 4 | 24 |
| - भंत | - | 0 | 0 | 5 | • | * | 0 | • | • | • | U | | | 10.000 | 023 | | | • | 10.000 | | 10000 | 1270 | 1.000 | 1.5 | | | • | 100 | 1.22 | 1201 |
| 1 | 50 | 1. | 11 | ~. | ۹.• | 12 | 1. | 11 | 1. | 1. | 1. | ~• | " | 5 | 1. | 1. | ~ | 1. | 11 | 1. | 12 | 21 | 1. | 17 | ** | 11 | 11 | 11 | 10 | 1 |
| ःप्रेश | 39 | 32 | 33 | 31 | 34 | 34 | 36 | 32 | 36 | х. | 82 | 82 | 3 | 2.0 | 84 | BK | 80 | 80 | SE | do. | Ma | 42 | 43 | 48 | un | 44 | er | ye | 44 | 63 |
| D ± D | 5.5 | ५ ३८ | 7 80 | * * | 5 | 5 | 8 33 | 24 | er er | 36 | 20 | e 88 | • | 9 44 | 2 2 | 20 | 52 | 5 | 23 | 2. | 22 | 2 | 4 | 2. | 20 | 20 | 1. T. | 2. | 27 2 | 27 |
| त्रंत | 0 | v | 0 | | • | 0 | 0 | P | v | 0 | • | U | • | • | • | • | • | 0 | 0 | 0 | • | | | • | • | • | • | • | | • |
| - | | - | 1 | | | 1 | 1 | 1 | - | - | | | 50 | 10. | | | | - | + | + | 177 | 100 | 1 | - | 1 | - | 1 | 1 | - | - 1 |
| यउप | 129 | 17 | 13 | 12 | 12 | 12 | 13 | 13 | 13 | 18 | 18 | 18 | 18 | 14 | 24 | 14 | au | 24 | 15 | 25 | 2 | 19 0 | | 1 | 30 | 10 | 31 | 15 | 7. | 11 |
| | 30 | 87 | 2 | 75 | 2,9 | . 84 | 1 | 15 | 145 | 1 | 12 | 33 | 80 | 8 | 2. | 30 | - 44 | 193 | 20 | 18 | 8.3 | - 23 | 23 | 1 8. | 00 | 14 | 3. | 31 | 14 | 3 |
| | 0 | - | • | | | | | | | | U | | 0 | 0 | | | 0 | 0 | 0 | | . 0 | | 0 | 0 | 0. | 0 | 0 | • | • | |
| 777 | 1.0 | 14 | | 124 | 124 | - | 10 | 1-1 | 124 | the | 116 | 12 | 14 | 129 | 20 | 1 | 1 | 10 | 3 | 2 | 1 | e 11 | | 2 | 4-4 | . 7. | ۹. | ٦. | 2. | 3. |

a. 11. Exer. 50 + K3 K8 FULLE PULLE - भंघा ~2 02 गुज्या - श्रंतर 2 55 R-Fol 202 3.05 2.0 2 : 211 202 002 2 2 2 2 2 4448 2 .. 30 2 870 24 24 24 24 35 25 24 24 3. 32 30 39 32 33 34 g 30 20 1 32 3 38 10 89 22 591 24 40 20 83 ° 2° 2° 2° 2° 2° 2° 2° 2° 31 31 33 38 38 34 0 0 0 0 0 24 24 24 29 29 22 22 23 23 23 23 3, 39 80 00 34 34 म ** 336 3. 23-222 132 305 r 386 125 3 140 124 E ñ 33 " n 3. D 3 3 38 34 3E 36 36 30 3E 34 41 42 43 44 49 45 40 22 58 24 45 83 88 84 86 23 86 84 EC 36 33 8. 81 E 12 10 26 30 43 11 33 49 20 2 88 20 10 .4 24 0 99 ... 10 20 32 49 20 5 0 3 ... 0 . 0 12 .2 --- -..... 2 2 2 -9 E 12 44 9022 25 2038 42 88 41 40 3 12 88 84 49 42 48 3 4 78 88 28 34 40 3 1434 34 3 L 236 552 15 593 万万 * 23 4 22 50 40 and and 2 356335 44. 462 24. 4 25 40 24 2 25 45 26 24 32 154 20 199 3224130 1 1 3 24 4 25 40 14 2 25 42 8 4 4 4 3 5 2 2 10 12 18 3 44 24 42 32 23 23 24 3 25 30 4 2) 7 r. r2 1 34 x 3 x . x 3 . 8 x 20 24 31 80 40 92 33 2 10 म्म 222 421 137 14 34

 न्यत्रापिकार्य॥ अप्रथसे म्ययंत्रे इएग्सां शगनां उन्द्रतव तय के इच्या सार्धप्रमा गानयने ॥ पले विदेशना गगना एचं दाः २०० द्रेग्या सयात्ताः प्रथणेवधार्याः शया स्त्यां वी सरसंद्र के ज्या युज्या प्रसंवे परिसाधनीयं २२ तद स्तर्स सेनफले नद्देनं उक्तं व्येग्रे या सफले विधाय अर्धविधे यंच ततः क्रमे एग् वेंद्र न्व विधाय यत्तं कु जा खेर २२ हो ये तया सेच यया जिती हागः शाध्य स्वाया प्रविवद स्त्र रात्या कार्या गि केंद्रा छा सविस्त रा िएग् रज्जा व्यवसा निपरिस्क दानि २४ ॥ ए० रवांच्या रवा गि केंद्र म्या सा हा प्राय्त या स्वत्या निपरिस्क ना ए रुपाः आश्री त्यधिक प्रात्ता हा राज्य हे न आत्तां प्राय्त या स्त्रे हा हिर्म राज्य ना ए रुपाः आश्री त्यधिक प्रात्ता छा २० देश्ना क्षत्ते व्या शार्थ्य या प्रतिः स्वते प्रात्ता हिर नत्ता स्त्रे या स्वत्य प्रता या राज्य र्यं विधा शार्थ्य या स्वर्य प्रायत्य य फलं दिस्य मेवत्व देशनं अपत्व प्रयंत्र उत्ते प्रार्थते स्वर्य प्रायत्य यत्या सि य फलं दिस्य मेवत्व देशनं अपत्व प्रयत्न यत्व स्वास्त्र मरणकें प्र विधाय य फलं दिस्य मेवत्व देशनं अपत्व प्रयत्न यत्व स्वार्था प्रार्थतं स्वर्य प्रायत्य क्र या सा स्त्रा स्त्र कें द्व यत्व यत्व दिश्व स्वात्त या स्त्र स्वत्व क्र ना स्त्र मेरणकें प्र विधाय य फलं दिस्य मेवत्व देशनं अपत्व प्रत्य यत्व संत्र स्वत्व या सी प्रार्थतं स्वत्व या सी प्रत्व स्व य क्र कें दिस्य मेवत्व देशनं व्ययत्व यत्व स्त्र संत्र संत्र मेरणकें प्र वा सि स्त्र या स्त्र स्वत्व का स्वर्य संत्र संत्र संत्र संत्र या से स्वर्य स्वर्य के क्ल स्व स्वर्य संव स्त्र संत्र संत्व संत्र संत्व संत्र संत्र संत्र संत्र संत्र संत्र संत्र संत्र संत्र संत्व संत्र संत्

सरय नवतः तदनु आस्प्रोये से समेयादियट्पर्यतं तेष्ठ इयो स्रतोष्ठेयपातितेषु आस्प्रो यादसाखर्श्वास्त्र रात्पातावदुन्ततां शानां जे जो प्रिय्ता नां केंद्र व्यासान यतं ॥ अत्रौहा द राणे ॥ श्रीमधोणनी पुरे या म्या त्ता शाः २०१३०० १ते आ श्रीत्य धिक शतमध्ये पात्यं ते रुषं शा ५५५२ (२न्यो घुड्या फलमानी यते ॥ यया ॥ राशियद्वस्प त्वा से रात्र भये पात्यं ते रुषं शा ५५५२ (२न्यो घुड्या फलमानी यते ॥ यया ॥ राशियद्वस्प त्वा से रात्र भये पात्यं ते रुषं वो छ १ क पंचा घार्ट्या प्रजनमानी यते ॥ यया ॥ राशियद्वस्प त्वा से रात्र प्रमा राये म कतड्या के रि वे छ १ क पंचा घार्ट्या प्रजनमानी यते ॥ यया ॥ राशियद्वस्प त्वा से रात्र प्रमा राये म कतड्या के रि वे छ १ क पंचा घार्ट्या प्रात्य प्रमानी यते ॥ यया ॥ राशियद्वस्प त्वा से रात्र प्रमने नं न रात्र राज्य के ता २० अपर्यं ते जाता ७२१ १७० अधलन नां वास्य यहाराम्राणे लब्या २० रते उपरिया झ्यं ने जात पर रत्ने युड्या फर्वा वा मध्य अपाप्त ने वास्य यहाराम्राणे लब्या २० रते उपरिया झ्यं ने जात पर रत्ने युड्या फर्वा वा मध्य अपाप्त ते जातं २६१ २५ (वडालम सार्थ्य प्रात्य की नागा यं अने ने वा क कारे ए रत्ने युड्या प्रतं प्रमा धान्य ते जातं २६१ २५ १ अस्तां प्रात्य हो नागा यं अने ने वा का घ उत्त स्थान हरे म्याप्या साध्य न दिदं भा १ अत्यत्र याज्य प्रस्ता वा वशिर्श के १७दि कते ाका रात्र प्रमयाप्या साध्य का रात्य खात्र या जयत्र याज यित्वा चा वशिर्श के १७दिन कते ाका रात्र हरे प्रयाप्य साध्य रहा का रात्र अप जुज्ज खता दरे ते ना ना मुन्त्र ता रा-च द्यातां केंद्रव्यामानयतं॥ द्वीन्त्रारुस रोखात् २०२०२ घडुन्नतां प्राः पात्येते श्रेथां प्राः २९२२२ अहां शे न्योपिरूपः र मरूपात्यंतेजाता सांग्राः २०२२२२२०३९ एम् इद्वीत्या साधितं केंद्र २९२२ व्यासऱ्२०१९६ पत्रात्य खाटसां श्रेभ्यः उन्नतां प्रान्तप्रतंति तत्र छक्तिमाह ॥ स्वरस्त केवेदधि कोन्नतां प्रा देनन्यी स्वपाते विदिते तर्धव छुन्याप्र लेतहपतः प्रसिद्र उन्हानितं श्रेथ-नवे सजातं २५७ आसं, २०१९६ पत्रात्य खाटसां श्रेम्या उन्नतां प्रात्त प्रायः प्रसिद्र उन्हानितं श्रेथ-नवे सजातं कोन्नतां प्रार्थे कर्तव्यासा प्रदेश्व द्वी उन्याप्र लेतहपतः प्रसिद्र उन्हानितं श्रेथ-नवे सजातं २५७ आहे कान्नत्यासा प्र अनयोक्त्यासायर्थाः यदान्त्र सां श्रेथ्वत्या सेचविधाग येग्गत्त खे बकेंद्रणि भवंतिव्यासाः ६ अनयोक्त्यास्याः यदान्त्र सांशेन्यः उन्हातं श्रान्त्र भयिकाः तदा उन्हातं इग्रेन्ये स्वांत्रां प्राः पात्याः ततः प्राग्वत्युज्यादने समानीतिहिस्प्रे श्रेष्ठप्रान्त्र विद्यान्य सायन्त्र केंद्र पश्चादर्धक्रिते तावदन्ततां प्रान्ते मण्डयोसोभयतः तदर्धे इप्रिताः व्हेभ्य प्रतित्तां प्र अन्नतेत्व त्याः जतागः

भ्य संसंग्रे आतं २२२ तेयर संप्रमण्ड एयां छड्या प्रखंयया छे या प्रानां छुड्या प्रतं ३०१२२ अस्त प्रा छुड्या फलं २२२ तता किस्ये छुड्या प्रलेश् संगरा छात्र छेन छ के अधि करते त्विरा छत्र तं भ न ते के ६ २०१२ दियास २०२९ ति तः पर मे सिता शात्र शेवां शे नीग दि शोभ्या सां छा छत्र सा च हती क छड्या फल प्रक्रेया न देख ल तां श्रप ये ति के द्व्या साः साध्ये ते अध्य या प्रापंत्रे र हो शा मां डल्त तव क्य के छड्या फल प्रक्रेया न देख ल तां श्रप ये ति के द्व्या साः साध्ये ते अध्य या प्रापंत्रे र हो शा मां डल्त तव क्य के छड्या फल प्रक्रेया न देख ल तां श्रप ये ति के द्व्या साः साध्ये ते अध्य या प्रापंत्रे र हो शा मां डल्त तव क्य के छ व्या सार्ध प्रताणित यत्रं न अस्ते पि सी जे ये यत्र शिवा की ज्यू ह्या र खिल न व क्य हित्त से अद्या पि से ज्या दित ये दरिया का ये विशेषः छन रे ते हो ये तथा से च स्वमी दितां झाः से पान च का ध्रम दित ये दरिया का ये विशेषः छन रे ते हो ये तथा से च स्वमी दितां झाः से पान च का ध्रम पे तिया वत्र नार्धा धिकं यत्र दिवा स इये नच्छा धितं प्रत्या सात्र के स्वय तथा है च यये छ न त्या त्र प्रति वा तर्दा त्य त्य त्य त्य त्य त्य त्य त्य त्या त्य क्य तथा हिन्य यये छ न त्या त्य क्य के ही तंग दर्ध जवति ह्य तत्य अत्रो स रे ये यत्य ति तेन कान्द्र छिये तथा हैन्य यये छ नात्रान् १९ नियिष्य दलान्च क्र ते यथी विशेष स्वान्धा त्या ए संव्य तथा स्वि क्या ग्या त्य ज्या त्य क्य संव्य निले क्यानी पानिय यो दि या पात्र आत्र ए यो खा स्वा स्वा ग्या की या ग्या ये ये खु स्वा शेण्या यं ज ~ छेजवत्तानयनं कुर्स्पमेव अत्तात्रापि याम्ययंत्रे माम्पपंत्राक्त येवप्रक्री य यान्उजवत्तस्य कें प्र व्यासिासध्यो अन्न्रग्रतः केंद्रव्यासानयने माम्पपंत्रादयं विद्रोघः कायमित्याहः क्रेथो प्रेविश्वादि प्रदूपर्यता इष्टान्ततां प्रान्चकार्धं अप्रशात्याधिक शतां प्रात्ते म्यवन्न्र मेण्य्ये व्रक्ताया गतते छुज्याप्त क्राफतानयनं साम्पपंत्रवत् अचक्रॉ दूर्घे छनः प्रत्या सान्वकेन्य ३५० न्त्रस्त्र केविशाधिते भाग्वत उत्तरवा मयनं साम्पपंत्रवत् अचक्रॉ दूर्घे छनः प्रत्या सान्वकेन्य ३५० न्त्रस्त्र केविशाधिते भाग्वत उत्तरवा मयनं साम्पपंत्रवत् अचक्रॉ दूर्घे छनेः प्रत्या सान्वकेन्य ३५० न्त्रस्त्रकेविशाधिते भाग्वत उत्तरवा प्रवेशय को साधिते व्हर्स्य देशे यहान्द्र त्रां छात्र के केव ता कडन्त्र ता ना केंद्रव्या साम्पति तदव्यप्रन्या सानने ज्यः भावर्द्रभाधिते उत्तरी यहारे केवि ना कडन्त्र ता ना केंद्रव्या साम्पति तदव्यप्र न्या सानने ज्यः भावर्द्रभाधिते उत्तरीये इष्टे स्त्रतां इगन्य पत्र विद्राश्व केव्र केवि ना कडन्त्र ता नो केंद्रव्या साम्पति तदव्यप्र न्या सानने ज्यः भावर्द्रभाधिते उत्तरीये द्रिष्टे प्रत्य का क्वरने ना कडन्त्र ता ना केंद्रव्या साम्पति वत्यं प्रपत्रं सर्वे केंद्रव्या सान्वत्रेयः भावत्रियः गतानिस्त्र से प्रप्रान्य पाम्यानि केद्रभ्य त्रिये वान्यते वित्र वत्रे व्यास प्रकाण का त्राता साम्पत्र व्यात्व रूप्ता प्राप्त क्वर्य प्र्या खारा भावत्य क्र स्ता प्राप्त केव्ह प्रयाद्व व्यास प्रकाण रक्ष ३९ एक्यप्राग्वत्य ट्रं त्र ता शानके द्र प्रदे प्राप्त स्व क्वर्य कार्य पावत्

वस्र भारत्वात्रीत्रज्ञ

अं व्हेडव्यासः एवंत्रियमाणे नव कॉदूर्ध्वियं ये प्रा. १८९२९ आतं प्रा. १९२९ आर्ध-नागा धिक त्वात थे मां प्रा. १९२९ अच्च मध्ये ३६० थे। ध्यंते स्थिताः २०२७ १९ते दे ये ये प्रा. उज ये। प्राग्वत यु ज्या फले सा धि ते शे यफ्र लेन एवज व्यक्ते अन्य द्वे ले अधी क्रते जातं विष्ठादुन्त तो प्रा नां केंद्रं २२. १४० व्या प्तः २२, २९७ यात्त शे ये दे त्ते व्य दुन्त तो प्रा नां क्रयंते त्तिप्यंते जाताः प्रे यो प्रारं २२, १४० व्या प्तः २२, २९७ यात्त शे ये दे त्ते व्य दुन्त तो प्रा नां क्रयंते त्तिप्यंते जाताः प्रे यो प्रा : २५२६ न्द्र प्रा मे २२, २९७ यात्त शे ये दे त्ते व्य दुन्त तो प्रा नां क्रयंते त्विष्ठा द्वापाः २५२२, २५ प्रत्या माः २५२२ २९ अनये। प्राग्व त्याद्वे प्राप्ता नां केंद्रं २५२०२२ व्या सः १४२०२४ प्रत्यां प्रा न वत्यं शाप्यं तं वे द्वव्या साः संपारनी पाः अत्य जित्तां प्रात्त्वे का द्रे यान्से रूपर्यत्र प्र्वत्या पत्रः समविभागा लदंतव तिनां नगराणां अत्तां प्रात्ता नार्थ आधिः कल्पिताः संति ते यां यवननाय या इते ज इति सं जा भागति गुरुनी मराणि अत्तां प्रात्ता नार्थ आधिः कल्पिताः संति ते यां यवननाय या इते ज इति सं साध्र प्रात्त्व प्रि ना मराणां अत्तां प्रान्ता नार्थ आधिः कल्पिताः संति ते यां यवननाय या इते ज इति सं ता धारानि गुरुनी मरा विण्वज्ञ खुर्थ सामाः जमात् स्वाप्ति नण्व एवं तं का प्रति प्रात् प्रदेश्र क्र क्रा स्वति नग म पत्तं प्रांत्र या स्वर्या द्वप्रात्ते २५ ए के ान वत्वा दिशत्व ३५ दिपं चाएरत् २५ प्र घर्ष विष्ठ २५ अप्र सं शान्त्र ये दिष्ठा २२ य द्विं प्राति २५ ए के ानवत्वा दिशत्व ३५ दिपं चाएरत् २५ ए न्य घरि २५ अप्र सं पं. ज. ९ प्रति २ मवतिपर्यता अने नेवज्ञ मेर समजागाः सपरंपंचा प्राप्ता शान पाव मानुव्या लांग्न वासः तरग्रतः बर्थ रिभागप पंतं शातवा इस्पादंधका एख मनुव्या लांभ प्रत्य रे क्यरतः कि नरगंधविविद्याधर सिध्यानां प्रचारो देवन्द्र मयः आपचतुर्भागां तर्व किनां नगरा लांक रवा विवेशारं अत्ता राग्य स्विधार सिध्यानां प्रचारो देवन्द्र मयः आपचतुर्भागां तर्व किनां नगरा लांक रवा विवेशारं अत्ता राग्य स्वर्य ते गत् चया। लंका यामत्तां शाः ०१० अदने २० किंग २९ अना ग्रंदी २९ १९ गंगा सा गरे १९१२ इवसे २९१२ देवगिरी २०१२ व्यंवक सज एवमन नवसरिका यां अत्तां शा २९ प्रज राया २९ ष्वीमराक छेनंदन्त्रे गया उन्हे श्वत्तां शा २२ १० फ्रींगीर्य पत्र लंते श्वतां या २९ प्रज राया २९ ष्वीमराक छेनंदन्त्रे गया उन्हे श्वत्तां शा २२ १० फ्रींगीर्य पत्र लंते श्वतां प्रा २९ प्रज राया २९ ष्वीमराक छेनंदन्त्रे गया उन्हे श्वत्तां शा २२ १० फ्रींगीर्य पत्र लंते श्वतां प्रा २९ प्र राया २९ ष्वीमराक छेनंदन्त्रे गया उन्हे श्वत्तां शा २२ १० फ्रींगीर्य यत्र की श्वतां शा २२ १ छ राया २९ ष्वीमराक छेनंदन्त्रे गया उन्हे श्वत्तां रा २२ १० फ्रींगीर्य पत्र की अत्ता राग्य २९ प्र अपना दिकछरे २९ १४ विरोदिते २७ जाजनगरे २७ १९ ल्या वसे २४ १० भ रे वनका च त्व उक्तवित्यां २२ १० धारयां २३ २० फ्री श्वरण दिस्त प्रा के २४ १० देवनका च ते २४ १३ छरे १९ ४ स्वाध्यायां २७ १२ ना जातात्री २० १२ दक्तराते २० १३ नापी महरे २० १४ प्रा लंज

| and a | | S. Hereit | | | | - | | | · · · | | |
|--------|----------|-----------|---|---|-------|---------|---------------|-------------|---------------|-----------|---------|
| न्नतंश | -प्रहणे- | भ्रत्तांश | वाम्प्रवे | सेम्प्या | - | उन्नतां | -प्रद्वेत्रीय | -अत्रां ज्ञ | याम्प्रकेंद्र | याम्प खास | - जंगरं |
| | 162 | 10 | and the second se | 13135 | 210. | . 0 | 282 | 10 | 15103 | 76163 | 316 |
| 5 | aug | 12 | | Price | 212 | E | 160 | 35 | | 24132 | TINO |
| 17 | 440 | 2. | The second second second | | 212 | 12 | 25 | 3. | | 951339 | 4196 |
| 10 | 144 | • | All and a second se | 30118 | 010 | 20 | 150 | 32 | 010 | EFIZ | FF13 |
| 20 | 130 | 4 | 2513 | 2414 | 999 | 30 | 325 | 77 | 21971 | 102112 | FECU |
| 30 | 132 | 12 | 7155 | 2112 | 218 | 3. | 145 | 8c | 53341 | 0190 | EITT |
| 36 | 7951 | 95 | 2.141 | 20101 | 3100 | 16 | 162 | 47 | 56.33 | 4412 | 9014 |
| ra | 120 | 35 | 1416 | 14189 | Orib | rà | 340 | 40 | 49148 | 80138 | 1112. |
| "o | 118 | 30 | 38101 | 1213. | 4196 | ** | 440 | 64 | ELEN | 3-190 | 17:86 |
| 48 | 3.0 | 36 | ESige | and the second se | \$122 | 45 | 100 | 50 | 361221 | 3165 | 131181 |
| Eo | 1.2 | 82 | 14144 | and the state of the state of the | EFIC | to | 130 | 36 | | 3132 | 14144 |
| £5 | 35 | 38 | 14100 | 5133 | 21 44 | EE. | 132 | - | 3.148 | | peret |
| 50 | 40 | 48 | 18140 | 8186 | | se | 125 | 50 | 2416 | 4175 | 16130 |
| 30 | EV. | 60 | 18137 | 3177 | | 30 | 12. | et. | 36146 | | 38184 |
| 63 | 30 | 60 | 1812. | 134 | 12186 | - | 198 | 1.2 | 26195 | 214 | 22174 |
| 60 | 22 | 22 | 28194 | | 75175 | | 301 | 1.2 | 2013 | 010 | 2013 |

| ज्य तारग | ज्ञत्रप्रेय | :प्रतांश | साम्यकेः | साम्पत्रा | नंतर | उन्नताश | ः प्रतासम | भ्र सार्ग | केंद्रयाम्य | | ञ्चनर् |
|----------|-------------|----------|---|-----------|-------------------|---------|-----------|-----------|-------------|--------|--------|
| o a aizi | 164 | 11 | 1.418 | | in a d | 0 | 945 | 17 | 1.112 | | |
| E | 52. | | and the second se | EMISE | 2148 | e, | 124 | 47 | 53612 | | 2145 |
| 12 | ens | | and the second se | Es138 | | 12 | 135 | 23 | 168,075 | 1 | A 10 |
| 10 | 143 | | | yrige | | 35 | Fer | 36 | 963126 | 146112 | 414 |
| 28 | 2 84 | 12 | SZIJO | 1 | 6192 | 28 | 16/2 | 34 | -615- | 21,82 | 6135 |
| 30 | 134 | 20 | | 28135 | | 30 | 181 | 81 | \$2130 | 4412 | reig |
| 35 | 132 | 24 | 2810 | 35105 | the second second | 35 | 244 | 20 | 86134 | 8013 | £131 |
| *2 | 120 | 31 | 32125 | 14144 | 8124 | | 182 | 43 | Re163 | 3014 | 4185 |
| 85 | 129 | 36 | | PIN | 4120 | 80 | 183 | पल् | 32144 | 33185 | Jie . |
| | 194 | . *3 | reny | 19133 | 5138 | 48 | 136 | 64 | 31112 | 12185 | 15,130 |
| 48 | 1.5 | 24 | 15114 | Jus. | | Eo. | 137 | 101 | 10133 | 18132 | 1215 |
| 23 | 1.3 | 44 | 7500 | - | 1 | | 124 | v | 56183 | 1619 | 26142 |
| se | 95 | 17 | ENINS | | 10148 | se | 416 | 53 | 24122 | · 113 | 6,0000 |
| 35 | 41 | 43 | 18130 | \$130 | 11135 | 36 | 193 | 22 | 7,813. | 6,11 | 14170 |
| 58 | 24 | 3 | 15195 | 1125 | 1217 | | 100 | 64 | 2,410 | 5,32 | 20154 |
| 50 | 30 | 90 | 16113 | | 14137 | . c. | 109 | 2.1 | 2314. | 010 | 2214 |

.

Ø. 11 .

२२ ६ प्नवेदा ४३ सेगम्य शुरेगमा नि सवास्त्र छास्मिन् न पंतर्त्त ने ६ धरा स्विवेदाः ०१ ९९ ४३ वा एग स या म्या प्त्रि शास्त्र साधा ४३ १३ ११ २१ ११ त्रिवेत ने द्र द्र वा एग स्व या प्र्या प्त्र शास्त्र साधा ४३ १२ ११ २ जानस्ता प्त्र २६ २० तत्रा प्रित्त मं वा एग करा कु इ स्ता २५१२ वा एग स्य या प्र्या छत्र वा एन द्र भा ग२२ अ जे न मं गदित यंत्रि वेदा २६ ४३ से भिग्नः शरस्त्रं द्र शराः स्ववाद वः ५५१२० मन् य्य शीर्थ ध तय सुरास्य २६१२० तत्रा प्रित्त यंत्रि वेदा २६ ४३ से भिग्नः शरस्त्रं द्र शराः स्व वा द्व वः ५५१२० मन य्य शीर्य ध तय सुरास्य १८१३२ से भ्यास्य पत्री श्वि कराः स्व मेख २२१० १२२ १७ द्वे ये परं रा अह छा जिन वेदा २३ १२ तय सुरास्य १८१३२ से भ्यास्य पत्री श्वि कराः स्व मेख २२१० १२३ १७ द्वे ये परं रा अह छा जिन वेदा २३ १२ से ग्रेय छर स्वा न्द्र प्रेण वियच ३२१० बाह्यां न्द्र ने भ्या द्वे विक्र से स्व ३ वा एग रस्तु या प्र्या यि सिर्ग्य छर स्वा न्द्र प्रेण वियच ३२१० बाह्यां न्द्र ने भ्या द्वे विक्र से स्व ३ वा एग रस्तु या प्र्या यि सिर्ग्य छर स्वा न्द्र प्रेण वियच ३२१० बाह्यां न्द्र ने भ्या द्वे दिवे कि से स्व २३ वा एग रस्तु या प्र्या यि सिर्ग्य छर स्वा न्द्र प्रेण वियच ३२१० बाह्यां न्य ने म्या स्व २१७ व्या प्र्या स्व शिर्प्य वित्र प्रस्तु ५१०० १२४ ११ म्या स्व तरिएग स्त्रि वहा ए २३ याम्य इरिय स्व आप्र ३९१३० स्वं धो स्य वाम प्रव रव जे ग्रित्र विद्य एग १२४ ३ रा स्व या म्या न्द्रि स्व सार्धाः २०१३० २२५ त्र सिन्न न्य स्व राग्रिय राग्स्त्रि वार्ग्य राग्य २३ पर्य सी मिग दिवरा प्रव सार्धा २२९३० तझस्त ने प्र न्य जु जास्त्रि वाताः २०१४३ याम्या स्पप्री नग प्रस्त स्व २५०१२ ६ क्वे त्वि चरिय खोाभगावान

गत्न्ययउव्यये। ५, ४ याम्य शरे सिप्ते ने निर्मे व्याप्र रो स्प्रेशे लाः २५७ तन्ने व्याप्री स्र रते वः मुराः स्पुः ६१३६ वारे स्य याम्प वज्रणगदिशास्त्र ३६ १००१२ न गस्मन् तती यं रवयाग्र राज्य ५२१६ से। म्यः शरे में। म्यः शरे ने देत वाः रव वे द ६१४० व्याधो ज जा स्मिन् ध्रतये। जित्वे दा २०१४३ याम्य सरोन्त्र प्रतियो। दि शास्त्र ५६१२८ सिंहे मधान्द्र मिठा सित्र ध्रतये। जित्वे दा २०१४३ याम्य सरोन्त्र प्रतियो। दि शास्त्र ५६१२८ सिंहे मधान्द्र मिठा सित्र धाह २०१२३ से। म्यः प्रतन्त्र स्पननः रवः व्वंद्र ००१० दान्यास्थितं चं न्रिधरास्त्र त्रि देग्ध २२१२२ से। म्यास्यवार्णोरिशाः रव वार्णाः १९५७ ७ २९११ जत्र न्दर्साण्य स्ताः २५०३२ शरे स्प याम्यः प्रयोराष्ट्रिजे देवात्र वार्त्यास्य वार्ण्या १९५७ ७ २९११ जत्र ने न्द्र स्वार्थ्य स्ति विश्विति द् याम्यः प्रयोराष्ट्रिजे देवात्र र्था क्याग्रित्र वार्णाः १९५७ ७ २९११ जत्र ने न्द्र स्ति एत्स्यां विश्वित्वाह यंखं २००१ २०॥ स्वाती चत्र स्यांतिच योग्ग्रिवार्णा भ्याभ्व साम्यः प्ररोग् र्र्मा उर्दात्र स्वार्थ्य कार्थ्व र्यार्द्वा वर्द्य गाम्या २१३३ से। म्यार्थ्य विद्याग्रित्र वार्धा ४६४३० इन्ये छा स्विरामा ३९३२ की हेवि र्यार्द्वा वर्द्य गाम्रि विश्वित्वार्या र्यं ४७ वरिय्यास्त्र वार्धा ४९४३० इन्ये छा स्वर्गमा ३९३२ की हेवि र्यार्द्वा वर्द्य गाम्यां विश्विति वयाग्रित्य योग्ग्रिवार्थ्या उद्य वर्य खर्ण्या २३२२ स्वार्द्त गाम्यां विश्वित्र व्याय्य र्याय्य क्याय्य यात्र प्र ४४३०३० इमे छा स्वर्ग भा अर्थे घट् झतित्त रेयु र्द्य १०१३९॥ म्हलंन्य तत्रे व नं त्याय् राद्य २०१३ याम्यास्य वाग्नि ग्रियादिशः स्त्र १३१०० ज्वेत्य तत्र न्त्य नि ययाधिरामाः २५१३४ से) म्यः पतन्त्री स्वस्राः रववात्र २०१४०। ३२ मं १२ २१ १२ दा २२ १४३ साम्पः प्रयोगद करादि रोगपि २९१० ग३३॥ इंजे म्य जंवा एक कराम्स्रिव दा २२ १४३ साम्पः प्रयोगद करादि रोगपि २९१० ग३३॥ इंजे म्य जंवा एक कराम्स्रिव म्य शरी रामकरावियुद्ध २३१० ते त्रैव मं नाग करास्त्रियापि २०१३ से म्य इरोर विक्राम्स्र स्प्रान्द्र म्य शरी रामकरावियुद्ध २३१० ते त्रैव मं नाग करास्त्रियापि २०१३ से म्य इरोर विक्राम्स्र स्प्रान्द्र ग३४॥ मी ने द्यां इः कुकरास्त्र ये १२२९ से मिय इरोर मि प्राराणन ने दि म्य होरा विक्राम्स्र प्रान्द्र या १२४॥ ये प्रायाम्य इरोरा नंद २ लवा खवेदा २९४० १३६३ मानि भान्यायनकर्म छान्द्र से हा एग १२ विक्रान्ध्र पि ख: यंत्रे पि ये प्राणी निमयो दितानि न सुन्न प्रोति वक्रतानि ताति २० इक्वर्म छार्मान विक्रान्ध्र पि ख: यंत्रे पि योगि निमयो दितानि न सुन्न प्रोत्ते वक्रतानि ताति २० इक्वर्म छार्मान्य वक्रता १२ वन्न विद्यानि गुरू पदे प्रान्द न स्तत्र गोलेल्व न ये वरित्या रहस्य मेत्र यवना गमस ३ दगर खांव्या रवा ॥ रवन्न ते गोलेन सन्नारणं छावि प्रत्य धिक सद स्ट्रं उक्त मस्तितन्न भ्याई एकारिया यावंत न स्वर्गा सं वस्त न संद र सम्याव छध्यान्न पंत्री पया गी निहान्ति प्रत्त सन्य गाणि यही तानि तन्न प्रेय भन्न छान्न स्वर्थ भन्न छान्द्र संस्थ कन्यायां २ न सा ये दर्गम्दवे १४ ज्यि म्र मा २ ज्वा रंगा दिक्त कर्ता ज्या स्थित स्प्रत्व य राम छाने य क्वि न सिन्न

| -मत्त नाथ | नचेन |) मत्स्पे। ५र | ज्याल्य नी | ज्ञू इत्व् | मन्य क्रीय | मनुख्या क्र | ८ रोहर्खा∖ | मेखु नपाद | भिश्वन वानपार् | मेख | मेखेन नत्व | १३ भ्यास्त | <u>१</u> भ | १५ जबल शार्ष | १६ खुख्य |
|----------------|----------------------|---------------------|---------------|---------------|----------------|----------------|-------------------|--------------|----------------------|------------------|---------------|----------------------|-------------|-------------------------|-----------------------|
| 00 53 53 | .242 | 2422 | • * * * | : 2.2.2 | 584. | *** | | 1.332 | . 2 2 20 | * 5 3 2 | | a. 2. 7 3 | | 2620 | **** |
| 2003 | 200 2 | 6 2 2 | 20 4 | 200 | 4.0 | 60 0 G | 204 | Se b | 2015 | 2.3.4 | 2:4 | ٩:4 | 34.6 | やちり | 226 |
| र मघ | १८ उत्तरा फाला | ণ্ড কাক কে:য | ২০ জিন্মা | २२ स्वाति | न्द मंड स्ट | २२ ज्वेश | २.र धनुबे म | २५ म्ल | २५ भनःशा राम्य | ২৬ জনি জীন | २ट श्रवए | २९ जनम्प छाख | उं• बुंज | ३२ ःप्रश्व ग्रहेथ | ३२ समुद्र पत्ती |
| \$ 2 2 3. | 3 4 4 5 | **** | 23.000 | 5660 | 9:00 | 5 623 A | 5.4.4.4 | 50.20 | | \$ diri | 24.20 % | 10 24 43 42 | 20.03 | 22.00 | in subs |
| 400 | 2:19 | 20 2 | 00 F | 30 30 | 19 88 88 | 3:6 | 35 | 200 | 2. vo 7 | 29 : 5 | 6.2 | 23:5 | F | 25 .0 | 2 % 2 |

यं->४ दौभः स्वष्ठार्थाएव, यथामेवन दात्रस्पराइपादिफ्रवतः अ६७६२७२ उत्तरीवित्तेपः २७०००० ज्ञ एफ्रवतस्पार्थः नत्त्वाणांमेया दिराष्ट्रपं णायाः क्रमेणनत्त्रफ्रवकाः मेयादि राष्ट्रि गोपाम्प्रे सम्पद भागेन नस्त्राणांकर्मीदित्तेपाः तथासंवैधनस्त्रभ्रम्भवतेषु विपंचाष्ट्रश्विक्तात्त्रेयाः नत्त्वनामादि भागेन नस्त्राणांकर्मदित्तेपात्वधायएतानिनसत्राण्णरद्धर्मछ्ठानिक्रत्वाग्ररूपदेश्णग्रंत्रेस्थाप्पानि द भागेन नस्त्राणांकर्मदिधायएतानिनसत्राण्णरद्धर्मछ्ठानिक्रत्वाग्ररूपदेश्णग्रंत्रेस्थाप्पानि द मामानसत्र केएके श्रादिधायएतानिनसत्राण्णरद्धर्मछ्ठानिक्रत्वाग्ररूपदेश्णग्रंत्रेस्थाप्पानि द कर्मकरणं परसाहस्यते नसन्त्रगोलिपनरिद्धर्मरदिता निष्ठाय्यानीतिश्रेयः ॥ नत्तत्राण्णनत्रप्रत्न रेणकाष्टवातिरब्यंते॥ अध्यग्रंपादिनसत्रेभ्रोभीप्रवर्धनत्तत्र फ्रवकानयत्रमाद्देण दिनंदर्स्ये ररदिताराकाव्दान्जीष्विद्देलिर्यु गिजाः खावे नैः आप्राक्षाधेनखत्र अत्रत्वार्यानमाद्द्रा दिनंदर्स्ये कतत्त् ३९ ॥व्याख्या॥ इष्टवर्धस्पशकाव्दा द्विनंदसंये २९२२ उनयित्वार्श्वान्येग्राष्ट्विर्गलेग्र्यान्या त्वा २२० खरवाष्टनिर्जान्यंत्रेत्रेभेग्विक्त्यात्रस्य यत्वसाद्विस्पराकाव्यादिकंप्रलंतघुक्ताः साथनग्रंपादिभ्रवकानस्वतिन

> तं भवद्ये एएएए प्रदृष्ट्रपते ॥ स्यापित इति १७०४ एन्प्रोहिनंद स्प्रेयः १२९२ पात्मं ते इंग्यं २२नभे फ्रिक्तेलेगु एता जाता ०६४० यवनमतेनः स्त्राएप के मेयादि एष्ट्रपं वर्षे ६६ रतिकामतिव व चढुः पंचा दिऊ वर्ते ०५७६२७२ सिप्प्रे मेए प्रात्या ००० जागे लब्ध के साम्रे १७७६ एता एती कर्स व चढुः पंचा दिऊ वर्ते ०५७६२७२ सिप्पं ते जाते प्रावे इष्टवर्ष स्य भ्रवे काः ६९७७७ एवं प्रे यि ग्राप्रे ग्राप् यन मेयादि भ्रवते ०५७६२७२ सिप्पं ते जाते प्रावे इष्टवर्ष स्य भ्रवे काः ६९७७ एवं प्रे यि ग्राप्रिंग्र यन मेयादि भ्रवते ०५७६२७२ सिप्पं ते जाते प्रावे इष्टवर्ष स्य भ्रवे काः ६९७७ एवं प्रे यि ग्राप्रिंग्र दिन सत्र भ्रवकाः स्वयम छ हनी याः ॥ श्राप्रे स्वर्म्य भ्रवे काः ६९९७ एवं प्रे ग्राप्रिंग्राप्रिंग्र दिन सत्र भ्रवकाः स्वयम छ हनी याः ॥ श्राप्रे क्ता क्रा क्रा क्या कार्ण्य से विषय कां न्या नयने ॥ मेय दावनरो गेल जुलो देए दर्ति एस तक "कां ते क्रियिक्तः ज्यावारण्य काटि ज्य पार्ह्ता ४० न इपांत्य पात प्रवित्तनन्वते शाधिते ग्राणः उ रोन जक्ता वारण्डपात्रा संजाणादिकं ततः ४९ स्पाद तर्र पराक्तांत्र स्त्र प्रक्रा तती निता ॥ गोले नवार्णा पोरिवर नदेवा चतरे रा ग्राणः ४२१ हरा र्ह्त ध्वे में व्यि गक्त फ्रांत्य जयाततः लब्याचापं यतं दीनं कर्तव्यं च श्रेरणतत् ४२ गो ले भरत्रियो प्रे क्ति मेदेस्याद पमः स्तु द्वः याम्यसाम्य विनागा नमध्य रेवा समाण्डितः ४५ ण ए सांव्याख्या।। र्ज्र प्रादि न सत्र भ्रवके मे स्वाप्ति राष्ट्रियद्वे उत्तरगेक्तः गति स्वादि राश्वि हर्त्वा यो गता हा त्र न त्वा स्वर्य प्रवक्ते मेया दि प्राप्रयद्वे उत्तरागेकः गतना दि राश्वि हर्त्वा फ्रे क्ये गता हरात्य भ्रवक्ते ये स्वादि सं स्त्र स्त्र स्त्र स्त्र स्त्र स्वारि

अयंग्रंधः शकेनियन्तः ॥ एग्रपतिनेषु भाकेनकिंग्चित्तिष्टति ततः कल्पनया प्राके २०४ वर्धनत्त

यं भ्यानेगणि जितयंदत्वा प्रविवज्ञीवासभानीघतेसास त्रिराण्डान्याभवज्याचे वाण्यते सावारणंता हिज्ययाहतां सजया २६०० आज्याततः प्राप्ताच्चापमानी पनवतेः संशोध्य तच्छेयाइतर त्रे मस्चश रच्यामां अक्तायां त तो तव्यं आगा दिकमुच्यते ॥ तती द्वति ज्यं पा दिनसत्र आवकेन वाणे नसर रच्यामां अक्तायां त तो तव्यं आगा दिकमुच्यते ॥ तती द्वति जया दिनसत्र आवकेन वाणे नसर वादिव स्थितत्वा त्तयो त्त्री सिंदिच प्रागानी तैनां तरे एप्यर मर्क्रा तिनागा २२१२९७० को मेराण्ड कहीनाप्र्व की घंते तत कि वां जीवामानीय प्रवानीत चापस्यानी तया जीवया संग्रएपां त्य झ्यया ३६०० वि अज्यते तया तो य खव्यं साधन्न प्रजया ॥ तती खव्य चापमानी य प्राण्ड की लिवेगे गात्र ने देखनस न्त्र शेर एर्य उक्तं ही संवज्ञ तं तचा प्रमेत्र प्रजया ॥ तती खव्य चापमानी य प्राण्ड की लिवेगे गात्र ने देखनस त्र शेर एर्य उक्तं ही संवज्ञ तं तचा प्रमेवमध्यरेखाये से स्थितचाइनर गोले साथना से छरणा स्कुटा श्वपत्रं त्यं राग्तवांती ॥ अच्यं साधन्न प्रजया ॥ तती खव्य चापमानी य प्राण्ड की लिवेगे गात ने देखनस न्त्र शेर एर्य उक्तं ही संवज्ञ तं तचा प्रमेवमध्यरेखाये से स्थित खाइनर गोले साथना से हल्ला स्वत्र त्यं राग्तवांती ॥ अत्र वार्त्त तचा प्रियमध्य स्था विवत्व १४२० वर्धि नेव स्थित खाइनर गोले साथना से छरणा स्वत्न त्यं राग्तवांती ॥ अत्र वार्त्त स्था प्राय्त का स्वत्न राज्य गाम्या विमाने ते हल्ली स्वत्न प्रवतः २ १९ १३३ १४२ इरियास्य ५१०९ घवते २ १९३३ १९ तत्व त्वा इनर गोले साथने र ध्र स्वार श्रि सयाद विवरूत्य मित्यादिना छज्ञ ज्यान्त्रानी यते छज्जी यया २०१२६७ तत्व ज्यान्य प्राय्त छत्र का ज्याना स्थ जनमा गाना सधः झार्त्व सजा रिवर्जना या २० दधस्यं १९३७ तद भी तरं प्र ०९२ व्यने ना रा

रेए उझ नगगगनामधस्येकलाविकले २६१८ गरेगतेयसामके सब्येफले २७१२ एर्विणले २५१ उक्ते जातानुजज्या ७९४५ व्यंसर्वत्रापि अप्रवाणस्पत्ने दिझातत्र याम्पो सेहरणेशरः ५१०७ यंत्रवते,सं सोध्यझातं ८७५० श्वतः त्राग्वदानी ठाझीवाश्पणां भूश्वनयाम्रागानी तानुजज्या ७९४ युरुगताझाता **६९३५५ (५**५८ अस्पप्रमांत्यया १५०० भागे संख्या २०५५ ६ अत्रज्ञाल्पतया ६यमेवमेदि अरुगताझाता **६९३५५ (५**५८ अस्पप्रमांत्यया १५०० भागे संख्या २०५५ ६ अत्रज्ञाल्पतया ६यमेवमेदि अरुगताझाता **६९३५५ (५**५८ अस्पप्रमांत्यया १५०० भागे संख्या २०५५ ६ अत्रज्ञाल्पतया ६यमेवमेदि अरुगताझाता **६९३५५ (५**५८ अस्पप्रमांत्यया १५०० भागे संख्या २०५५ ६ व्यमानीता याः व्यलादि मेर्गव्याः २५५ प्रतिने प्रोया १९७ तेन चार्पाञ्यः प्राप्ता २८१० इया १५७७ व्यलासंगुरुप अरुगतिं झुत्यधः स्थितेनां तरेरा ५५५ व्यनज्वने भव्यते विद्या दिन्रतां २६५९७ जाता जीवा त्रम्वापमि द्र २८१९ दे एवं सर्वत्रापिचापं साध्यं अस्मिन् चापे त्वते प्रेगधिते शेखं जागा दिसं ६२१७ अत्रतः प्राग्य जीवा ३१७ २०२५ अन मात्राग्व रानी त्यंगत्वस्य ये पत्वते प्रेगधिते शेखं जागा दिसं ६२१७२ स्वतः प्राग्य तं स्तंतरं ६५ ट ततः त्रिराग्रिंग से प्रधराहितत्य ये हरणीन संयस्पतच्छर स्पन्न साया का जाहि तं स्वतंतरं देप वर्ग या प्राय्व रानी त्यागा २३३२४ रत्व यो उपंतरे जाता ३३२४ व्यन्ते साय क्रांतरं देप वर्ग स्वर्ग तिनागा २३३२४ रत्व यो उपंतते जाता २३१४ प्रतः व्यत्य द्वा स्वर्ग स्थर्य स्वर्ग साया स्वर्ग साया स्वर्ग साया स्वर्ग स्वर्य स्वर्ग स्वर्य स्वर्ग स्वर् संवर्य स्वर्य स्वर्ग स्वर्ग स्वर्ग स्वर्ग स्वर्य स्वर्ग स

यं ९६ रखाप्रागानीतवात्राय कोटि झ्यघा ३२.५५२२ गुएँघ ते जाता ४५.५२२ श्रंत्य झ्य मा अप्रते ज्या परम झ्या १२.६२ ७४५ अस्या मा व्यञ्चापं साधितं २०१३२.९९ व एवस्क्री तिनागा से याः ॥ अत्र राशिज यव ति रोद् सी नस्त्र स्पम ध्यरे रवात इत्तरस्पां ए ता व्यद्धर्न्जी तिनागा से याः ॥ अत्र राशिज सत्रारणं क्रोति साध मं सत्ती व्यं। अग्र यम को राते रे एक्जी तिसाध मं॥ अप्रयानिर्जय क्री ति नस्त्र भ वक्षा नतः 'तया शर रस्प सं योग वियोगी विकाल मेरे ये भाषा क्री प्रयानिर्जय क्री ति नस्त्र भ वक्षा नतः 'तया शर रस्प सं योग विकाल मेरे रे एक्जी तिसाध मं॥ अप्रयानिर्जय क्री ति नस्त्र भ वक्षा नतः 'तया शर रस्प सं योग विकालि मेरे क्री रे योग विकाले हे ज्यू त्र स्वाक्ती विज्ञ स्वान्तिः 'त्र या श्रा स्वान्ति के विकाल या पावा ॥ परमर्जा ति का टिज्या नक्ता प्राप्त विकाले के त्र रूप्त तस्त्राक्ती त्र नगाः स्युः सो क्री या या पावा ॥ परमर्जा ति का टिज्या नक्ता प्राप्ता क्रिये क्रिय क्रि त्र स्वाक्ती ति नगाः स्युः सो क्री या या पात्र क्री ति साय क्री योगा ति वियोगी हो यत्र क्वान्ति क्री ति नगाः स्युः सो क्री या या पात्र क्री ति साय क्री योगात्र वियोग हे या प्राप्त क्रिय हे विज्ञ अप्र ये त्र स्वा ति रे प्राप्त के ति साय क्री योगात्र वियोग हो यत्र खानी य तत्मा स्त्राति रात्री यते त्या क्रा विति प्रकारां तरे प्राप्त की विचार्य नहा क्षेत्र वितान जनमानीय तत्मा स्त्रां ति रात्री यते त्या क्रा त्या सह शरस्य दि जे यो गा दिज्ये र वियोग प्रसं का यते गत्र यत्त क्या यत्रा या प्राप्त तत्वा प्राप्त प्रसन्त तत्वा सि स्था प्राप्त या प्राप्त क्या तिना पा स्था या या सामा जान्य ति थ ए या सीम्य स्त्रा या प्राप्त या प्रसन तत्त्व स्य से प्रिय या प्राप्त क्या कि नगा जवति थ ए या सीम स्त्र या प्राप्त तं वा या प्राय क्या क्या या य

- दिशेवेवकांतिवारायांगीगत् नसत्र दिशेव्यवधेनकांति दिग्नेदे-क्राधिकाम्पून्येपातितेशेव लत्मतनसत्र स्वकांतिस्पत् ॥ अत्र्यादाद्र रागे भेवा फ्रितस्वाद सरगोले साय नो रोहरणी नस्क क्रावकः २०१५२२ शरोर यगम्य ५०२० अत्रपात्पा भावाद यमेवक्रववे भिन्नः भुजांशाः ६०१३२ ५२ रायां क्रांतिरानी यते ॥ स्ट. न्द्र दिविभ तयार्क्रातिप्र तज्याके प्रवेयु भुजजागानां ६०४ भ मात्प्राप्तं प्रदेश भू नद्धों तरं १२१४ अने नां तरिए खुजनागाना मधास्थित विकल सु ३३,५५ जात्माप्तं प्रदेश भू नद्धों तरं १२१४ अने नां तरिए खुजनागाना मधास्थित विकल सु ३३,५५ जात्माप्तं प्रदेश भू नद्धों तरं १२१४ अने नां तरिए खुजनागाना मधास्थित विकल सु ३३,५५ जात्माप्तु अद्याननकामु लख्यं क्रसादि कं प्रत्ये ६२ भू भू स्वित्र के स्वर्जना के स्वर्क्त क्रांत्र १२९५५ स्वित् जात्मासु यद्याननकामु लख्यं क्रसादि कं प्रत्ये ६२५५४ स्वित्र ले ने निद्दा साजाताकांति
- ना जा तिता १२३५१५९ एवं सर्वम्राप्रिकां तिः साध्या य स्याना गे जिन्यं अंदिका कांति ३०/३५/५९ रोह ना स्तरा याम्प्रस्था १० अनुजिन दिवर् क्वांते शरे लांदे कांति झे यम्र सर्व १५/२५/५९ अस्मात्राप्र्य साधिता जीवा ६५७/५० अपूर्यंपरमकांति २३४३५/० का विज्या ३२९ ९९९३ राशाता ३१३६००००३ ४७ / इन्हन्द्रांति २०३५/५९ क्वांविज्य या ३३६९/५४ द्वींगीता ३१३६०००६३। उह सवार्श्यता र

तार

दं रे प्रिष्ठभूष २० को दिउया ३३५६ १० तव पिराता मा उप २० २५६ ८ ८ दिप सं स्थु २ अस्म माग्वचा पं ९५५५७ २ सच्ची मेव कांत्रां प्राः देते च प्रागा मीतकों ति रो अस्प से ाम्प सा त्सा प्यावे मुवयाः कांत्या नय ने एवा का याः संघ त्यक्ता याख्य उते कला छ विकला छ खत्का निर्दे तरमारि तद्वत्य त्वा नर देखा या। अयन स्तव्य र्गा खत्व नस्व के न्या खत्व का छ विकला छ खक्त मा नय ने प् तद्वत्य त्वा नर देखा या। अयन स्तव्य र्गा खत्व नस्व के न्या खत्व के न्या ख्या के चिदं तरमारि तद्वत्य त्वा नर देखा या। अयन स्तव्य र्गा खत्व नस्व के न्या खत्व का छ विकला छ खर्मा नय ने म ता मगा दिमय कर्क जें। संत्व नन्या पर को ति में व्याहत्वा विना जिता ४० उन्ते हुकांति के हैं सि तो मोर्व्या प्राप्त कला दियत् ते नरू र त्वे छ को दिन्या विना ज्या स्वय्याता तः ४९ सव्या स्त्रा स्वर्ग दिन्द्रया उत्पाद्य न व्या स्त्रा स्वय्य के गति क्या स्वया दिन्य या ततः ४९ सव्या स्त्रा स्वर्ग ए छ रे की क्तय छ ग मंता क्या क्या क्या क्या के छ छ को दिन्य या ततः ४९ सव्या स्त्रा स्वर्ग का प्राप्त मगा देक्ती का मस्त्र व्या प्यायो रिये रुपा ने देव ने निर्वयाहतः ५०००० प्राप्ता दिन्छ भाव प्राप्त मगा दर्क्ता त्व राष्ट्र मा या मा या न क्या स्वर्ग ने रिप्त न्व त्व स्व त्या स्वर्ग न्व न्या स्वर्ग न्य ने स्वर्ग स्त्रा मा निर्व त द छ को हिन्या का प्राप्त का लि का ता स्त्र मा मा या स्वर्ग के का प्राप्त निर्वा क्या स्वर्ग निर्व न्या कि त्व स्वर्ग या मा विकरित्य त इछ को हिन्दा सत्या स्वाग्य की राष्ट्र को ति क्या हिन्यया दिव स्वया कि वज्या स्वर्ग स्त्र ना प्राप्ते न स्वर्ग स्वर्ग स्वर्ग स्त्रा न्य स्वर्ग स्त्र ना स्वर्ग स्त्रा स्वर्ग स्वर्ग स्वर्ग ना मा नी त्र की ति का हिन्य या कि क्या न्या व ना द्व मा मा या स्वर्ग को ले स्वर का या त्य को ति के स्वर का या स्वर्ग का ज इन्ते हत्या का स्वर्ग स्वर सा स्वर्ग स्वर्ग त्व त्य स्व का सा स्वर्ग को ति स्वर का ना स्वर का या स्वर्ग का त्व स्व का का वा सा खा ना या सा या ना स्वर्ग स्त्र स्वर स्वर्य स्वर्य स्वर्ग स्वर का या स्वर का वा स्वर्य स्वर स्त्र का का सा सा या ना सा या स्वर्य का त्व स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर स्वर स्वर्य स्वर स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्य

मदेवद्द्वर्मयत्वं एकाद्भ्वं वानस्नान पनवाएग्योरे व्यस्त्तिन्तं दिन्हे तयी भेदिभनंज वतितत्यक्रमिष्ट ः श्रांस्यग्रंया दिनस्त्रभावने पर्याचिस्त्लेभन्व क्रततन्त्र स्त्रं द्वार्भञ्च तिलुई॥ अत्रेत्र एण्णम्वरणदित्वाहत्तरावर्ग्णभ्रवकः २७१३३७२ र् रारो याम्प.७१०० गेर्ग्हरणेभव नाडाशि व्यक्ता प्राण्वदानी तामुजज्या २७ २४७९ द्र यंपरम्जोतै २३७३५ मार्च्या १४४०५५ गुर्ण ताजाता २४६९ ८०४।३३ ततः क्रांति १५११ क्रीटि ०४७३ ज्यया ३४७१ मार्च्या १४४०५ प्राण ताजाता २४६९ ८०४।३३ ततः क्रांति १५११ क्रीटि ०४७७ ज्या ३४७९ मार्गता जाता २५५०१ त्व २२११ भ्यत्वनरां दिली प्रराधभाव क्वोति ८४१५० ज्या ३४ ९८ भ्य मार्ग्रा त्यज्य प्र इं २२११ भ्यत्व स्वीनरां दिली प्रराधभाव क्वोति ८४१५० ज्या ३४ ९८ भ्य या ३४७१ भ्य क्या अत्र प्र इं २२११ युद्धान्य आग्रेत्वच्चं ०० द ३२ अस्माङ्रा गार्थ प्रयत्र स्थापिते अप्रयद्वार ५१०० ज्या ३२०१७ इयं प्रत्वे प्रत्य स्थान्रा जात्र त्या २२०४६२७३० ज्यस्पाष्ठा गार्नीत द्र्य क्वाविज्यया ३५२९२२२१७ अत्यत्र विद्यत्वे ज्या जाग्रेत्वच्चात्य २००९६२७३२ ज्यस्पाष्ठा गार्नीत द्र्य क्वाविज्यया ३५२९२२२११० अत्यत्र विद्वति ७२९१२५ अप्यत्वे ज्याता २३०९६२१७२ ज्यस्पाष्ठा गार्नीत द्र्य क्वाविज्यया ३५२९२२११२४ अत्यत्त्व प्रत्य स्वया जाग्वचापं १९२३ ९३ र्य स्माङ्रा गार्नी त्र दर्गा यज्ञात्व स्वया ३५२९१२३४४ अत्यत्त्व प्रत्यत्व या जाग्वचापं १९२३ ९३ र्य स्था द्रा गिहर्णा नस्त्य स्थाम्य व्या ३१२९१२४२१२२ रा व्या नदेध्यतंक्तवारे।हिर्णाभ्रवचे दिष्यंते जातं दन्तर्म श्रह्य राष्ठ्या नस्त्र स्थ २०३२३ त्वं सर्वे या नस्त्याणा स्वर्ग्व सार्थ्या प्रयाप्रकार्णतर्तरणप्त्वर्भान्य यत्र ॥ एर्व वहर्/त्र गशिज्या स्थर्र एर्ग

• א ללשתרשות החוש זי ב וזי ער זי זי זי זי זי אודע הוולש בוו ביייוב

म्

यं १८ द्वास्ताक्रतान्टनंददसुभिः इष्टब्स्य भ्याखा॥ एवं वर्ष्तं विरसालये मुब्धि र राशिनाहतं त्वातोग्रीभिः फलंभागा दिनं र हक्तम्र द्वेत् भर्याखा॥ एवं वर्ष्तं विचायेनंत्र फ्रवेग्रान्द्री राशि ज्यातहेर एतह का फ्रनंद उद्य भिष्ट्र व द्वात्राय तती लव्यं भागा एवं वर्ष्त्तं विचायेनंत्र फ्रवेग्रा न मेथा देश कोट्या: विजा डोग जुद्धा भिष्ट्र प्रदत्त व यम २९९ त्रिरा ३२२ इत्या दिनाम हते र से यते न मेथा दिश् कोट्या: विजा डोग जुद्धा भिष्ट्र त्व यम २९९ त्रिरा ३२२ इत्या दिनाम हते न स्व संवध अंवे दित मे सा दिल प्रप्रमा ऐनि इते रवारा प्रति ३०० नक्ते लव्यं भागा दिन मे वहकर्म फलंभव ति॥ त्र सा प् रभीष्ट्र ववेन्द्र स्वयं भवनं च कार्य अन्ने २०० नक्ते लव्यं भागा दिन मे वहकर्म फलंभव ति॥ त्र सा प् रभीष्ट्र ववेन्द्र स्वयं भवनं च कार्य अन्ने देव रवाया प्रि २०० नक्ते लव्यं भागा दिन मे वहकर्म फलंभव ति॥ त्र सा प पाम्य भाष्ठ असमास्त्राग्व दिराणि यतः भा १३३। भर खमाने लव्यं भागा दिन मे वहकर्म फलंभव ति॥ त्र सा प पाम्य भाष्ठ असमास्त्राग्व दिराणि यतः भा १३३। भर खमाने त्याय ऐगे हे एणि फ्रवेत्वः २०१ देश पाम्य भाष्ठ असमास्त्राग्व दिराणि यतः भा १३३। भर खमाने त्या प्या मत्वे राष्ट्र ति हा स्व स्व स्वया मिथ्र न स्व श्वा हो र्था प्या क्वे देव स्व भि व २२ अएगतं तातं ३००० २० र वतत्व रवा गिर्झ क्ते ३०० तव स्वा हो रथा प् रहते देव हर्कर्म फ्राये प्राणि प्रमा र वत्व राण भव दर्ते वत्ते स्व स्व मिल्र का ३०० तव स्वा हो रथा प्र्य त्य तिहर्ण यहा द्वा सिप चो तर करा भव दा राण जातं र व्या इत्या त्या प्राय अप्रुव तत्त्व राश्व

• भी के जमसे रें। बानकां सहातानवतिः

ता माण्यप्रप्राणमेलन्त्र मान्यप माग्रें अमात्य का नवति निर्मतप्रित अधिकानवति नवति पर मितेपा मिर्वत्र

स्वी मेरी नस्वादा राजान यने स्वाह्ताराजा भयने से म्पपंग्ने हेरता धिर्क ऊष्णव् से म्पया म्पपन्ना हैः स्यान वतिर्वात्ययः परं ५६ तयी ई पारण्वे त्रेपा छितं उच्या समागता यंत्र हये पिनस्त्र मुद्द स्पष्टतरं नवे त्र ५५१ औँ यात्या स्वाह्ते ज्ञान यने ति नस्त्र स्पस्त्वाह्ते राजान यने से ाम्पपं न्द्रेनवति द्वाह्ते राज्य त्या साम्पेर प्रमा हो न्याप्य के नाधिका मवतिर्भवाति गयाम्ये अप्राप्ता हेर साति अप्रप्रमा हेरनही जा नव ति स्यात् तयों या छि प्रमाही अप्रप्रमा हो नाधिका मवतिर्भवाति गयाम्ये अप्राप्ता हरे साति अप्रप्रमा हरेनही जा नव ति स्यात् तयों या छि प्रवेड प्रागता द्वाह्ते यंत्र हये पि नस्त्र मुख त्या छ तरं नवति स्वान्य विद्याप्त्य विद्या चान्त्रति पंत्र से म्प्यां त्र दिर्घान्यवति तन्त्र से म्यपंत्रे त्वाही रात्यानयनं नवातिनस्त्वारणां से म्प्याम्पक्तांति जो र्ग्द्र से म्यां यान्य परेया म्ययंत्रे न चत्र त्या के खार्थ रात्यात्र यनं नवातिनस्तवारणां से म्प्याम्पक्तांति जो र्ग्द्र सम्यात्य परेया म्ययंत्रे न चत्र त्या के विन्यूति से म्ययाम्पकां त्यं ही छी क्ताहरानाचस्यात्व तथा ई यो र्च व्यान्य ये छी छीन्या खेरेन्य अर्गत खुड्याप्रसं न स्वर्गाप्य से प्रेयाम्प्य का स्वरि के स्वर्गत संसं स्वष्ट तरं मुखंत्र वत्त से प्यान्य से प्रयान्य येत्र अर्गत खुड्याप्रसं न स्वर्गरणां से स्वयाम्पं व साहो राज्य संसं स्वष्ट तरं मुखंत्र वत्त से प्यान से प्रवान्य यया ग रेग्हिर्पा उत्तर क्यां ति प्याय्श र स्वा से सि प्रवर्ग हर्गा हर्गा से प्रयान्य हेरायत्र से म्यानविद्य यया ग रेग्हरपाय क्यां प्रिति प्रजा प्रिप्त का से स्वरि हरी हिली नही हरी स्वरी स्वर्या स्व अस्ययाम्यस्वाहेरार्श्रमयने उद्दाहर रगंग रोहम्यां साम्यकांति २०१२२१ एयां सोम्यत्वा जवते ९० यो जित्ते जाता २०२१ अस्ययुज्यावं उत्रेन्चः माण्वदानी घुज्याफलं २०१२ एतदे। हिएयाः माम्यस्वाहेरात्र मेण्य्र्ये जतां राष्ट्राप्तनार्थस्वाहोरात्रं विचार्य र्त्व हन त्त्व्य स्वरूपं विंश्विरुव्य ते रव्या द योग्रहा सनस्वाः स्य एः प्रव तिनेत्र उदिवर्यां ताकालेनपूर्वोत्ति तिने स्वमय सर्वछः नेथां महोत एवास दिजायावता कालेनपूर्व तिनेत्र याति॥सर्वछल्यारात्रिः श्रुत एव युज्यासंड केन्यः स्वाहो रात्रा एउत्या प्रते । तिनेत्र याति॥सर्वछल्ये यात्रिः श्रुत एव युज्यासंड केन्यः स्वाहो रात्रा एउत्या प्रते । - अष्यकानि चिन्न स् व्याधा सीम्य यंत्रे देन्त्र चेर्ग्र प्रतिनिचि यात्रिकेनश्चि निर्यान्नः : जत्र तिनस्यल स्रण घुच्यते ॥ तत्र यस्य नस्त्र स्य साम्य के स्वर्ग्र नित्र प्रतिनिचि यात्रिकेनश्चि निर्यान्नः : जत्र तिनस्यल स्रण घुच्यते ॥ तत्र यस्य तस्त्र स्य साम्य के स्वर्ग्त नित्र स्वर्ग्त्व केन्यः स्वाहो रात्रा एउत्या प्रते ! वाह्य रात्र ह्य मपि त्रिज्य क्या र्ग्त्र स्वर्ग्त्व किल्या यो के नित्त्व स्वाणित्र स्वर्ग्त्य याम्य यत्रे चेष्य प्रत् यस्य ज स्वाह्य रात्त्र ह्य मपि त्रिज्य स्वर्ण तिन्त्र स्वर्ग्त्य के स्वर्ण पिते थया भिज्य स्वर्ग्त्य स्थान्त्र स्था र्य राग्त २०१२ प् याम्ये तु ४०१४ व्यान्त्व देश्व स्विष्य ये स्वत्र स्वा यो स्वर् राज्य राग्य प्र्य के स्वर्य राग्त्र राग्त्य दि स्वर्य स्वाह्य राग्त्र स्था के स्वर्य राग्त्र राग्त्र द्या प्रते स्वर्य स्वर् सिक्त स्वर्य के स्वर्य या प्रते स्वाह्य रात्र स्था के स्वर्य राग्त्र राग्त्र के स्वर्य स्वर्य स्वर्य साम्य के स्वर्य स्वर्य साम्य स्वर्य राग्त्र राग्त राग्त राग्त राग्त राग्त्य राग्त्र स्वान्त्र साम्य राग्त्र राग्त्र राग्त्र राग्त्र राग्त राग्त् राग्त्य राग्त्य राग्त्य स्वर्य स्वर्य साय स्वर्य सान्त्र साम्य स्वर्य साम्य स्वर्य साम्य स्वर्य सान्त्र साय राग्त्र साय राग्त्य स्वर्य स्वर स्वर्य साम्य साम्य स्वर्य सान्य साम्य स्वर्य सान्त स्वर्य साय स्वर्य सान्त्र साय स्वर्य साय स्वर्य स्वयन्त्य साय स्वर्य सान्त्र साय स्वर्य साय व्या सार्य साय व्या सात्त सात्त्य स्वर्य साय राग्त्य साय राग्त्य साय स्वर्य साय स्वर्य सात्त्य साय सार्य साय स्वर्य

मंगर

दंष्ट्री

~ नाम्यंच « श्रि शर् शतंन शन्त्रे सोम्पयं ने वाप्य अने । सन्तक न न रय गुल्हार न न ही, बस्वव्याम्परवाही राज्ञ श्रिका देनामध्य में माम्य द्विंश रेस्ट्

अन्त्रपत्ती सेयं एवमन्येया मयित स्वारणं स्वाहेग राश्त्रिसाध नंतार्यं "अर्थि ए सो प्रोभो मी एन स्वौण अन्नसा भाष्यतं "अप्रयस्य ए जांति जागांत रो त्व्याः से गिम्पा या प्रपाति नतां द्वारा रवा द्वादा ही नाः रेव चरो सेनिता शाः मध्यान्रे त्या स्व उत्त्वदे ऐ नवंति ५६ यत्रे वा शा योगत फ्रेनितां शाः रवा दा ९० धिवगस्य स्तदा शोधनीयाः आवा शोज्य संग्रा के जी ९०० पिन् नंशे या शाम्पात्ते नतां शगः रवा दा ९० धिवगस्य स्तदा शोधनीयाः आवा शोज्य संग्रा के जी ९०० पिन् नंशे या शाम्प्रा मध्य जान्द्र मिम्पा या ५० अव्याखा आज स्तदा शोधनीयाः आवा शोज्य संग्रा के जी ९०० पिन् नंशे या शाम्प्र अध्य जान्द्र सिम्पादिक्त्वे नत संग्रा त्वे स्वर्ण्या व्याप्ते विष्य देत्र रंकार्ये अग्रधिकां वा ही नेंके पति ते य छित्रं तत्त्व देव सिम्पादिक्त्वे नत संग्राणं रवमध्यात्सी म्पान्तां शाज्यवि यत्रे वित्य ने चतेः पाति ते य छेर्य तत्त्व देव सिम्पादिक्त्वे नत भध्यान्द्र जी व्रतां शाज्यति यत्र यु अन्न स्वर्ग चतेः पाति मे यु शे या न स्वशाणं महात्रो म्र्यात्रा स्वति स्वति यत्र मध्यान्द्र जी व्यत्रा स्वात्वर् यत्र अन्ते स्वान्य को ग्री या गाने चै दिद स्ताधी गिन्द्रियमा ऐ सति नव ते ता स्व संग्राणं रवमध्यात्वति यत्र यत्र अन्त्र संग्रा ना को ग्री या गाने चैद्र दि स्वाधी गिन्द्र यमा रेत्र यत्र ति गर्य वात्र संग्राय ये त्रे मध्य स्वात्वर्ग स्वात्व रूप के स्वान्य स्वाय स्वाय स्वात्व स्वार्य प्रत्र त्वा त्या प्रया पत्र स्ता राग्रा स्व त्या स्वान्य होति राग्रा स्थान्य स्वान्य स्वान्य स्त्र स्वात्र स्वा वाया श्र स्ता रोग्रे प्र यात्यते गया राग्र राग्रा स्वान्य संत स्वान्य राग्र स्वान्य स्वा त्य शा श्र स्तां रोज्य पात्यते राय राज्य राग्र राज्य राग्र स्वान्य संत्र राग्रा या प्या स्वान्य या न्या स्वा स्वान्य स्वा यं २० शी श्वित्ते अग्ने या ७५७३१९ १ते रोग्दे एपाः परमान्त्र तां प्रगः कण्यते ॥ १ ते एव प्रीक्ष रोग्द एग अत्ते हि रुभ् गान्त्व मध्य माश्रमती तिजावाः ॥श्रात्तया युन्या संवैधां न सत्रा एपि तो सतां त्रार्था साधनं वा योग अप्र मुँत् एप संवर ७३२ व भे चे अग्र प्रभाग ७७९५ व भत्या युन्या योग दिहा त्रिं प्रग्ते सत्रा एग को ति हुद्दा भी स्वया प्राप्त दंग रात्र परमा क्ष तां इगः स्पष्ट क्ष तन्या सेन प्रहूपते ॥ यथा ॥। अप्रम या त्रि क्त त्र त्रा का ति हुद्दा भी स्वया प्राप्त दंग रात्र परमा क्ष तां इगः स्पष्ट क्ष तन्या सेन प्रहूपते ॥ यथा ॥। अप्रम या त्रि क्त त्र द्व सत्त्र प्राप्त सारग्या दंग रात्र परमा क्ष तां इगः स्पष्ट क्ष तन्या सेन प्रहूपते ॥ यथा ॥। अप्रम या त्रे क्त स्व द्व स्वया का सारग्या त. म्या स्य उत्ते प्राप्ति रिखरामाः अनुत्तान्ते प्रे नित्र चे हिरामाः ९७३९१ कर्कस्य स्वर्धाः । ही ति वा यदः स्व रत्र १४२४ व क्षेत्रे क्रध्या दिय मुद्द सीया परे। व्याख्वाः यंत्रे द्वा घरामाः ९७३९१ कर्कस्य स्वर्धाः । ही ति वा यदः स्व त्र २० तत्सद् जास्त दित्ती ये मे यतु हा यो स्वर्या क्या ख्वा रुपा अत्त्र व्या व्यत्त्व क्र स्व प्राप्त गांग त्र २० तत्सद् जास्त दित्ती ये मे यतु हा यो स्तर्या प्राप्त हु का अटतती यं तत्क क्र स्वित्र मा गांगांगा रायमध्या चतुर्व तुत्विं यत्त व्यासिति यंत्रे मध्ये केंद्रा टू हनी या दिचारण्या या श्रत्रान्यो वो यंत्र खाड्या प्यं अंव धायमध्या चतुर्व तुत्विं श्रिवत्व व्या स्वरिय व्या चढित्या व्या व्या स्वर्य स्व स्व व्या या यमध्या चतुर्का कर्य द्वा दत्तमाद्र परापमाः ' र्था स्थित्र राव्या क्या द्वा राया व्या स्वराच्या के त्र द्वा राव्या क्या या या स्वर्य क्या य दत्ता भाष्य २० त्या क्या स्वरंगा स्वरंगा स्वरंगा त्र या स्वरंग स्व प्र यत्य साक्य मे या स्वरंग से व्या द्व साय क्या क्या स्वरंगा क्या क्या स्वरंगा वि यं राया द्वा स्व द्व त्या स्वरंग दत्र साध्य भ्या व राय स्वरंगा करा हा या या या द्या स्वरंग क्या व राया व्य सन्व क्या क्या त्या क्या क्या व स्व स्व त्या च दत्र साध्य भी स्वर्य स्वरंगा करा हा या या द्व साय व स्वर स्वा क्या क्या क्या क्या त्या स्वरंग स्वरंग स्व या स्वर स्वराय भाष्य स्वर्य स्वरत्व त्या स्वरंगा त्व ता प्र या स्वरंगा त्या स्वरंग स्वरंग रात्या स्वरंग स्वरंग स्वरंग स्व या स्वरंग स्व

| র্দ্ধ কা | तम्ब्र तनत् | ALL | 下して | 110 | त्रांति | हक्तम | सीम्प | माझ्यस होरात्र | । परमो नताषा | त्रकारा तरनहार | | | तोम्पात्व। हेग्रात्र | याज्यत होराज | त्र स्र | मध्ये। तोश |
|----------|----------------|----------------|--------|------|---------|--------|-------|-------------------|-----------------|-------------------|----------|-------|-------------------------|-----------------|------------|---------------|
| ٩ | STO | | 0.4.0 | 5 | 20 213 | 24:55 | 13 | 32 | 23 | 000 8342 | 24 | :mag | 14 | 32 | 200 | 22 |
| 2 | नर्च नक | 4 | 1:201 | 43.4 | 315 | , w.c. | 82 | e RE | 20 | - 2000 | 239 | 1.23 | 82 | 32 | 43 3.E | 30 |
| à | मत्स्पे। दर | वर्त्त इत्र | 22232 | なん | 32.2 | | 24 | ३५ ५२ | 15 | Sty . | 32 3 | : 185 | 20 83 | 30 | 25 | 74 28 |
| 7 | भ्य न) | अरतेन | a yer | 2.20 | 200 | , ww. | 180 | 24 | · 2 | stans. | 5 5 50 B | :9:: | er. er | 25 .4 | ある | 28 |
| 4 | अन्न बर | | 0 2 33 | 523 | 202 | 07.53 | 05.00 | . · · | 20 | 0 . 5 3 5 | 335. | | 14 % | 42 3 | 12 20 | 20 20 |
| 4 | મનુષ જોઈ | ल का क | 1035 | 5:0 | 22 20 | 122. | 200 | 45 54 | 20 | ~ | 302 3 | ayor | N. N. | 48 | 22 | 2.4 |
| 2 | म्सु ख्राण | 6 | · anna | 30 | 82 6 | | 28 | 34 | 22 | | · 1 3 | | 83 | २ ५ ५३ | •3 | 35 |
| E | रोहव | ्रवान् | **** | 522 | 1220 | in the | 100 | 24 | 42 | | 6.31 | | 18 42 | 0 | 4 34 | 40 |

| 2 3 | - मंता | लस्त्रत | वा रसीना | नत्त्र | शर | कांति | इ कर्मभ | cure | याम्पत्व | परमान | त्रभनत् | 17.912 | 7.1 | ज. रूक | ते ज सो। | 17.41 | मामध |
|-----|---------------|--|--|-----------------------|--|---|--|---|---|--|--------------------|---|---------------------------|--------|----------------|---|---|
| 14 | | नामाति | | भेव •२ | | 1.1366 | 1.002 | salie (| · GIGIS | त तवा | न्नभ्रव | | FA | | 1 | - | नन |
| | 05 | भियुन पार् | रंज्र लेल् जोजाबमा | . 4. | 305 | 222 | うどう | 23 | 14 | 42 | | 305 | 53 | | 3. | 21 | 38 |
| T | 20 | দিন্দ্রন | रेनल्नो नारुष् | | 10 | 2.3 | .75 | 12 40 | 24 | 25 | 1 | 2.5 | 4 33 | | 23 | 31 | 14 |
| IF | | | | 42 | 22 | 88 | ŝ | 2.9 | 30 | 43 | 1 | | | | - | 46 | 38 |
| | " | बल्मुष | अर्ध्यक् | 13 | 3.3 | 863 | 3. 3. | 32 | 41 | 35 | | 3.3 | 403 | | 10 | 4 | 43 |
| | | मेखुन संख | यदेन जे जा | 2. 2. mg | 300 | 24.5 | anthe service | 10 | 29 46 | ५२ ३२ | | 200 | 22. | F | 34 | 20 | |
| T | 12 | •प्रगल्प | (AN | this . | 34 | 24.5 | mári | 42 22 | 2 22 | ४२ भन्न् | F | °46 | | 1 VA | 20 | . 44 | 52 |
| T | .8 | প্সাহা | हनआह | | 35 5 | 14 2.5 | 1 m b 3 5 | 24 44 | 14. | 34 | | 3,5 € | 36 | | 24 | 42 | |
| I. | 14 | त्रवत ज्ञीर्व | - | -indas | 5.5 | 32 3 | u.u.u | 10 | 3 % | 25 35 | | 803 | 32 | - | 34 | 34 | 4. |
| | 7' | रगव जुट्धव | 14.1. | añe . | 35 | 22 3 | merry | 3 | 22 | 200 | E.A.A | 20 8 | - 25 | 3 | 13 | | 2 |
| 1 | | | | | | | | | | _ | | | | | | | |
| | | त नांत | | ন পহা | 1 372 | -क्रोंक्ट | र दर्ज | से स्य | या म्य | वरमे। न | त्रन्त | म. रा | म की | 81·5 | से म्प | पाम्य | मरमे |
| | - अंत्रं न | " नर | स्त्र मानि | 44 | TTT - | 1 2 | 4 | a.G.k | या म्य | तांशा ७५ | त्र- तत्त फर- | * 0 | 17 | বাদ | 34 | 24 | ye |
| | - अंब | । ন সং | स्त्र मान्त ना जब्द | 10 20 20 A | 103 | 2024 | 1,00 K | 24 | 24 | र्मा अप | প্য নহা স্চ: | × • • • • | 5 2 3 | নাদ | 14 | 24 | 34 |
| | 1 90 | " नर > नर उद्य | स्त्र मान्त ना जब्द | 2000 5 20 20 | × 00 | 274 673 | 1.5 Visit | 24 | 24 | तांशा ७५ | त्रः वद्य भ्रहः | × • • • • | EF252 | বাদ | 14 E 2 31 | 24 | |
| | 1 | भ नर भ भ उर क | स्त्र मानि मा जव्दः गा सर्पना खल | 1 6 6 4 4 5 8 4 4 4 | 201 201 201 201 201 201 201 201 201 201 | 12 12 12 12 12 12 | 25 5 6 6 1 2 4 6 0 K | er 22 - 22 - 28 | 24 2 20 04 | मेश्री २५ २५ २५ २५ २५ २५ २५ २५ २५ २५ | त्रः वद्य फ्र | × 0 2.3 | をよう ちょう る | বদে | 24 16 19 1 14 | 24 | 2 2 6 2 8 |
| | 11 | " नर म उर क का स्वे | स्त्र मानि ना नव्दः तरा सर्पना वर्ण इ. जनाइ इ. जनाइ इ. जनाइ इ. जनाइ | 2 | 103 103 103 105 105 | 5 2.65 2.54 2.54 2.45 2 | 2:345 5 40% × 160 × | 1 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 | 2 4 4 0 2 2 % | 1997 2 0 2 0 2 0 2 0 2 0 2 0 2 0 2 0 2 0 2 | त्रः तद्द | N 0 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 | E 7 2 5 2 4 2 4 2 6 6 2 0 | 47.F | Cu 2 1 2 2 2 1 | *** 6 2 5 5 | 3 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 |
| | 11 | भ नर भ भ उर क | स्त्र मानि ना नव्दः तरा सर्पना वर्ण क्र जमाइ भ्र उगव त्रा सिमाः | 2 | 103 103 103 105 105 | 25 5 2 6 5 2 6 5 1 6 5 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 | 2:345 5 40% × 160 × | 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 | * 4 4 0 2 2 2 2 2 | 1997 2 0 2 0 3 · · | श्र मह | 81 0V 1 1 0 V | EF2 52 : 420 | 47.F | 24 16 19 1 14 | ~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~ | 2 2 2 2 2 2 2 2 |
| | 11 | " नर अग् उद्य का रह वि | स्त्र मानि ना नवदः तरा सर्पना चए इ. जनाइ अप उगव ज्ञा सिमाः | 2 | 103 103 103 105 105 | 20% Car 216 5 2200 100 | 5 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 | 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 | 2 in 1 2 2 2 2 2 2 2 2 2 | 1927 2 0 2 0 3 3 3 3 3 3 3 3 3 3 3 3 3 3 3 3 | त्रः तद्व | N 0 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 | E 7 2 5 2 4 2 4 2 6 6 2 0 | 47.F | Cu 2 1 2 2 2 1 | *** 6 2 5 5 | 3 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 |
| | 11 20 | " नर अस्य उद्य कार्य दिव | स्त्र मानि ना नवदः तरा सर्पना चए इ. जनाइ अप उगव ज्ञा सिमाः | 2 | 103 103 103 105 105 | 20% Car 216 5 220 120 | 5 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 | 1 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 | x in 12 0 x 2 /2 x 2 | मेश २५ २५ २५ २५ २५ २५ २५ २५ २५ | त्र- तर् | N 0 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 | E 7 2 5 2 4 2 4 2 6 6 2 0 | 47.F | Cu 2 1 2 2 2 1 | *** 6 2 5 5 | 3 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 |
| | 1 20 20 20 20 | भ नर मर उरंद कार्स कार्स चि | स्त्र मानि ना नवदः तरा सर्पना चए इ. जनाइ ज्या गय त्रा सिमाः ती ^{ज्य} फर् उत्त | 2 | 103 103 103 105 105 | (*** 3 6 % (* 8 2 6 % 2 6 % 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 | 2028 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 | 2 2 2 2 m 2 2 2 2 2 5 2 x | × 1 1 0 0 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 | 200 20 0 20 0 20 0 20 0 20 0 20 0 20 0 | त्र- तर् | N 0 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 | E 7 2 5 2 4 2 4 2 6 6 2 0 | 47.F | Cu 2 1 2 2 2 1 | *** 6 2 5 5 | 3 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 |
| | 1 20 20 | मर मर मर मर मर मर मर मर मर मर मर मर मर मर म | स्त्र मानि ना नवदः तरा सर्पना चए इ. जनाइ ज्या गय त्रा सिमाः ती ^{ज्य} फर् उत्त | Surge Surge & Surge & | 103 103 103 105 105 | Eug (122 202 Cer 2 265 222 122 | יישיין איין אייר היצעילים ביאצ געולי אוליב | 2 2 2 2 4 2 2 2 2 2 2 2 2 X | x 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 | 00 20 0 20 0 20 0 20 0 20 0 20 0 20 0 | त्रः तद् | N 0 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 | E 2 3 2 2: 24 2 0 22 | 47.F | Cu 2 1 1 2 2 1 | *** 6 2 5 5 | 3 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 |

| 22 | ेप्रंका | संख्या नराज | पारसी नामानि | নন্নের প্রান্ত | TR | जाति | EA | à | UTH | प्रमे।न | - | - | 1 | | 1 | (| |
|-------------------------------|---|--|--|---|---|---|---|--|--|---|--|--|--|---|--|---|---|
| | 1 | | र्मालद्भ | | 13 | | 1 | 30 | . 4 | ताशा | | | | 1. Sale | | | |
| | 24 | म्ल | रगलद्ग | 2.34 | 3 60 | | 100 | 40 | 2º | 24 | | in. | | | | | |
| | 54 | भनुःशि | | usta | 200 | 25.5 | 6 44 A6 9 4 | 2.2 | 12 | K. | | | | | | | |
| | 200 | ন্যস ন্সনি | जावह | . 4 | Land of the second | 3. | 5 | | 24 | To | - | _ | | - | | | |
| | - Participal | जित | | and. | 24 3 | 35 3 | (nU o | v 2 | 85 | \$50 | | 100 | 1.1 | | | 100 | |
| - | 20 | न्नवल् | वत-जह | . 4 2 2 | 2.5 | 9 F 39 | 1000 542V | 16 | 22 | 36 | | 502 | 10.00 | | 17 | | - |
| | 25 | त्रतम्प अरब | | 42 | 20.5 | | | 30 30 | 20 22 | At | - | 115 | 120 | | | 1 | - |
| | 30 | इ.ज | | 2.20 2.18 12 2 2 4 2 2 2 2 2 2 | E | 22 m 222 | ייאיש אינוש לענש אאיי | | 84 | 24 | 1 | and an | | - | - | | - |
| | 32 | भ् य स्त | 1005 | 2:20 | 5.3 | 122 | 5.2 | 12 28 | 30 | 33 | | 1 | | | 1 | 100 | - |
| | 32 | समुद्र | ATLEL M | 12 | 2.5 | 317 | 24 | 23 | 12 | 718 | LAR. | - | - | PRAL 4 | - | | HU |
| 1 | - | वद्ता | 1. 1. | 13 | 40 , | 15 | 20. | 43 | ••• | 12 | 3.13 | 14 1 | 10 m | 24 | Pad | 100 | |
| | | | | | | ¥ . | •গন ব | । के। | ন্ট্ৰন্ধ | الحق | 1418 | 4 38 | - | | | •50 | |
| | 1 | | | | | | | | | والمعيود | | | | | | | |
| | - | E 3114 | +1645 | | मुहला। वाग | | | | | | | | | | | | |
| | ्र उचाव | F 2.124 | e1643 | 5 stor | जुहुत्वार् व्यार्ग | म् जह्यः | عجز | ندلخ | ्रके। | रित्ववे | म्द्र | मन्प | । নি | ग्रह | nyā | চনত | ගැටි |
| | र्थ्या | ताच | वतन्ध | फ्रिद्धां | जना | म् जूह्यः रित्रस | रू पान्स | स्त र्ह्न | ्के। मेयर | रितवे र्त्रम | ान्द्र राष्ट्रा | मन्प ।तृहो | । निंग जिप् | ্র গ্রন্থ | গদন জেনা | हमवे ते:र | নানিট ৰামি |
| गदि <i>ज्यस</i> ्य | र्थ्या ब ई ना | द्रताच प्रमाश | न्तन्ध गरिके | भिहां गरमा | हाका नं ५०/ | म्म मित्रयः दिनन्स् गव्यार | व्यान्स् व्याग | ्र कर्ट पर | ्के। मेयर मापा | হিরব র্র্মস দাঁহালে | ান্য্য নিয়া না ২য় | म्रज्य खिरी ग्उप | ान्त्रंप्र गजर्भ प्राग्व | ্ত্রে নিম্ নির্দ্ব | गपने (ज्ञा) ज्या। | हमवे ते:र ।यच | চাহিট ৰহাঁস 1188 |
| गीरिं <i>ज्य</i> स्य | र्थ्या ब ई ना एया | ट्रताच प्रमाश मेवप्र | বলন্থ গ্রিকট গ্রন্ট | मिहां गिरमा टिभा | र्शकाः नं ५०/ गाः५५ | म्म मित्रम दिमन्स गठवार गेर्भ ए | पान्स व्याग व्याग | र्भ कर्त पर् मन | ्ते। मेयटे मापा या अ | হিরব র্রস্প দাহাহ ১ংর্ডা | 1-35 1111 11 23 | म्रज्य जिल्हा । । म्रन्ट | । सिंध गजर्भ प्राग्ट र.दि | ্রে নিম্ নিম্ নি নি | णपने (ज्ञा) ज्या। ज्या | हमवे तिः र । यय | ਗ ਦਿੱਤੇ ਕ ਹੈ ਤੇ 11884 – – ਮ |
| गदि <i>यःस</i> अ श्रमान्त् | र्था ब ईना एया गेल | ूनाच प्रमाश मेवप्र आशा | ব্র নব্য । হি ক্র । গ্রন্থ : ১৫ / ১৫ | मिहां गिरमा टिभा एतने | इाका नं ५०५ गाः५५ गयतुर | म्म मित्रम् रिमन्स् रिमन्स् रिमन्स् रिमन्स् | पान्स् व्याग व्याग व्याग्र | र्ड फर्ट पर मन् | ्के। मेयर मापा या अ एत | হি রবি র্নি রস দাঁহাং ১ং েণ দ্বে র্জ | ास्त्र गर्मा २३ गर्मा २३ | मज्य जुहा १३५ १९५२ | 1/नेंश 11 जार्य प्राग्ट 7. दि नाता | एइएए निस्प् तिस्व दिन्न : ३९५ | तियाः जिमाः जिमाः जिमाः जिमाः | हमवे तिः र । यथ त्र- रुख | तातिः वराम ११४४ |
| ग्री दुरु सः १९माल् | र्था इना एया गेल मेन्द्र | द्रताच प्रमाश मेवप्र आशा गोलव्य | বলব্য গইক্ট গলবা গণ্ড গণ্ড গাহ্যা: | मिहां गिरमा टिभा एतने १ रतने | इाका नं १०१ गाः ५५ गयतुर गण-५५ | म्म मिन्नार मिन्नार मिन्नार मिन्नार मार्टना | पानस् व्या ग व्या ग प्रमा क्रिस्ट | र्ग फुर्ट पर मज रोग नमा | ्ते। मेयर मापा या अ एत एतं म | दि तवे इर्तप्रम मांशाः स्प्रक स्यक्र | ास्त्र ग्रंग्रे ग्रंग्रे ग्रि | मजप जुहा 134 राष्ट्र शिर्मा माए | ात्रिय गाजधे प्राग्ट र.ट् ताता रंजिंद | গ্রেন্ নির্ম নের্ম্ব জের্ব গ্রহণ | तपत्र (ज्ञा) ज्या। ज्या १२९ (१२९ | हमवे तिः र । यथ त्व - एड बहार | গ্রানিটা বাগস াওথ |
| ग्री दुरु से उ | र्था इना एया गेल मेन स्वन्ध | দুনার দর্দাহা দর্মাহা আহা টালক দর্মাহা | प्लब्ध गरिके एवत्वे एउग्डर राष्ट्रा स्थ् तर | मिहो गिरमा टिभा एतने गुन्दे पाने | इाका नं ६० गाः ५५ गयतुर गायतुर गायतुर | म्म् मिन्नेस् मिन्नेस् मिन्नेस् मिन्दन्न स्नित्का स्नित्का | पान्स व्याग व्याग व्याग व्याग व्याग व्याग | र्भें प्रतिम म नमा | ्ते। मेयट मापा या अ एत एत ।परा | दि तवे इर्तप्रम मार्थाः स्प्रक स्प्रक प्रयाज | ान्स्र गार्ग २३ निवित्र नग | मज्प जिस १३५५ शुस्ट शिर्गा माए भेर | ात्रिय प्राज्य प्राप्त र.ट् ताता ग्रेजिंग् काय | रइए तिस् तिस् तिस् तिस् तिस् तिस् तिस् तिस् | ति स्व | तम्ब तिः र वि र र र र र र र र र र र र र र र र र र | নানিট বাসি নাড নাড নাবে দ্ব দাবে হ্ব দাব হ্ব দা |
| য়ে সান্য নগাঁ | र्था दूर्रना एया गेलन मेभ द्वन्य वय | द्रताच प्रमाश मेवप्र च्याशा तोल्ट तासार्थ तासार्थ तासार्थ | বলব্য গ্রিক্ট গ্রেক্ট গ্রে হায়া: स्य तर नार्थिन | मिहो गिरमा दिभा एतने पतने पत्नि पत्नि | इाका नं ६० गाः ६६ गयतन् गायतन् गायतन् रमार्द | म्म् मित्रम् मित्रास् मित्रम् मित्रम् मित्रम् मित्रम् मित्रम् | पान्स व्याग व्याग न्नम नेग्वे | मन पर मन मन ब्रा | ्ते। मेयर मापा या अ प्रत प्रत ।परा मज्य | दितवे प्रतिप्रम मार्थाः स्प्रज प्रमान प्रमान गणन | मित्र ग्रे रे ते ते ते रे ते ते ते ते ते ता त् ते ते ते ते ता | मज्य जैसे 134 दार्स कार दार्स | ात्रि प्राग्त राता रेत्रि काय | रइए तिस् तिस् तिस् तिस् तिस् तिस् तिस् तिस् | ति स्व | तम्ब तिः र यिष त्वे र र र र र र र र र र र र र र र र र र र | तातिः वरामे ११४४० भ गावा एनभा इरमाउ मिष्ठि |
| য়ে সান্য নগাঁ | र्था रूमि रुपा गेल मेभ द्वा | द्रताच पमाश्म मेवप्र जेवप्र जेविक तमार्भ प्रितंत | বলব্য গ্রিক্ট গ্রেক্ট গ্রহা: মথ্য নথ নাগ্রিস্য নির্মান্ | मिहो गिरमा दिभा एतने पतने पत्नि पत्नि | इाका नं ५० गाः५५ गयतुर गयतुर ग्राप् रमार्प गटिया | म्म् मिन्न प्रिनन् मिनन् मिनन् रिनन् | पान्स व्याग वान्स वान्स मोटे नर्न | र्मन्त्र मन्द्र स्तिन्न स्तिन्न | ्ते। मेयर मापा या अ पत पत पत पत पत पत पत | दितवे र्जु जिम्म मार्थाः स्प्रज स्प्रज प्रमानां नायुत्व तन्याः | मित्र गर्भ में दिन्द्र निम्ब मित्र मित्र मित्र मित्र | मजप जिस गण्ड मिर मार के दास | ात्रिय प्राग्त द्वाता रेत्रिय रेप्ट्र | रङ्ग तिस् तिस् तिस् ति र देन ग द्वी र द्वी र द्वी | ति स्वा स्विति स्वा स्विति स्व स्विति | तमवी तिः र यिष त्वे र स्पा स्पा नेकी | तातिः वरामे ११४४० |
| য়ে সান্য নগাঁ | र्था रे हेना एया गेल मेन ब ब ब ब ब ब ब ब ब | द्रताच प्रमाश मेवप्र च्याशा तोल्ट तासार्थ तासार्थ तासार्थ | प्लब्ध गरिके गरिके गरा गरा गरा गरा स्थ ता प्रिया जिया जिया जिया जिया जिया जिया जिया ज | मिहो गिरमा दिभा एतने प्रतने प्रतने प्रतने प्रतने प्रतने प्रतने प्रतने | राका नं ६० गाः ५६ गयन् व्यान् रमार्द रमार्द रमार्द रमार्द | म्म् मिन्नम् मिनन्द्र मिनन्द्र मिनन्द्र मिनन्द्र मिनन्द्र मिनन्द्र मिनन्द्र मिनन्द्र | यात्स व्याग वात्र प्रमा केन्ट नेगे | रेन्द्र प्रमान स्थिति स्विति | ्ते। मेयर मापा या अ एतं म प्राप्त प्राप्त प्रान्त | दि तवे इत्रिम मार्थाः स्प की प्रथाः प्रमानां सन्द्याः सन्द्याः | मित्र रे ते ते रे ते ते त | मजप जिस शास शास शास सार संतेता | ात्रिंग प्राग्त राता राता राता राता राता राता राता रा | राजस्य तिस्य तिस्य तिस्य राजस्य स्वी | ति मिति के कि | तम्ब तिः र यि त्रि र र र र र र र र र र र र र र र र र र | तातिम वराम ११४४ |

यं २२ यात्रामोवीके। दिज्या सातस्येवनरस्य के। दिक्रमज्यया संगुरुष्यात्यज्या ३६०० छतया परमापमज्य यात्रज्यते ततो । जव्यं तवा दिकं छा सिछन्नं भवक्षक्रेनं दिति तत्रण्वे ति प्रदर्श के। दिज्या यात्रज्यते ततो ! ज्यं तवा दिकं छा सिछन्नं भवक्षक्रेनं दिति तत्रण्वे ति प्रदर्श के। दिज्या त तित तर्छ्यंत्रिं शत्वाद्त्वा दिकं छा सिछन्नं भवक्षक्रेनं दिति तत्रण्वे ति प्रदर्श के। दिज्या त तित तर्छ्यंत्रिं शत्वाद्त्वा दिकं छा सिछन्नं भवक्षक्रेनं दिति तत्रण्वे ति प्रदर्श के। दिज्या त तित तर्छ्यंत्रिं शत्वाद्त्वा दिकं छा सिछन्नं भवक्षक्रेनं दिति तत्रण्वे ति प्रदर्श के। दिज्या त तित तर्छ्यंत्रिं शत्वाद्त्वा दिकं छा सिछन्नं भवक्षक्रेनं दिती तत्रो लव्य क्यादि ज स्वरूप्त्यके इं भव ति । अत्र नेन स्व क्रां श्रे के प्रमाण में वर्यत्र मध्यात्साम्य याग्ये वानस्वत्र विन्दं का ये ॥ तदुपरिवा सार्धदन नं न्नाम्यं ॥ अत्री राह्य स्वर्णे परमापमां सा २३०७ भ७ एते सछत्रेख्रताः का दिना गाः ६६। व स्वरतः जाग्वक्रमज्या ३२९९। भर रियाको विभागाना मुन्द्रमज्या २९९९ अन्याको दिक्तमज्य या गुरुषते जाताः ३१२९९७ २ रियाको विभागाना मुन्द्रमज्या २९९९७ अत्व या के स्वर्ततः प्राय्तक्रमज्या प्रगुरुष्ठारे मज्यते त्वव्या २४९३ ॥ २ रक्षावर्त्ता दिन्तं व ३२९९ भर्त्व काता ७०९९७ ग १ स्वर्ग दितं दत्तं २२५६ भे स्वर्व दत्ते २३,५६ १२५ भर अनयोरितं दत्तं २३५५६ भेइ त्वा या क्रिय देव ज्वाया उद्द र्यं देव्य की त्वा त्व २०१२ र अयो

एक सिन्को दिउपया ३२९९ १२ भन्ने से स्वियं ने चन्न से इं रोगा घं मागाः ध्वता ३४७ मुघा मी तभू स त्र त्या सामार्थ योः प्रमार्गामारा भागा ने चन्न से इस्पा ऐंग्विन्ना दे दवन्द्यः गाया सार्थ स्वधा रखे रसा ने त्रा रिग चन्न मात् ६५ स्वर्षाचेंग अस्वभुमं उसार्थ लंको एय प्रमार्णामां प्रत्यं रंग्या गा दि खन्न स्व्यते गानिर सलं फोएयल रामाना त्स्छाटं फलं यह्य तिभाग मेति यथा चितं तर्ड एवडे मे च भ् बड् स्व्यते गानिर सलं फोएयल रामाना त्स्छाटं फलं यह्य तिभाग मेति यथा चितं तर्ड एवडे मे च भ बड् मं उसे खनि पि मं त्रे ६६ अस्प्र व्या खा गु यंत्रे तावदान वते ९ • एक भिव २ नि ३ पंच भ बड् द्र १० भ्रमारेग मता बल युव्द ल्पन या ची धानवं तिपराएग मापि गु तत्ते पंच भ पड् द्र १० भ्रमारेग मता बल युव्द ल्पन या ची धानवं तिपराएग मापि गु तत्ते पंच भ पड् या नो मच अस्पाप ना धानिर सलं का स्वाने घ दर्शा भामपि मे घा दे भां स्वाना मापि प्रमारागा नि दन्न तर्ज ज्वा प्रत्रा से बामं शादितमानी पत्रि प्रा दिन तता त्रस्या दे प्रा ग्रा मित्र प्रा माणि मे घा दे भा मार्ग कर पत्र स्वाद्या पत्र संव स्वान मानी पत्रि प्रा दे मे साद भा साथि प्रमारा का या च रहे सरा प्रस्थ दि शादे राप पति का सोग पत्रि प्रा कि राग स्वाया प्रा क्ष दे स्वा या मे यत्रमा एं २७ इन्य स्व २९ मियुन ३ २२ एषा सिंहे रामां द्या भा भी स्वाया २०१० व्य ध २९ १४० मि युन ३२, १४ एते छन्न मे एक सिलं हत्व न्या ता नदे छः तथा लग ति प्रा प्र भा जुलारी ना खुः

| | र्णा काल महात महात काल काल काल काल काल काल काल काल काल काल | च दिन्द्र आ रि जा स | त्राः स्रि नि स्र नि स्र नि स्र नि | रिधिक अप्र ता गान ना न | भिः रशाः स्वा स्व स्व स्व स्व | महित्र के | तेशा ताता ताता ताता ताता ताता ताता ताता | वित्रे में के के के कि के कि | त्तर द्या निः निः निः निः निः निः निः निः | राति मार मार मेप मेप सिंह मेप | याम् गः (र्याः त्राः तेत | मेहर जिल्ला जिल्ला जिल्ला जिल्ला जिल्ला जिल्ला जिल्ला जिल्ला जिल्ला जिल्ला जिल्ला जिल | विद्याला का स्वार संस्थान का संकार संस्थान का संकार संतार संस्था संकार संता संकार संतार संता संकार संतार संता संता संतार संता संता संता संता संता संता संता संता | गुरी पाता पाता प्रत प्रत प्रत प्रत प्रत प्रत प्रत | र्भ न ना ने ना न न न न न न न न न न न न न न | सः जिन्द्र अन्तर्भव काम काम कि | मितिये प्रति में दिन में द दान में दी में दिन में दिन में दिन में दान में दिन में दिन में दिन में दान में दी में दी में दी में दी में दान मे | पंस्ति सम्मानि स्वामिति स्वामिति स्वामित | वय नाम् | रिष मंग्र के मंग्र | विट घट गाः अजन्म या प्रा | पारंगातातातातातातातातातातातातातातातातातातात | | वित्ताति स्वति स | स्पा ते अ बदिश्व अ भेष नाय नाय | विश्वामा अग्रा माने के के के कि के कि कि के कि कि के कि क | रेने प्राप्त में से | मा म | रेगामिके के जिसमा | राके मण्ड गा के न |
|--|---|---------------------------------------|--|---|---|---|---|--|--|--|---------------------------------------|--|--|--|--|--|---|---|---|--------------------|---|---|--------------------|--|---|---|---|---|------------------------------|-------------------|
| | | • | | | | | | | | | | - | | | | | | | | | | • | | | | | | | | 1 |
| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| वेश्वजन्मा | | 21 | , | W | 4 | 1 | دا | - | 10 | 1 | 10 | 1,1 | | 1.4 | | 1. | | | | b . | 1. | 1. | 1. | 6. | h-4 | hu | | 1 | | E |
| र माना | 1 | 2 | * | 8 8 | 1 × | 2 2 | 1 1 | 6 3 | 8 8 | 10 | 17 | 12 | 12 | 18 | 14 | 12 | 1 1 1 | 10 | 1 2 | 2. | 121 | 23 | 23 | 28 | 24 | 24 | 2 | 2. | c 21 | En o |
| नु समान्। अत्र तांश्म | | 2 20 | * * | s w & | Section 1 | | | A | | · · · · · · · · · · · · · · · · · · · | 2 2 | | 14 19 | A | 17 19 | 12 | 1. 14 | 31 | 1 22 | 2. 50 24 | 21 12. | 22 25 | 24 24 | 28 24 2 | 2 12 12 | 2 2 2 | 2 2 2 | - 21 | 125 | 12 23 |
| नु समाना का तांघ्या | | 2 200 | N XY O S | | Section 1 | | | S | | · · · · · · · · · · · · · · · · · · · | 17 . 3 | | | A | 17 17 0 0 | 12 18 | 1 14 35 . 1 | 15 | 1 22. | x 2 x . | 2 4. 2 . 13 | 12 22 - 2 | - 2 - 3 - 3 | 28 22 . | 2 12 12 . | 2 2 4 . | 2 2 2 . | 2. 2. | 125 | 12 28 . |
| नुनमाना कातांश्म जातर बसिंहन्द्र | 44 4 44 4 | • | 44 | 48 | | 44 | 10 | 44 | | 44 | 14. | 44 | • 45 | • • | See. | 11.00 | . N. | 1. | 1.1.1 | 200 | | | 1.10 | | 2 12 | 1 | 1 | 100 | | 1 2 2 . 2 |
| नुनमाना कातांश्म जातर बसिंहन्द्र | 44 4 44 4 | • | 44 | 48 | | 44 | 10 | 44 | | 44 | 14. | 44 | • 45 | • • | See. | 11.00 | . N. | 1. | 1.1.1 | 200 | | | 1.10 | | | 1 | 1 | 100 | | 12 22 . 2 . 2 |
| नुचमान का तांच्या क्षंतर ब सिंह्य ब सिंह्य | 44 4 44 4 31 2 | 14 | 2 | 48 | | 44 35 | 15 | • 44 | 46 34 | 44 80 | 81 | · 44 89 | . 44 | • 44 | 84 | 38 | 8,0 | 85 | 84 | 40 | 49 | ча | 43 | 48 | 44 | 44 | v | 40 | - 41 | - |
| नुसमान का तांख्या क्षंतर ब सिंह्य ब्रह्मंनानां | 44 4 44 4 31 2 | 14 | 2 | 48 | | 44 35 | 15 | • 44 | 46 34 | 44 80 | 81 | · 44 89 | · 4 × × 2 | · 44 88 82 | 84 82 | 25 30 | 2.8 % | 85 | 84 | 40 80 28 | 49 80 24 | 42 3. | 43 40 39 | 48 49 32 | 44 | 44 | v | 40 | - 41 | - |
| नुसमाना का तांशा अतर य सिंह्य य सिंह्य य सिंह्य य सिंह्य य सिंह्य य सिंह्य | 44 4 44 4 31 2 | · · · · | • 44 22 3• 83 | · · · · · · | · 44 34 37 38 | · 44 35 35 35 | · 4 2 38 34 . | · 44 35 34 33 | · E 35 | • 44 80 33 3. | 81 3C 44 | · × × × × × · | . 5 2 3 3 7 4 | · 27 88 22 . | 84 82 4 | 2 20 20 | 1 2.8 % | 85 | 84 84 | 40 40 22 1 | 49 | 42 3. | 43 40 39 | 48 49 32 | 44 | 43 | v +3 > | 40 74 - | - 41 | 13.4 |
| नुसमाना का तांशा अंतर करिंस्ट कर्तिस्ट का लांशा का लांशा अंत्र तर | 94 9 94 9 91 9 32 9 85 9 96 | · · · · · · · · · · · · · · · · · · · | • 44 23 3. 83 40 | 48 37 31 3. 3. 40 | · 44 34 37 . 40 | · 44 35 33 35 48 | · · · · · · · · · · · · · · · · · · · | · 44 35 34 33 • 45 | · · · · · · · · · · · · · · · · · · · | • 44 80 33 3. | 44 30 44 | · 3 2 2 2 . 4 | . 5 2 3/2 4: | · 4 88 20 . | 84 82 4. | . 2 28 | \$ \$ \$ 1. | 85 84 20 0 | 84 84 0 1 | ×0 ×0 × -1 | 49 | 42 23. 0 2 | 43 40 39 19 | 48 49 32 7 2 | 44 52 9 | 43 | 18 30 3 3 | 40 24 - 2 | - 41 42 72 7 | w. 3.4 |
| की तोष्म ज्यंतर य सिंह्य वउन्होंना नो का सांच्या का संवर भेषुन कर्क | 14 1 14 1 14 1 32 2 8 F 3 8 F 3 | · · · · · · · · · · · · · · · · · · · | • 44 22 3. 83 • 40 12 | · 48 34 31 36 - 45 | · 44 3 4 3 7 . 42 E4 | · 44 35 5 · 14 54 | · · · · · · · · · · · · · · · · · · · | · 44 35 34 37 • 45 54 | · · · · · · · · · · · · · · · · · · · | · 44 80 33 · · 44 30 | 81 35 44 97 | · 4 4 4 4 4 4 | · 1 × × × × · · | · 44 82 4. 4. 4. 4. 4. 4. 4. 4. 4. 4. 4. 4. 4. | 84 82 4 | 30 . 2 2 20 | \$ 8% 1: 3 | 85 84 2 8 4 2 8 4 2 8 4 2 8 4 2 8 4 2 9 4 1 5 1 5 1 5 1 5 1 5 1 5 1 5 1 5 1 5 1 | 20 1 28 | 40 30 22 -1 60 | 49 35 2 2 2 6 | 42 23. 12 2 | 43 40 39 17 | 48 49 32 7 2 88 | 44 53 9 1 54 | 44 1 2 24 | v +3 > > > | 40 48 - 2 20 | - 41 142 72 7 7 | A w. 3.6 |
| जुनमान का तांघग का तांघग का तांघग का लांघग का तांघग का तांघ का तांघग का तांघ का तांघ का तांघ का ता का तांघ का ता का तांघ का तांघ का ता का का का ता का ता का का का ता का ता का का का का का ता क | 0 44 44 37 28 44 25 24 25 24 25 | · · · · · · · · · · · · · · · · · · · | • 44 • 12 • 12 | 48 38 31 8. 40 88 | · 4 3 3 2 · 4 4 2 | · 44 35 · 14 33 35 · 14 54 54 | · ~ ~ ~ ~ ~ ~ ~ ~ ~ ~ ~ ~ ~ ~ ~ ~ ~ ~ ~ | · 44 30 34 30 . 44 40 44 | · · · · · · · · · · · · · · · · · · · | · 44 80 33 3. · 44 30 10 | 81 30 . 4 4 97 97 | · 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 | · 5 8 3 2 4 : 3 3 | · 4 8 81 2 | 84 8 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 | 30 . 2 . 20 | × × × × × × | 84 2 2 2 8 2 8 4 8 4 8 4 8 4 8 4 8 4 8 4 | 2 1 1 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 | 40 30 2 1 1 CO Y | 49 35 2 2 9 6 5 | Y 2 2 3 9 7 5 2 2 | 43 40 39 17 53 53 | 48 49 32 2 28 83 | 44 42 33 4 1 54 54 | 44 1 2 24 | 130 130 130 130 130 130 130 130 130 130 | 40 44 1 2 1 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 | 142 172 72 73 73 | 2 2 w 2 2 2 |
| नुसमान का तांघ्या क्षंतर व्यसिंह्य वेदानुरंना नां का लांघ्य | 14 1 14 1 14 1 32 2 8 F 3 8 F 3 | · · · · · · · · · · · · · · · · · · · | • 44 • 12 • 12 | 48 38 31 8. 40 88 | · 4 3 3 2 · 4 4 24 | · 4 5 33 5 · 4 64 8 33 | · ~ ~ ~ ~ ~ ~ ~ ~ ~ ~ ~ ~ ~ ~ ~ ~ ~ ~ ~ | A T T . C W T . A. | · 16 4 31 · 14 54 38 | · 44 80 33 · · 4 30 20 20 20 20 20 20 20 20 20 20 20 20 20 | 81 4. 4 38 4. 4 38 | · 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 | · ~ ~ · · · · · · · · · | · 4 88 22 · . 98 32 5 | 84 6 . 2 8 9 8 | 2 2 . 2 2 22 | 5 2 2 2 2 2 2 2 | × × × × × × × × × × × × | 2 2 1 1 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 | x 3 x -1 C Y X | 49 35 22 2 6 2 2 | Y 2 2 3 9 7 5 2 2 | 43 40 39 17 53 222 | 48 49 32 2 28 83 | 44 33 9 1 5 32 | 44 1 2 24 | 130 130 130 130 130 130 130 130 130 130 | 40 44 1 2 1 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 | 142 172 72 73 73 | 2 2 w 2 2 2 |

| 24 | | 2 | 2 | 1 | ul | ч. | 4 | | -1 | ~ | | | | | 1. | 100 | | 1.1. | 1 | 24 | 2 | 1 | - | | | | 1 | 1 | - | 1 | |
|------|---------------|-------|-------|-----|-----|------|------|----|------|-----|------|----|-----|----|----|------|------|------|----------|-----|-----|----|----------------|------------|-----|-----|-----|---------|---------|-----|------|
| 12 | -1121 | | - | | .0 | ~ | 2 | 3 | 5 | 4 | 10 | 25 | 17 | 13 | 18 | 14 | 16 | 10 | 15 | 14 | 40 | 30 | 32 | 33 | 28 | 24 | 56 | 20 | 56 | 18 | 50 |
| | बाहरा रलख | 160 | 44 | 325 | 35 | 130 | 110 | 88 | 23 | 34 | 33 | 52 | 45 | 42 | 80 | RE | 42 | 35 | 36 48 | 38 | 32 | 39 | 82 | 25 | 24 | 24 | 23 | 38 | 33 | 27 | 3. |
| - | લામાં | 8.2 | 1,206 | 183 | 7.4 | ج. | 24 | 3 | 8K | 88 | 32 | 35 | 32 | 3. | 35 | 35 | 28 | 22 | 21 | 3. | 14 | 38 | V | 3.6 | 94 | 94 | 18 | .13 | 12 | 11 | 10 |
| | ţ. | 32 | 32 | 33 | 36 | 34 | 37 | er | 36 | 35 | Ro | 81 | 82 | 83 | 88 | 84 | 81 | 80 | 80 | 44 | 40 | ur | 42 | 43 | 48 | બાપ | 144 | Y | 40 | ak | 80 |
| | | | | 35 | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | د 38 | - 1 | 2: | 2 49 |
| | सन्नां ङहा | 11 35 | 14 | 3 | 1. | 1. 2 | 23 | 22 | N/m | 5.4 | 5 2 | 5 | Q.C | 3. | 2 | 3. | 2 34 | 235 | 27 | 24 | 44 | 4 | م ۲۲ | 33 | 7 | 48 | x | 33 | * | 8 | 83 |
| | ंत्रं | 51 | 12 | 63 | 54 | 44 | 19 | 40 | 2= | 64 | و. | 27 | 22 | 23 | 37 | ٥५ | 25 | 22 | , , | 74 | ea | =1 | e 2 | c 3 | 68 | ey | 24 | 5 | | 23 | 5 |
| | ह्य. | 24 | 2 | | 7 4 | 34 | 427 | 14 | 5.1 | * | * 22 | 60 | 3 | 38 | 33 | 3 13 | 3. | 2 46 | 2 33 | 2. | 6.2 | 1 | 1 | 23 | 35 | in | 2 | iq | • 35 | 0 | • • |
| 1 | स. | 3 | 3 | 38 | 3 | 324 | CE . | 24 | 2 70 | 3 | 32 | ** | 2.2 | NE | 20 | 3 | 22 | 1 33 | 24 | 122 | 18 | 2 | 44 | 0 47 | -15 | 34 | 25 | 23 | 14 | • • | 0 0 |
| 10 1 | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | 1 | | | - / | | | |

८९उन्ततांग्राः नतज्या३५९७२५ उन्त्रतज्या६२५७ नतज्याहार्ग्राभि १२ संग्रुएय उन्ततज्यास्वयंच याएनमंग्रहायं ६२०१२ सप्तभिः संग्रुएष उन्ततज्य याप्ते समागु स्वरंकोः अंगु सदिख्या ४०१० एवं न वांग् लग्नंको रपिष्ठायाः करेंगि प्रसाध्ये गान्त्रय व रुप्तिन्य ३१. एरप्रज्या ३६०० हा र्ष्याभेः संग्रुएष उन्ततज्य मावि अज्यफलं क्रुतिः कर्शस्यात हा र्द्रांग्र जससां गुरु श्वं क्रिण्य प्रस्तां भ् के ए हैं ३ व लो वयते ॥ अत्र इग्र प् वरेग एग क चत्र च्या मागाः क्र वीन्द्य ति संस्कृतो मद्द मस्तरिना मागु हः न दी पप र्र्यान्तनाविरत्वते वरेग एग क चत्र च्या मागाः क्र वीन्द्य ति संस्कृतो मद्द मस्तरिना मागु हः न दी पप र्र्यान्तनाविरत्वते मयज्ञा मे महें द्रगु हुए। स्प्रहं गागित कर्म एति गतां ५ ० स्पष्टार्था भन्नी पी रेग्र महेंद्र सर्व भगित कर्म एति गतां ५० व्या हो प्रीरी रेग्र महेंद्र सर्व भगित कर्म प्रयोग महें द्रभन्ज जीनः सर्व वरसाई पचर रएंगा नो जे कर्न्य खता भररात्त्री मज्य देवना विरत्वते स्मिन्द्र प्रयोग महें इयन्त्र जीनः सर्व वरसाई पचररएंगा नो जे कर्न्य खता भररात्त्री मज्य देवना विरत्वते स्मिन्द्र ये यात्रान में व्यात्याने गानानि अः प्रयमका भ्यायः समान्नि गतः २० भइति यं द्र राज्य न्ता स्व भ्यायात्रे म यटना भ्यायो व्या व्यायते ॥ आदे यित्रं मत्नमयं धा तु जंवा विस्ती रंगीच स्वेछ या काराय्य या दिस्त व्यासी पाल वत्तस्य सिमन्द्राये कार्यायत्र रित्तवक्रा चु मानात्र २० अस्र स्वयाख्या ॥ मत्यासहः धा तवः पित साया मन्म यं धा व मर्यवा यं त्र विस्ती र्यात्व क्रा छा घांच कारात्या यं त्र वा मानात् तास्म ²¹२२ न्यं-त्रेपा लिदने देर्घ्यवाँ मो आयाम विकेत आर्थिः को धी विस्ती र्र्ण मिति पद खेख पेत्प उपेन्प पाव नि छार्थ तावा धिका थी जित्य थेः ॥ भाम्ये ना गे स्पत्रिका र्ण्य विति धर्मा रवते एका रंभे नत्त् मध्ये तस्प खेछर पा तो राखा ना पत्रा स्पत्त्वात् प्रजुर महर्य का घ्री दे नत्य त्रे के एका गार मिति भो मद के तान्मो गेन्द्रिको र्या किर हे 'शिरस्पितत्वात् प्रजुर महर्य का घ्री दे नत्य त्रे के एका गार मिति भो के तस्प के एका गार मध्ये अन्यानि उन्न तां हे रे कर स्व क्र उसर हर्य का घ्री दे नत्य त्रे के एका गार मिति भो के तस्प के एका गार मध्ये अन्यानि उन्न तां हे रे कर स्व ल के राष्ट्र का घ्री दे नत्य त्रे के एका गार मिति भो के तस्प के एका गार मध्ये अन्यानि उन्न तां हे रे कर त्वता ल के राष्ट्र का चित्र त्वां दा ना पत्र कि कि के तस्प के एका गार मध्ये अन्यानि उन्न तां है रे कर त्वता ल के राष्ट्र का चित्र त्वां दा ना पत्र कि का कि जर त्वा राज्य कि एयोति के छिः यावं ता दे हा ना पत्रा गि कर्ज ख्या नि ता वंति का ध्वे पत्र प्रंत्र के प्रिज नित्न दे हुंगे न्यत वि छ योति का र्था गिए एक पत्रे चे न्व का राष्ट्र कि तानि ता वंति का ध्वे न्य पत्र ति को त्यन्त्रा राज्य मित्र ग्वानि व र्था गि त्य वं यो चे न्त्र के राष्ट्र पि के साध ना ये पत्र प्रंत्र के त्य न्य राष्ट्र ये के महार का मित्र ग्वा के तात्य न्या पि वे यो घा को स्व ता : ॥ शा उन्ह्र तो शाप्त्रा देर्य पत्र प्र न च झाधि हित नवा छ य यास्त्र न्यं जे के तात्य न्या पि व के एका गार मध्ये उत्तरा स्वाप्य तो इत्व पत्र जे च झाधि हित नवा छ च का कि राख को एका गार मध्ये उत्तरा साध्य उत्तरा साध्य के छा का हर हो कि को ए क्रि की छि है हो छि हे व जने ये ति वे छे की लह्त ने के क्वा धिष्ट मं तर्ल्ज नं च आज्य प्रेप प्रता न स्वा की कि को ऐ क्रि हो छि हे के के की छित की छे लि के का का स्व की कि को ऐ क्रि हो छि के जे के हो की कि के के छे छे कि

अययंत्रस्वनाध्यायेव्याखायते। यंत्रं प्रोक्तं यद्रियं व वैनेत्या एकदित्री खंग पत्तां शन्द्र म्ना ९ देधाप्येतत्सेाम्पयाम्यप्रनेदां तनिम्नं द्वं भिन्नन्नां संपरंच ९ अस्पव्याखा॥ आनवते रेकदि विपंच बद्द रोग नतां रापरिवरस्य न पायं इंखद्वि चंग्रेगतं ९ चर्छनिरं रोर्नवते क्रिननंन अवतीतिने कं एन देवसेाम्प, याग्यप्र ने दाधे पा एकन्निष्म सं तंपरं ये ... त्रे श्रीक्तं १ स्वत्त द्वं वर्त्त अवतीतिने कं एन देवसेाम्प, याग्यप्र ने दाधे पा एकन्निष्म सं तंपरं ये ... त्रे शक्तं भवत्त द्वं कर्त्तनंन अवतीतिने कं एन देवसेाम्प, याग्यप्र ने दाधे पा एकन्निष्म सं तंपरं ये ... त्रे शक्तं भवत्त द्वं द्व प्री ते ने ने प्रे यं उत्तर वित्र यज्य प्राप्त ने प्राप्त क्रिप्त प्राप्त क्रिय्यान्याः खनंद त्र मि तेन्त्र तो र्याः १ व्यात्वया ॥ दवि क्रायन्याधित्ति यंत्रे स्प को छ्वा गारस्वस्थाप्याः खनंद त्र मि तेन्त्र तो र्याः १ व्यात्वया ॥ दवि क्रायन्याधित्ति यंत्रे स्प को छ्वा गारस्वप्य प्यान्य ष्टि विनागे क के राख्येन लोह् पंत्रे एव न द्व प्राप्ति तन्त्र मम् स्ट्र प्रस्तनं खड्या विधाप्रव तस्त्रा दिर्ण रे रेवाहयेनां क्याः तत्र स्वीस्मिन्दत्ते स्विद् सिर्ग्ति पि द्वाध्य गाः के प्राप्ति ति प्रि त्वां विद्या प्रात्त क्या प्रति ना गजाताः पत्त्व यज्ञ नजा विनार्ग संक्रत्र जा प्राप्त ति यो त्या ज्या र्या द्वावि से व्याः प्रति ना गजाताः पत्त्व ये पश्च ज्वज्या विनार्ग स्वत्व प्रत्वा का मं का स्वारिण जात्ता न रा स्वादिया ख्या खा अपस्त न वत्ते उप रिद्व ना लि रक्ते स्वता राग ना मे का स्वारण्या ज्या

यं रे

गजातो रेखा वि के प्यास तो द सिएा पष्ट्र मांतरा के पद्म आग के व्याः तया पष्ट्रि मंसे म्यांतः रं के दत्त मध्ये सम्रागुल या कि खित्ता तरधास्याऽनयतः पष्ट्रि मसोम्परे खालग्ता-ह्रादश् के एका-क्त न्वापश्चि मेस्तररेखा मध्यं यदिका दिहाद रापर्यतान्ह्राद इंग् गु लान्वि ग्वि व्या के मध्य म्ह्र एका ग्व श्वापश्चि मेस्तररेखा मध्यं यदिका दिहाद रापर्यतान्ह्राद इंग् गु लान्वि ग्वि व्या के मध्य म्ह्र एका ग्व श्वापश्चि मेस्तररेखा मध्यं यदिका दिहाद रापर्यतान्ह्राद इंग् गु लान्वि ग्वि व्या के मध्य म्ह्र एका ग्व श्विमि म्यदेखा भ वि सा गजाता खंगु ला या रेखा वि व्या ततउ त्तर हवीं तरा ल को एक खुनी वा वि लि व्या च तुर्रणं ना गानी रेखा श्वत्वे द्र सत्मुखाएव का र्याः ॥ 'कदग्वि घं त्रे रहा हु ह्य स्य खया कि खितान जव ति त दा छा या दी का घे हि एक्या एवं पत्र स्पेष्ट भाग माध्य ना सं रिर्णा जाता ग्व छा जंत्र के घर गारस्य स्वीत त दा छा या दी का घे हि एक्या एवं पत्र स्पेष्ट भाग माध्य ना सं रिर्णा जाता ग्व छा जंत्र का घर गारस्य स्वीत त दा छा या दी का घे हि एक्या एवं पत्र स्पेष्ट भाग माध्य ना सं रिर्णा जाता ग्व छा जंत्र का घर गारस्य स्वीत दा साधन माद ॥ ट्यन्त ये प्रात्ति गत्वा ज्वत्य कि रि हा तर ते वि लि व्या खामान्त्री छा न्य सा ग्वि सं त्वा स्व २५० रेखा स्तरिया सि देशा व्या की त्वाः ४ गा द गत्व ते के से खा न पत्र जे सा तनी छा न्य सा ग्वि सं त्वा स्व २५० रेखा स्तरिया सि देशा व ते खाः ४ गा द गत्व ते के सु वम 'ध के दा दपा चरे खो परिकें द माति : चिन्दे के ते ते छिरसः एछु त्वमा ने तट काति छि ते स्फु छाति ५ - क्या खाण ततर ह्वा दिदिया किते यं त्रेष्ठ याम्य रेखी परि के इत्तरत्वि झर्परे एक झाराना मं साना भ्र स्व यं २८ तंत्रेंद्रमाने : कर्करेन चित्रज्ञत तसि रस तन्म धे तए छुत्व स्य या सस्य मानेन पंचे के एका ग रस्य स्व नागे पाल्पांक की रागे एवत्त च ये के ते सति प्रयमेना रुपा त्य दत्ते कि राष्ट्र मध्यात्तर छा चि को धिंत: ॥ एका घुन्न तांचा ज्ञारे एका छुका च विधाय च तुर्दित्त्य नव संग्रानी प्रितं के रूप रितेन त्यवत्त स्पना री रूप त्वा च दस्य त र्वती प्रवत्ते प्र करपो रे रवा प्रति के छिकं ये यो चितं के रूप रितेन त्यवत्त स्पना री रूप त्वा च दस्य त र्वती प्रवत्ते प्र करपो रे रवा प्रति के छिकं ये यो चितं के रूप रितेन त्यवत्त स्पना री रूप त्वा च दस्थित रिती प्रवत्ते प्र करपो रे रवा प्रति के छिकं ये यो चितं के रूप रितेन त्यवत्त स्पना री रूप त्वा च दस्थित रिती प्रवत्ते प्र यो घ से मिये विरचे प्र के वा पत्रा जुमा ने न ते ति रुप ते ने भागान रवरा माने खये ते तदे ही : कर्का दिवत्त न्त्रित परि वेधे प्र ति ते ये छुच विहारचा तन्न्र: भागान रवरा माने खये ते तदे ही : कर्का दिवत्त न्त्रित परि तो के दे छुच वा स्वाध साम्पर्य चे अत्तां रूप या एक क्र रितेन कि रियत्त नि वेधे के वा पत्री ते ने ये छुच वा स्वाध साम्पर्य चे अत्तां रूप या एक कि रित्त के पर छि स्व तिन्म प्र विह्त स्पत्र वा स्प्र माने ने धा स्वाध साम्पर्य चे अत्तां रा पत्रा एग का छ या जित्र के स्पत्र ने या रुप स्व के पत्र के का नि स्प् या स्वाध साम्पर्य चे अत्तां रा पत्रा एग का छ या जित्र जित्र प्र या हित्ते इत्र मा रो न दन्दे ज्व भा या स्थित रही त्वी प्र वर्व रे यो स्वित्ते पत्र सामय ते स्व के प्र ले के परि के दत्त मा रो न व त्व त्व च संय तर परं चा नत्व तर्व के निवेष्य व्या संस्य मानेन स्पुरुता नि सि खेत न्त्र ना रा या च नता व नती ह

३ निरसरेरेग्न विशेषण्वायमुच्यते उन्त्रनांशपत्रेई भ्विरेशेर्स्राफेक्तत्वात् यातिर्थनेरवामेवप्राणपरिक्ष्पातरेवप्रयमंत्राठट्रझंडतात्वर कुतवक्तंत्रतेग्रह्त्वेन्क्रिय्यण्यानवतेर्यथास्रताग्नकार्यगरिए तत्रापिश्वद्वांश्गनां मभावात् केंद्रव्याप्तेग्रत्यावेवस्थातां भ

बारब्पा॥एनेटत्तेष्ठप्रयमंत्रत्ते क्तात्यंशेयागिगउन्त्रतं शानंटतानि मवंती।तिशेषः एखच दत्तेष्ठ र्रवेक्त एक घछां शपरिकल्पनया आनउते विभागात् उन्त्रतां शान्तलिवत् ग्वेभर्पी न भ दत्तेष्ठ र्रवेक्त एक घछां शपरिकल्पनया आनउते विभागात् उन्त्रतां शान्तलिवत् ग्वेभर्पी न भ स्पत्र्यस्य भ्यादिशव्याध्याणग्रद्णणं धिरुम्माना मुन्द्रतावगत्पेस् र्याट्तप्रमतात्ता पत्ते इत्तपर्थः र् मध्या स्पत्र्यस्य भ्यादिशव्याख्याणम् परिविन्गगेः अमान्द्रिविद्यापरमं दिनं व देशा भिभानेन तथात्त्र भागात् ९॥ अस्यव्याख्याणमध्यान्त्रे खामः त्रितः कर्ववत्त्तमधास्यिते स्वीपरक्तिग्रेक्तमञ्ज तथात्त्र भागत् ९॥ अस्यव्याख्याणमध्यान्त्रे खामः त्रितः कर्ववत्त्तमधास्यिते स्वीपरक्तिग्रेक्तमञ्ज विद्यवछायांपरमंदिनं उक्तप्रदिनमानं वदेशनामसदिता न त्रंदां श्राष्ट्र लियि स्वापरविद्रीग्रेक्रमाञ्च विद्यवछायांपरमंदिनं उक्तप्रदिनमानं वदेशनामसदिता न त्रंदां श्राष्ट्र विध्यापयेदित्र र्थाः अप्रयोग्रेभय्य त्रेम्यदेभस्त्रस्यापनम्प्रदण्डमार्थी धादश्चाविनज्यम्णानककी ब्यू यमंग्रलेख विधायतृतान्यान्त्रिन्नः प्रती च्याप्त्राकेन्विप्रपदिदशापिहेता र च्यात्वा ॥ क्रजात्तियाप्रपत्रे विधायतृतान्यान्त्रितः प्रती च्याप्त्राकेन्विप्रपदिदशापिहेता र च्यात्वा ॥ क्रजात्तिकादधत्तानमकरमेयकर्त्ताव्य प्रमंग्रले खदा दश्यान्त्रिम्वादिदशापिहेता र च्यात्वा ॥ क्रजात्तियात्तान्त्रकात्वत्वाप्रत्र विधायतृतान्यान्त्र्त्त वराप्र्याक्रेन्तिवेश्यादिदशापिहेता र च्यात्वा ॥ क्रियाद्यत्तान्त्रत्वायर्पतानमकरमेयकर्त्ताव्य प्रमंत्र स्वाप्र प्रयाप्त्रिन्तादिकोरिनिर्हार पर्यते रेकोदित्व ग्रियाद्यात्वा हरण्या पद्यत्तात्व क्राय्य प्रतन्तिप्र्याप्रयान्त्र पद्यसाधनाज्ञाता अष्य साम्ययं त्रेन्वक्रेपद्ये कर्कारि दत्तव्य या साध्यन्तत्र स्व क्र क्रीह्र प्रमाण्त्वत्वा प्रयान्त्र स्वाप्त्रे कारित्व न्वत्र य साध्य न्वत्र य विश्वाय्य क्रिय्व या प्राप्त्र स्वर्य स्वरित्व न्वत्र न्वत्र प्त्रात्र य साध्य न्वत्र य या व्यत्ते क्रिय्यमा ण्याः व्यत्र यक्ते प्रक्ति प्रसाप्त्र यत्र स्वर्व य क्रार्त्व क्राय्त्य व्यत्य साध्य व्यत्र क्रात्व या या व्याप्त्र स्वाया प्रयत्र स्वर्त्य या वर्त्र स्वर्य य यत्र व्या्य त्र व्यात्य यत्त्र यत्त्र स्वाय्यात्त्र या यत्र स्वाय्य यत्त्र यत्त्र यत्य यायत्य व्यत्र त्र यत्र त्या या यत्र स्वाया यात्र यत्र यत्त्र

alt.

यं २ उल्साधनं ॥ तत्र निरस्त मेषादितग्नाना मिश्र-ना गानां स्थापनमा इ॥ अचन्न पत्रे विष्ठरेव क्रुज़ ब त अ ये अंतरते छ टा ३७ भागान् एत्सा कला फ्वा क्यि उल्णान् आपा स्येव्या सार्थमा नेन ३९ १२६ विधा पर्य ते १० णनिरस्त मेथादिविल जमानान् हर्से दितान्या चिनिवे उपसे प्राः ॥ दने दिती ये तदधो निवे उप स्तदं करेखा मण्ले निन्धे थाः १९ अमं भव्या खा भ को छा गारनेप नर्रायो परिह द्वया स्या पिते न सत्र पत्रे प्रदे स्तदं करेखा मण्ले निन्धे थाः १९ अमं भव्या खा भ को छा गारनेप नर्रायो परिह द्वया स्या पिते न सत्र पत्रे प्रदे स्तदं करेखा मण्ले निन्धे थाः १९ अमं भव्या खा भ को छा गारनेप नर्रायो परिह द्वया स्या पिति न सत्र पत्रे प्रदे विद्व क्या धन हर्ष विक्रं मेथ मकर प्रमा ऐति दत्तन ये परिन्ति ति अनं करतो पं नम्प्या साम्यना गे रेरवा प १२ न स्त्र कें द्व प्रमा ए टा ३७ अल्यो तदं ते तो ज्या सार्थमा ने न २०१२६ व संविधा यत देयो लग्ता करेरवा च स्यापना चे दितियं व संविधा य एर्व स्मिन्च ते प्रविदिता न्द्र रस स्वा दिललमाना नं का २० अझ्मा भ क्यापना चे दितियं व संविधा य एर्व स्मिन्च ते प्रविदिता न्द्र रस स्वा दिललमाना नं का २० अझ्मा भ स्त्या दित्त्यां व संविधा य एर्व स्मिन्च ते प्रविदित य व त्ते निर्या छा छा क्रि स्वा स्वार्या स्वर्धा पान प्रा स्वर्धा स्थि य य य स्था स्था प्र क्या स्था प्रा म्या स्त्र स्वार्य स्था प्र क्या पना चे दितियं व संविधा य एर्व स्मिन्च ते प्रविदित य व ते निर्धे छाः इत्वी त्व नक्या स्या पि थिछ या न्ति स्वा विक्रा सात्र देश्वे रे का म्या त्या रे स्वा स्थाना नं का स्वाया पि थिछ या न्ति ता मेथा सातदे स्ट्रे रे के क्या नित्र देशा स्वा २० १९ द अग्य नज्य के प्रा य त्या स्वाय्य स्था स्वार्य स्व ति सि स्व को खपि जन्या दिखट्मा नस्यानु हा देग्वे परितरित १३ अग्य जन्व के प्राय का क्या प्र संक्य तन स्वाय स्वार्य

> भनमार्थवासाव्ययनेनमुखानिसंति लगानिसंतिाद पत्र्यानिपञ्च रैखा छइनामति आगनाता सन्त्रेवतं रुभिमुखा विखेखाः १८ वर्डप्रासनी पविस्वप्यविन्द् घुज्याप्रमाग्रेगनचक करिन तत्र्वेवः प्रधिष्ठ्णःस्य ययोदितस्य निवै श्यमस्याग्रमती दस्त्त १५ अनये व्याखाण्य करिन तत्र्वेवः प्रधिष्ठ्णःस्य ययोदितस्य निवै श्यमस्याग्रमती दस्त्त १५ अनये व्याखाण्य त्रव्याप्ठकते प्रदेऽ त्तरस्या निरसाश्चि मेथादी निसंत्र गानि मिति गतत्र प्रदे रे वामनुलास्मीकृत्या नस्त्रार्थ्ण मेथादी निसंत्रानिसंत्रानि निरिवता निमंति गतत्र प्रदे रे वामनुलास्मीकृत्या गर्भत्राण्य मेथादी निसंदा सिमद्वा रिविति व्यव्हें प्रत्यती प्रसाम स्वार्थ रात्र प्रमार्थनिक कर्तराग्रेण चिन्द्र विरचयात्र्वेव चिन्द्रेपरियया दिवस्य चिर्ण्यत्वेव्या स्वार्थ रात्र प्रमार्थमुखं स्थाप्यः ॥ धनुर्म् गांते निश्चितं विधेयं चिन्द्र प्रसिद्ध मकरास्य नाम्रसदितस्य तिरस्तमार्थमुखं स्थाप्यः ॥ धनुर्म् गांते निश्चितं विधेयं चिन्द्रं प्रसिद्ध मकरास्य नाम्ना यद्राम्यमाणे गणाके नविखक मुद्र ई छुं वृतिना छिटचं १९ स्वद्यः भएवं सोम्प्य प्रेत्र साधनाज्ञा त्र अ यक्ते वल्याम्य यंत्रे छे द्वार्या प्रार्थने विद्य चिन्त्र दिन्त्र प्रक्रिय प्रविद्य प्रक्रमी म्वान्त्र त्य क्य त्र रहा व्यास्वया अनम्य पियंत्र विधियंत्र साधना प्राण्य रुवि क्रये क्र पिर्य क्या कि विद्य स्थय के त्र रहा व्यास्वया ॥ याम्य पियंत्र विधिम्त्र साधना प्राण्यत्र त्र विद्य स्वि स्वया स्थाना स्थाना नि कर्यत्य व्यक्ते स्वर्णा भाष्या विधिक्त स्व व्यक्ते विधियंत्र साधना प्राण्य स्थाया म्याण्या मिणामाग्व निवेव्यय् क्य

यं २० स्पिम्गस्याने कर्जवत्त्रामितिनामग कर्ववत्तस्यानेमगवत्तनामचक्रत्वादिक्ताधनएर्वमुन्न तांशान्द्तिरग्रस्यादिश्तिवेश्येत स्वापयेदित्पर्धः ॥ पयापंत्रमधा एत्तरस्यादिश्रिप्तात्तयाम केंद्रमानेनकर्कश्केन चिन्हंकत्वा उक्त याम्पव्यासार्धमानेनक्रजवत्तेविद्धीत एवं नागांई या वत् केंद्रव्यासेदन्त वदत्तानिसंसाध्य ततो त्रार्धाधिक्रत्वाद् सिरणस्यां म वित्तराखा केंद्रमाने वत् केंद्रव्यासेदन्त वदत्तानिसंसाध्य ततो त्रार्धाधिक्रत्वाद् सिरणस्यां म वित्तराखा केंद्रमाने वत् केंद्रव्यासेदन्त वदत्तानिसंसाध्य ततो त्रार्धाधिक्रत्वाद् सिरणस्यां म वित्तराखा केंद्रमाने वत्त केंद्रव्यासेदन्त वद्ततानिसंसाध्य त्रेगत्त्रार्धा कित्वाद् सिरणस्यां म वित्तराखा केंद्रमाने व्याप्ति काताग्रेण्यान्त्रतवत्त्र पानिसंसाधये दिर्गे जावः एवं केवल्याम्पयंत्रे अत्रता श्रक्तराधनां पूर्णकाताग्रेण्यवके वत्त्य सम्पयंत्रे ज्वन्त्र साधनाम्र ग्रन्त विद्यानि खरेवज्ञात्र स्व अपविद्व कात्रा क्र प्रकेंद्रचिन्हत्त् व्यासाखवत्ते विदित्तेकुवैरचागे त्वेत्रपानिखरेवजानि स्त्र अस्यव्यात्वा ॥ स्वाप्र्ये पेयंत्रविधियंत्रसाधनाप्राग्रस्तर्ख अयंविद्राषः सगकर्क्तवत्तं व्यत्यस्यमगल्यानेकर्क्तव्त तत्मितिनामगठ्वकेत्तस्याने स्व प्रवेत्र व्यास्य क्तिर्यान्यक्रित्व कें व्यत्यस्यमगल्यानेकर्कविद् व्याप्र्ये पियंत्र विधियंत्रसाधनाप्राग्रस्त व्यवत्ति व्याप्त्वक्तकाधनमिकर धन्वतेवे परित्येनवत्त्ते ख्यास्या विद्वनाधनगर्वयत्र सध्यात्व स्थान्त्र त्यान्ताभ्य क्रत्वा विद्ताधन्त्व विद्विराधन्त्वे विद्त्राधनर्य स्वान्ये

दत्तेन २०२२ विदितेप्रवंतो निरत्ता गानानिमेवादे नितया ना निचरत्रा गिएछने विसेम्प यं त्र रवयाम्परवदे रात्रमाने नप्रवर्श अतछ खानिस्यापानि सेम्प्रं पंत्रे सेम्परग्रदे रात्र छक्ता नि लाळांते अन्नत्र याम्परवादे रात्र का नी तिनागांव राप्य मिप्र पंत्रे के म्परग्रे रात्र पत्रे उ न्नतव र्त्त्य साधने ते सिनिष्ठ मेदे छप गिंद्र यंत्रे दत्तप्र प्र पंपाप्प वदेव कार्य के के साराप्त्रे उ न्नतव र्त्त्त्य साधने ते सिनिष्ठ मेदे छप गिंद्र यंत्रे दत्तप्र पंपाप्प वदेव कार्य के के साराप्त्रे न्नतवे विनज्य दत्तत्र यं याम्प वदेव दे ये २० ग्रा स्वाधा मिनिय प्र ने दे छ से स्वा कि संतर्ज के से के विनज्य दत्तत्र यं याम्प वदेव दे ये २० ग्रा स्वा स्वा गतान्त्र के दे छ के साम्प वाम्पान्द्र कि संतर्क के स्वा के विनज्य दत्तत्र यं याम्प वदेव दे ये २० ग्रा स्वा स्वा प्र ने दे छ से साम्प के सिनक कि य नमेव २ ग्रा २ खेपा र जि से के प्रा ये ये मिप्य प्र अवत्तत्र पं म कर मे यक्ष की र्थ तर्का र्ध ते स्व कि द त्त मेव २ ग्रा २ खेपा र जि स्वा के की साम स्वा मित्रि ये ये के सिनक कि य त्र जा को साम्प कि चा के की साम साम से ये ये व के स्व यत्त प्र याम्प पं न प्रव यो यदत्त हपा ये ने कि कि साम त्य के म का रिप्ता स्व कि की साम साम मे ने पति ते ये व व तरव ने का भाष्य प्रिय ये के कि दत्त मा दि ति या पा के मक रदत्तन मा दी प्रदे हयात्मक पिति ते ये व व तरव ने का भाष्य प्रिय ये के कि दत्त मा दे ति या पा के प्र के स्व साध मगा ह गढा कि स्पा के स्व यत्त प्र पित्र ये व व तरव ने का भाष्य प्रिय ये के कि दत्त मा या प्य ते के के स्व साध मगा के स्व साम साध मगा ह जित्त या व व तरव ना हपरि प्र साध्य मेन्य प्र की स्व ने नि या या प्य भनंकत्वायाम्यदिक् आगे वर्त्वद्वत्तारुपरि मकरदत्तपंर्यते से म्यद्वोन्त तव स्यानि गराध्य कर्फा देपी याम्य यं श्री द्वोधो मि सितानिउन्त्र तमंग्र ता कि वार्याण्यः एवां के द्व्याातादि प्रग्न याप्राग्वनः एवेष रिषे द्वये अत्तां रूप यताधनामं एर्णाः अयफ ग्रेन्ट्र यं चे अमंग्र ता राध्य नं या गात्र वद्व स्वताप्य वेपं च दत्त मे या दि बहु विनि वे रुप से म्या गमे ता भगे तिने वे राजी यं जाव्य। प्रित्त माते गु सा दि घं द्व कत्त मे या दि बहु विनि वे रुप से म्या गमे ता भगे तिने वे राजी यं जाव्य। प्रित्त माते गु सा दि घं द्व कत्त मे या दि बहु विनि वे रुप से म्या प्रे त्वर प्रग्न स्व अपने प्रत्र मा वर हो राष्य्र व्यक्त प्य वेपं च कत्त मे या दि बहु विनि वे रुप से म्या प्रवित्त के द्व राजी यं जाव्य। प्रित्त माते गु सा दि घं द्व रुप्त स्वि म्या य्वत्र मध्या या मरे त्वा परित्त के द्व रोग्र या न्या प्रवत्र क्व पं चर चि न पं च कत्ते मे व्यास वक्तं वि रच्या या गमे त्वा परित्त के देव रोग्र प्राप्त न्या प्यास्व क्व पंचर चि न पं च का त्या स वक्तं वि रच्या का रियहू नि वे रामी यं । श्रया सिन्भ य पत्र मंग्र लोग्रे ति स्व स्व प्राप्त माद्य सी म्यानि जा न दक्त की र वा खिर वि रा नी यं । श्रया सिन्भ य पत्र मंग्र के रिया पत्र या म्याग्री ति न न वि रक्त की रवा खि के ति स्वा कि स्व ज्या का स्व न्या या नि अर्क्ता र स्व प्र या म्याग्री पि दितानि २३ व्या खा। श्रह्य फाण्यं वे अवज्ञपत्रे से मिम्प्रा वि भानि सि श्वर् राय कि ज ति ता नि को सह सो म्यर्ग्वा दि गर्या म्वतानि कर्क्त क्वा का छ से श्वा मकर तो म्या य व को खा जि त्या व म अत्य का पत्र स्व त्व द्व स्व प्य त्या स्व गानि कर्क्त क्वा क्या का स्व के क्या दि या स्व के स्व राय के या व भा

र्यंवर्त्रणदित्तं नमेतन्त्रं यानि यंत्राएप वि तान्पपि छं २८ व्याख्या अवत्रात्रे रेष पत्रमयास्यादित्वारारिग्नत्तत्रस्थितिहेताराधारवतंपरिरत्तरोग्यं रेषंत्यप्रं । एवंफरणेपं त्रे नवत्रपत्रसाधनासंप्र्राज्ञाता ॥ अप्रविप्रपिप्रस्तं सर्ववि श्रेषंत्यच्यते ॥ विंप्रव्यासे भूष मानि उन्त्रतवर्द्धयानि संपादितानिसंति नानि वेवत्तसोम्यं केवलयाम्प्रे/मश्रेचसर्वे श्रेष मानि उन्त्रतवर्द्धयानि संपादितानिसंति नानि वेवत्तसोम्यं केवलयाम्प्रिमश्रेच सर्व श्रेष मानि उन्त्रतवर्द्धयानि संपादितानि संति नानि वेवत्तसोम्प्रे केवलयाम्प्रिम् श्रेचसर्व श्रेष मानि उन्त्रतवर्द्धयानि संपादितानि संति नानि वेवत्तसोम्प्रे केवलयाम्प्रिमश्रेच स्विश्व म्यभागा राद्य अवंति अयाक्तेवत्तव्याम्प्र्यंत्रार्द्धते नेत्रा लानियने स्थानु तरफ्तवान्िष्ठ प्रवन्त्त्तं केप्रव्यासेपर्यं साध्यतिम्प्रविद्यात्विप्रं स्वान्ति स्थाने स्थाने स्थाने स्थाने विद्यत्यात्रे स्थान्ति स्थान्तत्र स्थाने स्थाने स्थाने स्थाने स्थाने स्थाये केप्रव्यासे भूप स्थाने तरफ्तवान्त्रि त्रयकादेनेः याम्पतिं प्रवति स्थाने व्यान्य यंत्र सिद्धित्रि भाग्यत्रत्वा स्थाने स्थाने स्थाने स्थाने त्वार्य स्थाने स्थाने स्थाने स्थाने द्वार्थ्य स्वति स्थाने स्थाने स्थाने स्थाने स्थाने स्थाने स्थाने स्थाने स्थाने स्थाये स्थाने स्थाने स्थान्य स्थाने स्थाने स्थाने स्थाने स्थाने स्थाने स्थाने स्थाने स्व स्थाने तरफ्तवान्त्रि त्यकादेनेः योग्यति श्र्वत्वत्व स्थाये वेप्र्यं द्वार्यकात्व न्त्वार्त्तन स्थाने यान्य स्थाने त्यारित्वा वद्वति स्वराति अवयोत्वेत्रव्यासे दिर्घते तर्यामयक्तत्याद्वधीत्व स्थाने स्वार्या प्रतत्ततरा राग्तनि या त्याने स्थार्य स्थाने स्थार्य के त्तस्याम्य यंत्र विर्ययीत्वन्य स्थाण्य तिहत्वा तउत्तर प्रायाने स्थाय्य स्थाने स्थार्य केव स्थान्य क्रात्य स्थाम्य यंत्र विर्याले स्थान्य स्वार्य सा

उन्तंचरीमठासेक्षानेगप्रणस्पस्पद्याः शासे रेग्यु मारीततो ये। जनेः खारणिः कातिकेपःततः पंचरामे अम्बतकारिधान्नी गने. व्यर्थसी दिंदानि १० वस्त ग्रत्म त्ववारोगरवंती १० इस्तेन् प्रत्मात्वरहे २०० ण्वतत्वाष्ट्रभि २ २५त्यात्मग्रेस् "अवंति देशाश्रत योजनानि संयुरणवारेगेभरसभा जिनानि क्षेत्र कान्यंगनावेष्ठ २.५ क्रथी क्षायाकु वेदेः ४.५ फ़लमंगुलारि, "सरेशनाताविमुवलाभाषादेखास्व रेशांतर वातनाति कियान्ततु गएपा निर्कानि कार्या जल्या च उएपा निएयिः छत्वापलभ्यः छावावाध्यस्रमार्गास्तः तर्यातरेवगराकाचार्यवर्धगरात्तानांकोतक **q**.32 र्शे साम्यामाद्वेनगग्गतागमेनउभयोः साम्ययाम्यदिभागत्ति स्वाहास्यानेघटिकादिसम विष्य स्वरूप यतानेन भो मिफ्रयेत्रस्पएव सर्वदासत्वरमा याति । विद्येषफ्रायंततः परिगंद्र यं जैवतपंच के ਜੀ ਕਿਨਗਾਮ*ਰੰਸੇ* सात् सोम्पयाम्पाइवनेगणगतेन उन्ततमंडले ध्वतसेपति अर्फ्रिस्पात् मरमन्पे अगित्रयंत्रे अर्टतन्त्र रिणारम्परार रेश्गंतरंस्प्रज्तरं यत्वात्तेनेवगरिएतेनउन्ततारामंग्रानिएचकर चकजायते अत्तेलखसंपातछार्द्वनेघटत॥अत्र साखरेणंग्रा धात्तेन्पः परमदिनानपनं।) दिस्यात्तां आजिनेन्त्रिलव्यामतादिशे धिनंशे यमर्थहनंदिः विद्यात्र का स्वर्णक यस्पानि हिगुणी केतं २५ तन्हा उकाविनाड्या किउधी के निंदाना स्वतंन्ह समांतर हो की तंज के भाः प ब पण्ठान रवेगाने रमंदिनं २६ उदाहररगेनेवचारवाझेयागपयागदिल्यां असीरा २८१३५ दिल्या २८१३५ चतुर्विश तिनक्तालव्यं ११९१९ अत्तां इगत्पाति ते शेयं २४०३२२०अधितं ब्राथ १५ ५ प्रायतां बर्द ७१७ विष्याप्तरा १७११ कि अणिनं ७१३४ १३४ अपरि त्रिंदात् खतंडपातं दित्यां परमदिनं चट्या दि३४१३४ एवं विं शर्ता रगेन यावत् रताति अग्रती मधेकरोति एवं तर्वत्र गश्रय पामा दिना दि ध वणा पानपनं

६ तत्यं तंत्रवेत्तर्त्तंतर्त्रं तर्राणवेष्ठतं भ्यमध्यतेवाम्थ्यतत्रेत् त्तेपंछद्रं तराहतत् श्वत्यधाधिकमन्धांगंघविन्वाशोधवेत्ततः २भश्यनयंत्वीध्वा विद्यन्त्रं वत्रं वृत्त्वव्यव्यत्वदिशेटचिद्रे वाहमयं कलंप्रवेशयेन्

1 i

€1[†]

यं २३ तरे रूझता राखनाति रोगध्ये त्र गणुद्धा निकुर्या दित्यर्थः ॥उदाहर रहा ॥ तया मध्यात्मयु झता नामं आत्रां कें द्रामा ऐति २९७३२ भ्वन्द्र का साप्र परिव्यास भात्रे न २२१२९ व्यक्ते के बुरुम्र तो भाने ! व स्यंनि व्यन्तं ॥ ततो यंत्र मध्यात्र मध्यरेखा परिउन्मन व स्वयं धावत्कें द्रव्या सांतरं २०९६ कंवा भागेः प्रमीयमा एं व दित्या स्वरानह सं उछ में "एवं संवेया मयु झतव सानि साध्या नि ॥ अत्र ये सा शानां हा त्यात जानां देश मा सं अध्य के "एवं संवेया मयु झतव सानि साध्या नि ॥ अत्र ये सा शानां हा त्यात जानां देश महा स्व स्वय्य प्रविद्या या म्परे रेता जे सर्र प्रियता जावा ए स्वर्थ रिकां व्य समान नां हा हिछ इता ॥ व्यात्या ॥ उदय प्रविद्यिति के क्रिया प्रियम् दिनि के 'उदिच्यरे त्या प्रेय प्रिया के व्यक्त नां त्या कि इता ग्वात्या ॥ उदय प्रविद्यिति के क्रिया प्रियम् दिनि के 'उदिच्यरे त्या प्रेय प्रिया के चत्र प्रिय हता ग्वात्या ॥ उदय प्रविद्यिति के क्रिया प्रियम् दिनि के 'उदिच्यरे त्या प्रेय प्रेय का व्यक्त मा नं क्र छिछ हता । व्यात्या ॥ उदय प्रविद्यिति के क्रिया प्रियम् दिनि के 'उदिच्यरे त्या प्रेय का के स्वर्य स्वा मा ति श्राय का के या वदेपरित्ये अयु हता 'एवं रो या ग्या त्या क्या त्या का क्या के का क्या का सार्य के प्रायन्य के क्रिय रागणे सदणा का कि ता क्या वदेपरित्ये अयु हता 'एवं रो या ग्या प्रत्य के क्या ग्या ति अयह च्या प्रि न त्वत्या राग प्रत्य का के विद्या च व्यक्त क्या स्वर्य क्वं संस्व राष्य के संस्व देश प्रायत्य के स्वर्य सं द्व यि मा स्वर्य क्या स्वा न्या दार्य या राय का स्वर्य का स्व क्रात्य का न्यर मां राग्लव वहातच्ये च छिहता प्राव्या ख्या स्वान्य परमा राग प्रायत्य का नं त्र सि का ग्रेय स्व रेयदे या परित्य का ता ते स्वनक्तवा स्व दा स्वया क्या न्या न परमा का ना ता स्व

रपान्यदिस्प्रशतितत्।तस्यनस्त्रस्प्णुक्रिस्पात् तर्भावेचंचेर्हाम क्र्वाकार्यतिरोधः॥ यदिश्रव्वतिरणीनस्त्रॅम्युनस्पत्तीयं रोक्तति ततसिनं रोमध्यरेखोपरिस्यापिते रोहि एपास्यं यरिस्वान्परमानतां ग्रान् २२ स्प्राति तद्गो दिरपास्यण्डक्रित्र्यति एवं रोषा रणनस्त्राणि रोधनीया निग्अषयंत्र एस्पित प्रजा रोग धनं चाह्ण प्रजा श्रेष्ठ र्याते एवं रोषा रणनस्त्राणि रोधनीया निग्अषयंत्र एस्पित प्रजा रोग धनं चाह्ण प्रजा श्रेण्याते एवं रोषा रणनस्त्राणि रोधनीया निग्अषयंत्र एस्पित प्रजा रोग धनं चाह्ण प्रजा श्रेण्यात्रे एवं रोषा रणनस्त्राणि रोधनीया निग्अषयंत्र एस्पित प्रजा रोग धनं चाह्ण प्रजा श्रेण्यात्र प्र त्वास्यंपर स्वी तन्त्रध्य रेखोपरिगं छ्वेषा रे ह्या राष्ट्र द्यात्या॥ मन्त्र एषे जुजा श्रेण मं र्झापर रेखो परियदास्या स्तरा राणे छाद्र तरापा द्दयं तस्पा जुजा पानध्य रेखापरि स्वि तं श्रुद्धेत्रवति ग्राप्र यहास्या स्तरा राणे द्वां करिपा द्दयं तस्पा जुजा पानध्य रेखो परि रिद्य तं श्रुद्धेत्रवति ग्राप्र राष्ट्र राणे दिवं करिवा यं त्रस्पति पान म्या रियोज महें द्र व्यात्वाने कित्वर्यंत्र रोग्धनमयाध्या पश्च तुं योग्मनगधारियंत्र रोग धनाध्या प्राज्य राष्ट्र चारणे भ्यापा त्यायतः ॥ श्रयत्र र्थााद्य यहाणा ने स्वाणा प्रजा भ्यास्त्र गिर्म प्र व्योक्तित्र : र्यास्वा॥ श्रिपत्व रिपा स्त्रिय राणे प्रस्ता या प्रवेश स्वाय प्र द्र उगेक्तित्र : र्यास्व्या॥ श्रिपत्व राणे फिद्र राणे भ्यानि राषा प्र विर्वान्त्र या

यं २४ अनोज जयस्प्र छारवेस्न्त्रभागवास्प्रः तरावमध्यंदि नते। पराशंग रात्रो य ते रु स्म पिचेन भेतत् २ व्याख्या॥ इर्वेद निर्ह्वाहे प्राच्छ उः एर्वस्यादिशः जनास्प्र एवंग्रधानवति पर्धतार वेस्नतन्जागः स्फू चेयुः ॥ तरुवमध्यं रिनते मध्यान्हाद्दंविय रोक्ततां शाः स्वः तया रात्रोग रणवे नद दिरणन क्रम्भ स्क्र वा प्रानेत्रे। परिस्थेन यं चे रण इष्टस्य ष्ट य रु स्थ बगास्पवा वे धन्द्रना य साहो शॉः इर्वाप्र रिगत्वेन रही स्वतं शागरे देने च धत्वे न्य राज्यते शाः स्व वगास्पवा वे धन्द्रना य साहो शॉः इर्वाप्र रिगत्वेन रही स्वतं शागरे देने च धत्वे न्य तं श्रेण र बगास्पवा वे धन्द्रना य साहो शॉः इर्वाप्र दिगत्वेन रही स्वतं शागरे देने च धत्वे न्य तं श्रेण र बगास्पवा वे धन्द्रना य साहो शॉः इर्वाप्र दिगत्वे नर्स्वा शारे परि क्रेने च धत्वे न्य तं श्रेण र बह्या नतं त्य म्यास्य ध्ये कालां श्रेन्द्र लिएल प्रमाणे २ ॥ बद्ध विनन्ते रिवसस्य यातं शेषं च घटना दिपरिस्फ रंतन् तरी। न्त्रता शःस्य रिग्मास्तरा ईर्रा स्तुन्त्र या स्वन्छाय भागः ७ व्यार्खा॥ ध्यदि ने साधन तं राष्ट्रा स्वतं श्रेण्यात्रि स्वाचि क्रेन्य स्वर्ग स्व स्वान्त्र न्या खा ध्यति न्या स्व प्र क्रायति परि स्थितं स्र र्याच्ये र्याची क्रेन्य स्वान्य न्यास्य स्व स्व दि त्रि स्वा क्रि क्रायति स्वादि सिरी स्वितं स्वार्ग प्रायति स्वानि स्वा क्रि न्या स्वान्य स्थन्त्र न्यास्त ते न्या स्वार् स्व स्परि स्व त्या स्वान्ते हो स्वार्ग सिर्य स्थान्त्र ने स्थान्त्र स्वाची क्रेन्य स्वान्य स्थान्य स्व स्व स्व स्था न्या स्व विद्य निमायति बहुर्नकी दिनस्य तीतं हो ये व्यात्त्र स्वात्र स्व स्व स्व स्व न्यास्त ते ज्या स्वार्ग स्व स्व त्या स्तरी बहुर्नकी दिनस्य तीतं हो ये व्यात्त्र स्व स्व स्व स्व स्व स्व स्य स्व स्व स्व स्व स्त्र स्थ स्व स्य

र्वापरोन्ह्रतां शस्य श्रे द्विद्धित ज गतः साथ ने मेथा दिल गां शःस्पष्टस्यात् "अप दिवा हो तन यन एवं रवे सप्तम ता शिभागे येत्रे वहे गव ले ये सिते सेव हो गयिनाया ष्वततः स्व ष घ्यष्टस्य ग रपाः पर श्लव नात् ५७ व्या खा ॥ एव मितिकोर्भः द्ववद्र प्लरां श्रे रुषेन्वतां रोग परिस्या पिते सति सप्तमा राप्यं शाय सिन्दे रावलये स्नि सेवता दिने आद्या दिना चार हो रा तते। दिन जा रहो रातः बष्टस्य रहती या घा वत्त दि द शप ये ते हे रात्ते याः परमयं हो रापर भुज वत्त्ता इन्या ॥ अप्र दिनगत शेष घढिका भ्या रव्य ज्ञता इग्रनयने ॥ रव्यं शक्तं प्राव्द्धिति जे निवे रुपा चिन्हे स्मास्य विरवय्य पश्चात् अश्विष्ठ का भ्या रव्य ज्ञता भारस्यंतदेव विन्द्ं परित्वितनीयं ५ ॥ रव्यं शकी यत्र दिन्तं म्यादं क संख्या सप्त मेन्न तो शाल्य ने क्तो स्तन्ति जा त्त्रीयं ५ ॥ रव्यं शकी यत्र दिन्तं म्यादं क संख्या सप्त मेन्न तो शाल्य मेन क्तो स्तन्ति जा त्त्रीयं व ने वोधनीयाः सुधिया वशिषाः ॥ आव्या ख्या ॥ रव्यं सक्तं प्राव्हा ने निवे श्यम गास्ये चिद्दं विर्द्य पण्टवा र भी एका ज घा हि को परिस्थं तदे वे स्पन्न संक्रत्वा गण के न एता हे तो का य भसित्तं गवत्ते त्वा धनीयाः सित्र ना सार ते परिस्थं तदे वे स्पन्न संक्रत्वा गण के न एता हे तो का मे ससित्तं गवत्ते वे विषय पण्टा प् नी यदं का परिस्थं तदे वे स्तन संक्रत्वा गण के न एता हता का मं ससित्तं गवत्ते रिवर्य पण्टवा र भी प्रका ज घा हि का परिस्थं तदे वे स्तरा हा स्तरि आ वत्र ति स्त्रा का संतर्भ स्वर्य पण्टवा र स्वी तो ना वा यदं का मा गाः श्रत्व तः सर्वी स्तरां झा स्वति या हो नि का का यं भ्भ शेषः तरामधार् तोम्त सितिमार्नेथवर्र्वा स्तरीत्यासुधियादिएवा अवाराए उन्द्रती ग्रावे।धनीयाः भअष्यरात्री नस्त्वविक्रेन्त्रतां शेभोगवि रेषघटिका मयनं ॥विक्रेन्ततां रोगपगते एभासेरत्यं शकेते द्रस्त जेस्यितेच ॥ चिन्द् द्यांतर्गत शेषनाडी पत्तादि र्द्वापर रात्रिजागे ॥ ९॥ व्यात्या॥ रात्रोजुजा येग इष्टेन सत्रे विद्वेर्त्रच्याः प्रतीच्यावाये उन्द्रतां ग्राः प्राप्यंति रेष्ठुन्ततवरुय स्थितेषु विक्रेन्त्रतां शेख विक्र सत्र मुखेस्र्यां रेदे. स्तरु नस्थे प्रास्तु नस्थेच र्र्त्वापर रात्रिजागे ॥ ९॥ व्यात्या॥ रात्रोजुजा येग सत्र मुखेस्र्या रेदे. स्तरु नस्थे प्रास्तु नस्थेच र्य्वाप्र रात्रिभागे क्रमात्मक स्वित्वि स्ट्र्या तरगत शेख वंच नारिपता दिस्तरं स्थानः " अपराग्ने जिय होगन्यनमाद्द्रणत्व स्व मुखिनिवि ऐप्राग्रम्ज गंसायन मेतिस्त्रया ९ व्यात्या श्वी एत्व सत्त संव्या तदा बहोरा निष्टि स्वराय र भा त्रेत्रेव को स्तत्र शेख विद्वनसत्त्र 9 खिनिवि ऐ र्द्वरात्रेच परात्रेच प्राप्यू जगं साय नंस्त्र मेति त्रचातरन्त किर्म्ह्यातो सित्वनहता हो स्थिति वरे स्वर्त्वा स्थात्रिय प्रात्रे प्राप्यू जगं साय नंस्त्र मेति त्या तरन्त किर्म्ह्याती सित्वनहता हो स्तरीत्य दिर्ध स्वर्या श्वे प्राप्त्र जग्न का रेग वर्या दर्या तरन्त स्रि स्थितो सित्वनहता हो गाभवतीत्य थे। अवधा श्विगते छ प्राप्त्र मात्व स्वर्या ति न्द्रास्य क्री स्वर्य स्था न्य के स्थतो सित्वनहता हो या भवतीत्य र्थः अवधा श्वि गते राज्य क्या त्या त्य न्या स्त्र का त्या न्यन्त्र स्तर्या वाह्य के स्थती के का स्था र ये गतना दिरा छ निवे उपने चान्य त्यक्ता ति ता स्वर्या ती

तिकासु अत्रत्रमगास्येतिवैश्तितत्र क्रिंग्रियत्र स्थितास्वकीयात्राच्यप्रतीचाँगु अवार्स्वापार्क त्र पार्षं स्थित नस्त्रकां ता उन्ततां रगाउटन भवति रोषः ॥ अत्र्यदिवरा विघटिका भ्यातं जा नयनमा रू प्रागतन क्र त्रोपगते की गांग के तेमगास्ये गतना ठिका स्थिते व्यतस्य प्रान्धे रोगा क्र त्रोपगते की गांग के तेमगास्य गतना ठिका स्थिते व्यतस्य गिर्मा क्र जगः सायनछाग्रतभागः र्रेट्विसेस् या रेग्रा दिस्ति ने प्रापते म्यान्धे किते ने ते तो ना ठिका स्व तस्मिन्द्र म्यास्य स्थिते सति प्राद्ध स्थिते ने प्रायते म्यान्धे कित्र ने ते तो ना ठिका स्व तस्मिन्द्र म्यास्य स्थिते सति प्राद्ध स्थिते ने प्रायते म्यान्धे कित्ति ने गत्र न स्थते दर्श्वा रेग्रा स्थिति सति प्राद्ध स्थित ने गत्र यहा प्राप्ते न्या राष्ट्र स्थिति स्त्री के प्रायत्व स्थित स्थिते दर्श्वा रेग्रा स्थिति सति प्राद्ध स्थित ने ति ग्रा राष्ट्र स्थिते मान्धे ने गत्र स्थते दर्श्वा रेग्रा स्थिति स्वित्र विद्व स्थित्व ति ति प्रायत्व सुख्य साय मे गर्झा सित्त नि गतः स्थते दर्श्वा रेग्रा स्थिति स्वित्र स्था रेग्रा दि सित्त ने गत्र यहा प्रति ने गति ने गत्र स्थते स्त्र मागा स्वि ग्रिण्व के यहा राग्रा खत्र स्व ने प्रायत्व सुख्य साय मे गर्झा सित्त नि गतः स्थिति स्त्र स्वात्र स्वत्त ने गाः खत्रे पत्र के प्रचति प्रायत्व सुख्य स्थात्र स्थित्र गत्र स्थात्वा ॥ इष्टे नात्कालि के लित्न प्र्व के प्रचति स्वत्त क्री तर्एति एप समकाल संभवतः प्राक्त स्वर्य स्वति नः स्थ्र अवे प्रति । जन्जी व सतुए याप्तादनमा ह ॥ आं के राह्य ति स्वत्र प्राग्र स्वतिनः स्थ्र अवे प्रति ॥ जन्जी व सतुए याप्तादनमा ह ॥ आं के राह्य ताग्र त्य स्व यं ३६ मध्येगे: नैभनभर्म नावो॥ ६तुर्यदोरात्म्प्रिासप्रमां रो रदमध्यगा वे व शिवार्मसंखेग ९३ व्याख्या ॥स्यत्रनागे तात्का तिवं संप्रता रावो ६० ९९ हो राय जिनव मे काद रा रेग प्रतिस्य व्याख्या ॥स्यत्रनागे तात्का तिवं संप्रता रावो ६० ९९ हो राय जिनव मे काद रा रेग प्रतिस्य त्या प्रभाग स्प्रेस तिरव मध्य गो पाम्परे विापरि गतो ऊमान्त्रे धन भर्म भो वो भवतः स्प्राम्प्रां रेन स्थितः सप्नमः ति क्रम्ते देग जिनव मे कार शहो रावस्य वा अगस्ते सः तिरव मध्य गो याम्परे रेवा परि श्रितः सप्नमः ति करने देगः जिनव मे कार शहो रावस्य वा अगस्ते सः तिरव मध्य गो याम्परे रेवा परि श्रितः सप्नमः ति करने देगे राजने के कार शहो रावस्य वा अगस्ते सः तिरव मध्य गो याम्परे रेवा परि श्रितः सप्नमः ति कर्मा रेग के कार शहो रे व व राजा रम्भ मांगा याम्परे रेवा परि गतः इति यच वुर्य द्रोगा प्रांत्रे रेवा स्पर्धा देवा व्या प्रयाण्य वे राजा रम्भ माये गो याम्परे रेवा परि भये रेग स्वजाव वुष्य या प्रार्त्न माह्य हरा दिना वार सरा शि अत्य राजने मे कात्मा स्प्रमाः स्प्र संयोज्य जा कहित्य या प्रार्थन माह्य हरा द्वादि त्यं व संग्रित्त का स्था श्र कार्य स्वर्य कार्य संयोज्य कार्य सम्प्रीप स्थितं तदर्ध विदितं च संग्रीः २४ व्याख्या ॥ श्रेष्टमनव मे काद हारा शॉजावात्म राण्य कत्ता राशि यद्व कं छक्ता दि नाझा वान्स समाः स्कर्च वे युः ॥ यया प्रत व मे कार्य संवर प्रात्न का गारिय यद्व सं छक्ता राजा कार्या नाज्य रोया रक्ता यत्ति। यत्ति घर्या यद्व प्राय् स्था ना का अवे छः गल्का का पर्यात्व निष्य च प्रत्य रेव द्व यत्या भाव संघ्याः स्वाण्य दे ज्ञा स्वार्य स्व राष्य राक्ता ते प्रात्व मात्र च राव्य स्था गा ना कार्य स्था य रेवा रहा का ज्य रेवा य रहा स्था स्वार्य संघ स्वा

वाखात्

देदाति ॥तणामएवन्नद्देत्रःसंधे हर्ना शकः सम्रतीतभावस्प एतदा रसंधेरद्भिजां राष्य्र आगामीमावस्प फलदायोभवति भया प्रियरस्पसे पर सवा सान्यूना धिकस्प विशेषका घेषाला न्यनमा हा। न्यूना धिकत्व विधिरे दवकार्यः खेटां रातं ध्यं तरजात रेग्धे हत्वा नर्विभादन संधि जां रां तरे ए ल के प्राप्त भ्यत्व त्य तस्मार्थिधा नाव्य स्वर्ण स्वर्ण स्वान्य रेथे हत्वा नर्विभादन संधि जां रां तरे ए ल के प्राप्त मियत्व प् तस्मार्थिधा नाव्य संवर्ण स्वान्य रेथे हत्वा नर्विभादन संधि जां रां तरे ए ल के प्राप्त मियत्व प् तस्मार्थिधा नाव्य संवरत्य नही स्वान्य प्रि दर्धमानं इदंतदा धार्थ ति चयदे स्वान्य त्यान्य त्या प्र तस्मार्थिधा नाव्य संवर्ण स्वान्य संघ स्वान्य के स्वान्य वे प्राप्त संघ मान्य नाव्य के प्राप्त त्य स्वान्य त्या प्र रेथा प्राप्त विद्य के के त्व संच के आपना प्रेय दिने मध्य के स्वाय ने प्राप्त त्यान्य त्या क्या प्राप्त के स्वान्य संघ के प्राप्त कररे रेवापरिविकेक ते तदनुच के आपना प्रेय दिने मध्य के स्वान्य के प्राप्त स्वान्य त्यान्य त्यान्य त्य के स्वा करिः कार्यः कोर्थः रेवेट संध्य तर्याः पाते के उपरिमेधरा री ईर राग्य स्वान्य नाभ्य क्यान्य स्वान्य ति संधे सका साइस्स्य न्यू नाधिक त्व ए य विधिः कार्यः कोर्थः र्वेट संध्यं तर्याः पाते के ते यही यंतन्य रवा विद्य लगा हत्वा भाव त्र स्वान्य त्य स्वान्य का विधिः कार्यः कोर्थः रेवट संध्यं तर्याः पाते के ते यही यंतन्य रवां विद्य त्या हत्या भ्य यहा तरे ए भ को यत्य तंत्र वति नहु रस्याध्य क्यि के का शेर्यमान वर्ध मान ने दाझावक्यां भ्य के हर्य क्राय हे स्वात्य प्राय का त्या का त्या का क्या क्या क्या का स्वान्य क्या का त्या का स्वान्य का का या वति ग्या य या की स्वार्य के साहा हे ज का रोगे रावाया त्य स्वर्य स्वर्य सत्तानमाह य आया तरे रेवा साध्य गात्र स्वाक्य का ना वति ग्या य या की स्वार के साह रेय का का रोगे रोगा स्वान्य संय स्व संचान साह स्वान्य का स्वाक्य का स्वान्य संक्य का स्वान्य स्वान्य का संक्या स्वान्य का साह स्वान्य का ना ज्या का साह स्वान्य का स्वान्य का स्वान्य का स्वान्य का स्वान्य संक् का ना स्वर का का साह स्वान्य संक्य संक्या स्वान्य का साह स्वान्य का ना स्वान्य का स्वान्य का साह का साह का साह का साह का साह स्वान्य का साह स्वान्य का साह स्वान्य का साह का साह का साह सात्य का साह स्य का साह का

नतोंकतन्नाक्तनतां इकिषुम्प्रसामगास्ये निहितेन्घसं प्राच्येक्रजेसर्व नचः स्करःस्पाघे येखवेटेखणि र्भुः यः सः चेत्रक्षमेव १९ व्याखा॥ यंत्रस्प अमंग्रेलेरस आगजा तेष्ठं रात्र मिते आर्यतरे रेवन्नाचि कु जिधत्वानगासे स्यानहयाचिन्ह हयं कत्वातदंतरभागान्य द्रिव्हिभन्य संख्यं रगः बडुणाः कार्याः गतान्त्र गात्ये गि न्तात्र स्पान्ये युम्णानयने अन्धर्स्वनिवेशिने सतित्रानु जैसे गिरानः स्प्ररोभवति र पमन्प्रसपि विदेष्ठ दि तनीचंग्रेत्रपादभन्तोन्त्रतव्तनभ्यगतोन्त्रतांडास्यानमानार्यनाः । बडुन्नतांझेखरदेतयातरे रव्यंसमध्यास्पम्गेकिते दिः धड्रिदिचिरूस्यलवान्विभन्प्लवेषभागेष्ठक्रतेष्ठवेषः २९ एवीन्त्ररा त्यां राधतमगास्ये प्रत्वनते रात्वभागयेषपं स्थानं भवत्यन्त्रतभागकर्भि मेवं विधेयं निष्टित्वान भानां २९७व्य ग्या अत्तां शपने बरुमतां रोख आरविते संदी शांनिवे रपमगा स्पंल्यान हये पि चिदि तेसति तरंतस्थानं भान्यद्वित्रिज्य सब्यां लच्चां रेखुबीमास्यापिते घ्रप्रागुक्त तियाम गम्र विशेखस्था पितेशत्मन्त्रतां ईं रव्यंसयीग्पमन्त्रतां झानां स्थानेभवति एवमन्येयां मापे यहारणम् नतां आः समाने माः केर्ष्यं यथारव्यं शमुत्रतां कृतानमक्तं तथानस्यच जुनः तडनतां इत्तानमक्तं "अपत्ये कर्म

, यत्र एय तग्तन , त्रेल, तांश्राः, तपाहः, ततीयहीरांतगतेर्वभागे या मेग्निमेग्रास्तु जगवित a नं गत्रोभवेडननतवत्तमध्येश्वस्यंश्विश्वान्त्रमागकाष्त्र २२ एवं बरंकातिमहोरिकामुन्यलेईभा ग ग्रमरोययामाः लग्नानिधिसोन्ततभागकाष्ठ्रविवेचंनीयागणंके खढापा २३ ग्रायरात्रात स्कृजेर्बनागं निवेरपमवरमविविद्रेक्रता अत्रपत्रस्य हो गवलपानां मध्वेतनी यहोरांत्रातेरकीमांगेस्याणितेखन्ताम्णास्वेचिन्तितहयांतेकालवत्तेघटीपतात्मक्रंज्ञ माल यमयामेजवति तथेवसैकालंत्राष्ट्रने लग्तंभागायंत्यात् उन्ततवतपम्धेधष्टप्रवंचेंग ल ताउन्त्रतभागान्त्रपिष्ठःण एवंयस्तम कर्रा होरो भौरवां रोज मे एतस्यापिते शेययामन्त्र ये लग्तानिनद्त्राणांमुन्नतभागतास्त्रगणनेमुधियाविचार्याः ॥अप्रयस्पष्टीकर्णमाह् ॥ भधोदिनो शास्त्रपतस्य विध्ये त्तेभध्यरेखेंगेरविन्द्रनीयाः सम्प्रक्तदूर्ध ग्यतमां श्रकेष्यं समायनार्कस्य तदास्य हःस्यात् २४ ज्यात्वा ॥ वेमध्यान्त् संवधितर्रन्ततां रगन्यं चेण

¢'

Ť

भवी भ्वामध्याक्ररेरेवापरि तस्रक्षितेः वतां रेखिन्दे क्रतेनवक्रेभाम्यमा गिथाराशिनागस्तत्रनि विशति नस्मिन्दिनेतदंशेः सायनार्कस्यस्फ्र रोन्नवति॥ अयधिष्ठ शेखग्रदाणां स्वष्टीकर्र्शमाह्ण रात्रे स्वमध्य न्या स्वितनग्रदाणां परोन्त्रतां राज्यध्य चिहूनाई शिमध्यस्य रेखापरिनां शकार्यस्तत्र स्थिता स्नेनि विलाः स्वतनग्रदाणां परोन्त्रतां राज्यध्य चिहूनाई शिमध्यस्य रेखापरिनां शकार्यस्तत्र स्थिता स्नेनि विलाः स्वतनग्रदाणां परोन्त्रतां राज्यध्य चिहूनाई शिमध्यस्य रेखापरिनां शकार्यस्तत्र स्थिता स्नेनि विलाः स्वतनग्रदाणां परोन्त्रतां राज्यध्य चिहूनाई शिमध्यस्य रेखापरिनां शकार्यस्व स्थिता स्नेनि विलाः स्कृतास्यः २५ गव्याखा॥ रात्रिसमय आकासमध्यस्थितनत्तच्ययदाएणं परोनतां शान्यं त्रेणविश्वाद्य नां न्त्रतवर्जयत त्र शमि झेखमध्यरेखोपरिग्वनिहतेखन्द्व के आमिते अन्देविल्यापिते न स्वचां शे राश्यं व नां न्त्रतवर्जयत त्र शमि झेखमध्यरेखोपरिग्वनिहतेखन्द्व के आमिते अन्देविल्यापिते न स्वचां के राश्यं व नां न्त्रतवर्जयत त्र शमि झेखमध्यरे का परिग्वनिहतेखन्द्व के आमिति अन्देविल्यापितं न स्वचां के राश्यं व ता

10 2

> शेच स्यापिता यद्भिगः स्प्रराजवाति "अत्रोदाहर्री" स्परी क्रतंविव के स्तेषं "अत्रयम कारांत रे ए एका लेन स्तेनतां रे भोगेंगादिपंच सार्थ कर रो " राजाव भी ए प्रदेश स्व यो फर हा तो न्त्र ता शान जन्म ग संस्थे " जास्वे अहा सान्द्र त भाग में शः स्क्र हो ज वे त्र स्प नदा रव ग स्य " र स्वारका " र नमां हर्ष यदस्पन सत्र स्प चान्द्र तो रा प्रतात्वा भम विनि जे तरं रे ख स्था पिते ख सां तर् लब्दे छ र दी पर के हा स्व ने ख यहो न्द्र तो रा ख ये रा रिपि भाग उप विद्य ति के तरं रे ख स्था पिते ख सां तरं लब्दे छ र दी पर के हा स्व ते ख यहो न्द्र तो रा ख ये रा रिपि भाग उप विद्य ति के र्य दरः सायन स्फ्र हो जब ति । अत्रे रा हर रा ज स्व र स्व मच्चमचे ए जो रिपि भाग रे रा रे रे रे रे रे ज स्व का ज स्व ति । अत्रे रा हर रा ज स्व त्य र स्व मच्चमचे ए जो रिपि भाग रे रे रे रे रे रे रे रे ज स्व कि । अत्रे रा र स्व र र स्व मच्चमचे ए जो रिपि माग्र रो रा दे रे रे रे रे ज ने त्य स्व र स्व म स्व स्व र म स्व र स्व र र स्व का ल

मपरकौषिभोमनतां भा २० व्यंचित्रा न स्वत्र्वे कि गो न तां भानां उपरिम कि रेड स्वतंत्रे गिठे परिस स्वरणणे इंसर्ग्वः तता साने भोम पिंदरा से देशमोराः १० साथनावर्तत ते तो अयमदीनः २१२६१० का की टेन न व त्रिः एवं सर्वे व्रदाः समानि गां., ॥ अप्रध्र द्र्य अफ्रान्यनं ॥ प्रसाध्यते का स वर्गेगतें वेन्स्प ख्युद्ध स्वार्द्धतर् न तदंतरं यत् ॥ अड्डिर्द्वते प्र देशमोर्ग्वा र्युद्ध स्वार्ग्वा मियने वा स्वार्ग्या ॥ मते अभिक्र का स्वतं र् तदंतरं यत् ॥ अड्डिर्द्वते प्र देशमोर्ग्वा र्युद्ध स्वार्ग्वा मियने वा स्वार्ग्या मते अभिक्र का स्वर्ग्व प्रविष्ठद गंते चत्र्व्य प्रदेश्व यदि यद्ध स्वर्ण्य विष्ठते न द्वार्य्या ॥ मते अभिक्र का संवर्ग्व प्रविष्ठद गंते चत्र्य प्रदेश्व यदि यद्ध स्वर्ण्य विष्ठते न द्वार्य्या ॥ मते अभिक्र का संवर्ग्य प्रयंत्र भाव के प्रवित्र प्रदेश्व यदि यद्ध स्वर्ण्य विष्ठते न द्वार्य्या ॥ मते अभिक्र का संवर्ण प्रयंत्र भाव के प्रवित्र प्रदेश्व यदि यद्ध स्वर्ण्य विष्ठते न द्वार्या ॥ संवत्र १४ २५ प्रयम्न ये ए छत्त्र प्रयंत्र भाव ति स्वर्ग्व ४२ दिन घटो प्रते ६ सम्य स्वर्ग्व देश्व र १७ त्र प्रयम्न ये ए छत्त्र प्रयंत्र न त्वर्गत्र स्वर्थ र दिन घटो प्रते ६ सम्य सम्प्र होत्र र ०१०२९७ र सेः संवर्ण्य नातं द्वार्य न भ प्रयोग्व चीन्त्र तं हा रवे ४२ दिन घटो प्रयत्र १ सम्प्र स्वर्गत्र न ००२४। २९ रवेः संवर्ण्य नातं २०१४ द त्र अप्रयाग्व २२, २५ अप्रेति २४, २५ स्वर्गता वर्ग्य र ००२४। २९ रवेः संवर्ण्य नातं द्व स्वर्गा र दे खुर्ह्ता स्वर्य र व्यार्य स्वर्य स्वर्ण स्वात्र र ००२४। २९ रवेः संवर्ण्य नातं द्व स्वर्य त्र ये प्रयाय २२, २५ रवे वित्र २५ २२ सि स्वरीति व्यां २४, भाष्य र र्यात्र स्वर्ण स्वर्ण क्रात्र त्व स्वर्ग्य स्व म. २५ झ्रांतमध्यस्वणगतंचराधे अजंएदेधंत्रझका खरते तेम्युर्लवाः यउद्दताप्रानाञः २७ यथाययाता स कृतं निरसायरो वज्जे तत्रवराधिदक्ति एवंकुज्जे याम्पदिश्वां त्राम्गादिन्द्वत्र व्यदेशं ६ २८ चरेरेप्रिप् नणंम्पन उन्छन चिर्त्रात्रना धे फ्रेंच करित प्रमाणं ॥ निशापिता वस्त्र मित्रे स्थात्रो मेय्द्वादिर्द्वास्त्र ज्वाद्याम्पॅ ३९ चरेरेप्रिप नणंम्पन जगणन चिर्त्रात्रना धे फ्रेंच करित प्रमाणं ॥ निशापिता वस्त्र मित्रे स्थात्रो मेय्द्वादिर्द्वास्त्र ज्वाद्याम्पॅ ३९ चरो ध्व मुगमा ॥ अप्रयदिनरात्रिमाना नयनं ॥ स्टर्था राक्षप्रावित्ते नियेरच मुलासतो मार्थ्यवित्ते कि ॥ जगयंतविक्तं प्रिंग दिनंस्पात् द्ये यास्त्र मिन्ना वद्यात्रि नियरिच मुलासतो मार्थ्याद्यके हि ॥ आयंतविक्तं प्रिंग दिनंस्पात् द्ये यास्त्र मिन्ना व्यत्ते प्रत्या परिवक्तां में म्यास्त्र मिन्ना भार्यत्र कि मिन्न तिजे चम्रका मरामुखेस्थान द्ये प्रापिते चिक्त स्ट्येच विदिते स्वी परविक्तं मित्र का खब्द स्ति दनगत प्रमा ए पटिकापतात्मतं स्वति नये चार्थस्थतं देये यिदिते स्वी परविक्तं मित्र का खायना प्राणनयनं ॥ यं त्रेर्द्वमध्यान्दन स्वति नये चार्थस्थतं देये य विदिते स्वी परविक्तं न्यत्व साखा व्यक्ते स्वान्य का प्राणनयनं ॥ त्रयतां स्वान्दन ना गक्तं न्यति नेये चार्यस्थतं देये य विदिते स्वात्य स्वायत्व साध्य त्यत्त स्वान्य क्रीत्य चे प्राण स्त्रयतां स्वान्ध्वान्य का मिद्रे पति ने मेयित्ता प्राप्ति का से क्यात्व क्रियति संपाय हाक्रते उन्यर्यापि र्श्वयत्व गाग्धं तदेवतत्र देशे आयनां स्वान्य क्यात्वा अविद्यान्य का प्रियत्त्र मि

নতা

 श्री ई फिलंवासरना 13 काय्री मंदाफ तस्पादधिको ई करस्प भर्णा घ्रस्य देशने शनुव एवग म्यंद्र तिस्ताः प्र्याप्य महत्रहल नयीः सएव ३३ र्ष्या प्रव स्वयं त्रोन्त्र गंधान् तरंदिधाप एक गर्णाव क्राव क्रयोर्ग तंतरंग्वं भनेत्र विभिन्न गर्त्या प्रच गति योगेनदरेत् ॥ इछं तखा (देना घं भवति ॥ इद्य मैव मंदन्न हाफ़ा प्रग्रेहे धिको के सात्र प्रम्यं वेदितव्यं अनयो मंदर्शा घ्रयोर्धु तिका सः सएव ॥ अज्ञोदा हर एंग ॥ संव स् २७३७ यो छ कर २२ भी मे साय मस्फुटेगु हरं २१ २९ १९४७ यो धु तिका सः सएव ॥ अज्ञोदा हर एंग ॥ संव स् २७३७ यो छ कर २९ भी मे साय मस्फुटेगु हरं २१ २९ १९४७ युक्त २१ २० ७ २७ २० २० २० १० २० १० २७ २७ दिसा जित्त्र प्रि श्रिमा प्रविश्व १९४७ यो छ कर २९ भी मे साय मस्फुटेगु हरं २१ २० १९४७ युक्त २० २० २० २० २० २० २० २० २० २० दिसा जित्त्र देश हर प्राय यघटी २१ २० सम ये छ कर्षा प्रयद स्वोम्त्र त्रां झाः झाच्याः २५ एत सिमच्छा थे स्त्रीति त्तर एत छिल् विभिन्द क्रये थि भी यघटी २१ २० सम ये छ कर्षा प्रयद स्वोम्त्र त्रां झाः झाच्याः २५ एत सिमच्छा थे रेग ति सात्र त्रा छाः यघटी २१ २० सम ये छ कर्षा प्रयद स्वोम्त्र त्रां झाः झाच्याः ३५ एत सिमच्छा थे स्वति स्वा राखाः ३७२० अन्व मर्दर्श प्राय स्वर्ग प्रय देश्ता इत्र त्वा स्वा अग्रेय दिव से छुछ इवा सरेदिन गता घटी २० अत्रव मंदर्ग प्रस्य देशनां इत्वत्वा देखा छाः १ रता वता अग्रेय यदि व से छछ इवा सरेदिन गता घटी २० अत्रल पत्त समये छ क्र प्रायतिमान वर्वस्य आगा नीवर्ध स्वर्म्य प्रत्विक्त जे भी प्रित वर्दत पत्त समये छक्त ग्रोधातित्व तो इत्र स्व आज्या नीवर्य स्वर्म्य स्व विक्ते जे भी प्रित वर्दत पत्त स्तर्भ समये छक्त प्रायतिमान तत्रा इत्र क्या जा नीवर्य स्व प्र्य स्व सित्र स्वर्ग देश्व त्या १ इत्विक्त अग्रे प्रियत्वा त्रो इत्र क्या क्या वर्त्य अग्र्य वत्र प्रति स्वर्य अग्रियत्व स्व य्वा अग्र्य स्व यित्र स्वरेत्र देश्व क्या स्व अतिमन्म करावन रते सतिभा दिवर्थ स्त्र में द्व स्त्य व्या अग्र्य वत्व प्र यो क्या हा स्वर्व र अर्थ सायन अत्या भ इत्विक्त अग्रि सित्र स्त्र ति देश्व स्त्र मे ज्या त्य अग्र्य दा स्त्र या त्य त्य २० २३ दे खा अत्रिन्य स्वत्य स्वर स्वत्र या त्यों इत्र क्या स्वर्य स्वर्य स्वर्य त्या व्या स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्त्य -प्रहतमति ' व्योहर्ज

मेयसंज्ञांतिटिने सायनोर्कः २२१२९१७ एवंघटीपलाग्ने २७३२० संज्रमका नः गतदात सापनं यं ४० तात लग्नेनहर्षमंच्यते भारगर्धन्त्रसात्तदग्रमवर्षसंवत् १४३५ सायनं लग्नमानीयते । लग्ना से भारत्त्रा नेवमंक्रांतिदिने भिष्के क कडोग्ने दिने मकरानने एकटी कितिलग्ने चिन्हे क्रते तदा ये बन्हिनंद मिते धके खुर (णतेख) १. भामतानामुपरि मकरमुखि समानी यते र्श्वज्जि श्रीष्ठवर्षस्पसायनंधनुनी ममुप विष्टं दा १०१५५१२२ तदागामी वर्षतग्रं रोयं " एवंसवीएपपि समानेत ज्यानि "अपदेशांतरसंस्कारए स्डल्जनानय नंग तनाध्यरेखाक्तररणंभनस्याँ दिएवीपरदिं नागेतत्र स्थितेत्राक् सितिनेविभागे कुंचीतवि মন্ত্র न्द्रमकराननामे २४ पश्चापुरश्चास्यस्टरोधनेचतर्द्धमानेनधतेम्गासे । प्रारम् जभागीष् पुरे विज्ञमंतदाहिदेरगंतरसंस्कर्तस्यान् २५ उग्मंवाखा॥सिधांनोत्कः विधिनायद्रव्यादीनां देशां सरंपलात्मकं मुक्तं तं लंबाती मेरू पंथतं गमध्य रेखाती जी प्रस्था मल्पनाकप् खसेन झ एप्य नेनवति अत्रयद्वेर्दे इंगतरं प्रतासं प्राप्तकं आगतंतन्त्र स्थापितदेव रोयंग नतः प्रार्के तेषू भागे लग्ना शेम्पितेसति मकरमुखं चिन्द्रनीपं गतनोयदि रों देर्पातर मणंभागतं मवति तदारविदेश्गंतरमानेनपष्ट्रासिन्हेकार्ये । धनं चेखरताष्त्र्वन्हे कार्ये ॥ एवम भये भये ग यग स्प

कत्रमगाननेधतेमनिप्रासुजेदशांतरमं स्नत्नभिषपुरस्पविलगंभवति॥ श्रघनस्त्रारणमोम्प पम्पर्कातित्तानंमध्याक् रेखापरित्रस्पवक्रं कटी। मिश्रांतरगं पदिस्पात् लाम्यातदाक्रांतीरदंव मेयमगौतरं सांघदिशत्त्र एस्यात् २९ व्याखा॥यत्रस्पमध्याक्ररेवोप्रि अचेत्रं न सत्रचे अपत्वावि ले. किनीयं गयदित के की मांतर स्थ त्यानदान सर्ज त्य लोम्यां को निःस्पात् गया द मेव मगंत ति कि जान मन्द्र कि जान कि जाय के जाय के लियतानां सार्यन्य हो रात्री में जात्र के जात्र क त्तांश्रगरग्गदनीष्टां त्रों विंशग्तस्पविधिंद्रवीमि॥ रनग्तंचतत्रीन्ततभागकेभ्यः भाग्वततः क्य मध्य उला ३ तिंपरापमेना ममिता राषा दिम्राननां कपुरतः प्रदेयं साम्यापने यंत्रमवा स्थागत् ३८ न्यून्या धिके त्रीएफ लांशके तरिश स्त्रजं माक् कुंगं वित्रमं । याम्येपमेव्यत्य यत् : समस्त मिरंवि सार्थ गगग को तमेन ३९॥ त्रितिरोधकं ॥ व्याखा॥ यंत्र स्थितात्तां द्रागरण धर्मा त्तां द्वीलेन्त्रमाया नितयाब्वी मितत्र लग्तं प्रण्वदुन्नतां रोभ्पः समानी यमगानेने चिन्हे का स्वास्थाप्यं धनते। समान लोम्य पाम्पः जांसानयनं इयं कांतिरत्तां क्रयारंतरेष उरणा को भी यत्र स्थितात्तां क्रांतर्द्धे न

र्ष्ट्सां शानाभंतरे एए स्नात् ततः परापमेन परमद्यां त्याभाज्या च गतः प्राप्त मं शादि प्रतं मरगान नान् भाक परत प्रवदे यं की र्युः यत्र भागानी तलग्तं भवति गतन्ति जिन्द्रि त्या प्रति का प्रिंग एवं क्र ते साम्पापमे मेा म्प को ति पं दा त्रान्त्यूना धिके र छा सो प्रेग मानना स्वरू एस त्या विन्हं का प्रीग एवं क्र ते सति प्रास्तु के स्वयन प्रपित्र पति तदि छा सो प्रेग में गत्र प्रे प्रत्य विन्हं का प्रीग एवं क्र ते सति प्रास्तु के स्वयन प्रपित्र ति तदि छा सो प्रेग में गत्र ने प्रे प्रिति कि मेन विद्या प्रीग्न्य ने प्रति त्य कि स्वा स्वा प् स्वित्र त्या सामन्द्र भाष्य के प्रत्य के प्रति कि प्रेग में निर्देश में निर्देश के प्रिंग में विद्या प्रीग्न्य ने प्रति कि स्वा सामं स्वा के स्वा स्वा के स्वा स्वा के प्रति राज्य के कि स्वा सामन्द्र के प्रिति राज्य के प्रति कि स्वा सामन्द्र के स्वा सामं स्वा के स्वा सामन्द्र के स्वा सामन्द्र के प्रति राज्य के स्वा स्वा स्वा स्वर्ण के क्र स्वा स्वा सामन्द्र के स्वा सामन्द्र के स्वा सामन्द्र के स्वा सामन्द्र के कि स्वा सामन्द्र के कि स्वा सामन्द्र के स्वा सामन्द्र का सामन्द्र स्व स्व ति राज के स्वा क्ष के कि स्वा सामन्द्र के स्वर सामन्द्र के स्वा सामन्द्र के स्वा स्वा सामन्द्र के स्वा सामन्द्र के कि नि बिर्ल्य स्वर स्वर्य स्व सिन्ह्य के सामन्द्र के सामन्द्र के सामन्द्र के के नि बिर्ल्य स्वर स्वर स्वर सामन्द्र के स्वर स्व स्वा स्वा के स्वर के स्वर के स्वर के सामन्द्र के कि सिंह सामन्द्र के सामन्द्र सामन्द्र के सामन्द्र के स्वर स्वर के सामन्द्र के स्वर सामन्द्र के सामन्द्र के स्वर स्व स्वा स्वा स्वा स्वा स्वा स्वा के स्वर के सामन्द्र के सामन्द्र के साम्य के स्वर के स्वर के स्वर के सामन्द्र के साम्य के स्वर के साम्य के स्व स्व के साम्य के सामन्द्र के साम्य के सामन्द्र के साम्य के सामन्द्र के सामन्द्र के सामन्द्र के सामन्द्र के साम्य के सामन्द्र के साम्य के साम्य के म साम्य के के सामन्द्र के सामन्द्र के सामन्द्र के सामन्द्र के सामन्द्र के साम्य के साम्य के सामन्द्र के साम्य के म क्व स्व स्व सामन्द्र के सामन्द्र के सामन्द्र की सामन्द्र के सामन्द्र के स्व साम्य के सामन्द्र के साम्य के साम्य कामन्द्र

1

यं ४२ मन्द्रहिराणिभगोभ्छदंभवत्सायनकं तर्हर्त्तं ४० भुमदयत्योपरिभास्यदेशेध्दतंभवेयः खिउग्ण् भणाः॥तर्द्त्तां संवधवशेनतस्यस्या तं ऋमेणासुरयस्त त्वन्ने देशेध्दतंभवेयः खा॥यं झमध्या न्द्र रे दायांभास्यभागेन स्त्रमुखेप्रदे शेध्दतेसतिभर्म्र उत्तस्य योंश्रो ग्लिनझ्य छिभागे तदद्त्तं नत्तत्रं सुसंस्कृतं सायनर कर्मछ इं अवति ॥तच्चे द्वतस्त्रि नत्त्वच्च क्रेर्स्वापरभ्दने रे दे तापरिधते सति ॥ उत्तय द्रापिया प्रिणिभा गो स्त्र यते स्ति त्व स्वत्त्व नत्त्व नत्त्वच्च क्रेर्स्वापरभ्दने रे दे तापरिधते सति ॥ उत्तय द्रापिया प्रिणिभा गो स्वयति तर सं विधविन भरसन स्त्र त्वे प्र्यास्त्र व्याप्त्र स्वा रे त्व क्रमेणास्यातांभवतः ॥ श्रिघ यंत्रेण विधिन स्तन्न यो गान्य मं ॥ कु जेनिरसे रविं संद्र श्रव्यास्य स्वि स्वाध्वत्त त्व स्त्र यो प्रियो विखन्ता ७२ छमध्य रे त्वां करा रागंक स्वि स्त्रा तरेश्रित्वि स्त्र यो गान्य स्वा भ भक्ते ति य यो ति छन्ता ७२ छमध्य रे त्वां करा रागंक स्वि स्त्रा तरेश्रित्वि स्त्र यो गो रामाह ते त्वा त्रिम्न प्रति तक्तु गरोम् माद्यात्र स्त्रात्र स्याव्य क्वित्व ज्ञा तरेश्रित्वि स्व वियेग रामाह ते त्वा त्रिम् भ भक्ते ति य यो ति स्त्र स्त्र स्वा त्व त्व त्वा तरा तरेश्रित्व क्रें वियेग् रामाह ते त्वा त्रि स्त्र भ भक्ते ति य श्री झाद्र तं स्यात्ति व्योगा व्यं देश्व संत्र यो गो रामाह ते त्वा त्रि म्व भित्त क्वी या श्री झाद्र तं स्यात्ति व्योगा व्यं देश्व संत्र क्वी म्वा ये त्वा वियः व्य भित्त हत्वा श्री झाद्र तं स्व स्त्रा ॥ चंई कि द्व न्ती तरभक्त मेवं राख्योदिनायं सकले तिथे खः ४५ ए बाध्वती तेष्ठ भज्ञे त्य प्रहि हत्ते त्रिनिद्रें इत्व भक्ते गी दिता दि संयात्वित्व योग्य जे च बाधा हते स

र्थर्शकुमके ४० योगेनरामापहतेननके उद्यदिनायं फलमेव मेवंग नरहे भवेदोए पि के र्घयन्ते भ वेद्यान छेए छ संस्क्रमंतत् ४० रुषांव्याख्या। निरदे का जे गागपरेरेरवायां स्पएरवां चंड्रां रांचका छ दन्ते निवेष्प स्यानस्या प्रेम्गास्ये विरुद्ध त्रार्थे गएगना तुघु मर्ध्वरेरवाया रारत. बर्ट्स र्ट्या दिन्न इ मेए कार्या : ॥ चंड्रेस् एगनसतिकोर्घः ॥ रूर्धांसो निरद्दे भुने परिधते सतिमकराननं पत्रवगति तदंद प्राप्ति : ॥ चंड्रेस् एगनसतिकोर्घः ॥ रूर्धांसो निरद्दे भूने परिधते सतिमकराननं पत्रवगति तदंद प्राप्ति : ॥ चंड्रेस् एगनसतिकोर्घः ॥ रूर्धांसो निरद्दे भूने परिधते सतिमकराननं पत्रवगति तदंद प्राप्ति : ॥ चंड्रेस् एगनसतिकोर्घः ॥ रूर्धांसो निरद्दे भूने परिधते सतिमकराननं पत्रवगति तदंद प्राप्ति : ॥ चंड्रेस् एगने यो या या रार्ध्व प्राप्ति राज्य कार्या या रापते व्यात्म या त्या का पातां राण्य वश्व प्राप्ति : ॥ चंड्रेस् एगने : ॥ र्या चंड्रा रो गिराद्य प्राप्ता प्रायं प्राप्त राण्य वश्व प्राप्ति त्या रह्य यो प्राप्ते : ॥ र्या चंड्रा रो गिराद्य प्राप्ता प्राप्ते पद्वव्या छ कान्नतिपदादिगत विषयो ते ॥ पदिनपतंति तदा २६० थे ज्यपात्यं ते ॥ हाद दश भिर्तान्यं ते पद्वव्या छ कान्नतिपदादिगत विषयो मर्चाति ! अचनतत्त्वा मयनं गर्ध मध्य रिव्या रह्य जिर्भा नियंत्रे पद्वव्या छ कान्नतिपदादिगत किषयो त्राप्ता ज्वान्त्व ने स्था प्य प्यार्थ्या रिया ता श्रे के च त्वच्यमा प्यते न द्य त्यात्रिय न्यादिगतनतत्त्व ! एभवत्र सित्र या पिका निंश रात्त्व से प्यारिको म्यादिन यसमाधिका प्रात्त्र मे लावे ते स्ति तरा यत्व का निर्वा या दिया कि कान्त्रिंश निपात्पर्य : ! अपने च्यादी नांघटिन यममाह् ! गतं विर्छा तता ना रागत् कोर्घ ! ति यि सत्त्व पी गान यन सम ये तिघ्या दिन्ये छ घ छे घंतक्र मे एते खान्त्र १. लग्नं गएवं च क्रंची निरच भू नोपरिन्य लेमकामुखं काल स्त्रेपं चाशर धिक्यात्रयां शिष्ठ ३५० लग्नं एवं

मधिधीयते ॥तन्तिजभागहारा दिशे गिरमियामा एगिति ॥ तिष्यादि भांक्षमा कुत गम्यंभवाते ॥ षं ५२ तज्ञ तगम्यं वा यहप्राहतं रविचं इच क्तं रतरे एभज्यते एतस्मा लब्धां ति घर्टि ना घरिन घरी पता स कं रत्मर्व मपिञवति ॥ इति विधिः ॥ अप्यन स्तृत्रं ॥ एव्यति गम्ये अती ते गते भज्ञे न स्त्रे विद्या स्व स्ता गुरु गते ता 5 ते या चं इच क्या भक्ते माति ख्यां न स्त्र प्रियति गम्ये अती ते गते भज्ञे न स्त्रे बक्या गुरु गते ता 5 ते या चं इच क्या भक्ते माति ख्यां न स्त्र प्रायति गत्म्या त्र प्रात्ते का क्रिया चं इच क्या भि ख गते गज्ञे न्या यो गास्प्री म्प्ये मध्या हते स्त्री श्र प्रात्त न प्रताति यो गे न गमा पहुँन त्वच्यां दिना घं यो गस्प भवति एत दिनाघं कुने मे दयिके त्र दे एव चे घं स्रार्थतात्रि वे तुत्र हे मिल्रो ए संक्रतं का ये गतं विश्लो ध्या या न जा क्रा म्यां क्रिके वि से जये दित्या दिना संस्क्रतं का र्थ गत्म वि म्यान्य क्ते या क्रि क्यां न स्त्र न का ये गतं विश्लो ध्या नस्त्र प्रारह नाघं कुने मे दिवि ते त्र दे एव चे घं स्त्रार्थतात्रि वे तुत्र हे मिल्रो ए संक्रतं का ये गतं विश्लो ध्यान प्रिके प्रात्ति व वे जि ये दित्या दिना संस्क्रतं का र्थ गित्प्या तिष्या न यने उ हा हत्या संव राष्णते नार्था विष्ठिति ये जिये दित्या दिना संस्क्रतं का र्थ ग्वा विष्या न यने उ हर हरा प्रात्ति स्त्रात्र राष्णते नार्था का न्यु क्ति प्रचार र र्थ राष्ट्र के त्या के ति रत्त पूजो परिप्रे साति मकारा न न काल व त्ते रिवातः भवरे न्या स्वर्भ

गणातेमध्यमन् भारतिप्रधान् वद्र राष्ट्र राष्ट्र विद्याति दियायता नरस्मे जापार प्रसान मकरा ननकाल वैत्त वातः मध्य समयेसाधिते तर् तेन देशां मंत्रे सिछा चितुण्वत्वा रिष्टादधिक प्रातत्र येंछि यु ३४४। ध्रूल जे ये देर्या द्याः ३४४ । ७३ चे ईप्रोम्प ३५५ पति ता वे चं कत्मना शास त्र मंतरे पा ७३ एवं दा एपा भिर्मन्तं लट्यां तिथि स्थाने प्रत्यं द्यां द्याः ३४४ । ७३ चे ईप्रोम्प ३५५ पति ता वे चं कत्मन शास त्र मंतरे पा ७३ एवं दा एपा भिर्मन्तं लट्यां तिथि स्थाने प्रत्यं द्यां या अप्र म वास्पा तिथिः प्रो यदिना दि कं त्वात् परानु वे धेन व ध्र १९ घटमावे पोत्त प्र कोरे एवं इं त्यातार्ग्वे प्र एवं व्याने प्रत्यं वित्ता भ्य त्या तिथिः प्रो यदिना दि कं त्वात् परानु वे धेन व ध्र १९ घटमावे पोत्त प्र कोरे एवं इं त्यातार्ग्वे प्र एवं दी भिर्मि वासा धित स्थ वा के प्रे वा साधि तरविं प्रणानिरे मनामा मुन्तं त्यात् परानु वे धेन व ध्र १९ घटमावे पोत्त प्र कोरे एवं इं त्यातार्ग्वे प्र एवं दी भिर्मि वासाधित सर्थ वा के प्रम त्यात् पराने व प्रकारे एक त्या त्य प्र प्रवे प्र कोरे प्र कोर्य का को प्र सार्थ को को प्र साधि तर्या तिर्था नरे प्र माने स्था मा मा म प्र कारे शरवि जाव कत्या त्यार्थ

הדעוניואהצאגיאר

फलक्रूरा७० एतॅग्रात-विशासभेद्र न मिश्रार्थ् ४४१ भट विशेधि ज्यातं चै तवध अमवास्या तिथिः रें न ति । भा एघटि २८ परा २८ एवं सर्वा त्रय्या ने तर्व अन रो अश्र यन स्तत्रानयने उदाहरएएं । निय्यानयने प्रत्ने ये चे दे दिश २८ एवं २० १२ र आनी तोः संति ने त्रि ग्रे राजा जा ताः १० १५ २७ ९ ते च त्या रिंगता ४० वि भक्त्य तव्यमः क्रिव्य विश्व त्या दी निगतन सत्रार्ग्या २६ रो यमस्ये वगतं २९ ९ ९ ततः ्ति एर्ष ६० ९ वन्त्री च एते दे -त्या २७ १९ २ 'विभज्य तव्य दिना दिवं प्रतं ० १९ १२ २ तजनि । वह्या तर्दिन मिश्रात् ४७ १९ दिये प्रे गे भक्त्या २७ १९ २ 'विभज्य तव्य दिना दिवं प्रतं ० १९ १२ २ तजनि । वह्या तर्दिन मिश्रात् ४७ १९ दिये प्रे गे भक्त्या २७ १९ २ 'विभज्य तव्य दिना दिवं प्रतं ० १९ १२ २ तजनि । वह्या तर्दिन मिश्रात् ४७ १९ दविये । भक्त्या २७ १९ २ 'विभज्य तव्य दिना दिवं प्रतं ० १९ १२ २ तजनि । वह्या तर्दिन मिश्रात् ४७ १९ दविये । भक्त्या २७ १९ २ 'विभज्य तव्य दिना दिवं प्रतं ० १९ १२ २ तजनि । वह्या तर्दिन मिश्रात् ४७ १९ दविये । भक्त्या २७ १९ २ 'विभज्य तव्य दिना दिवं प्रतं न दान्ते प्रे दे ९ प्रमा एं प्राप्त २७ १९ मद्दि दे । भक्त्या न दे 'विभज्य तव्य दिना दिवं प्रतं व्य प्रा २ चं द्रां ए १९ मि २९ प्रमा एं प्रा र्था भ्रव्य विये । या जातं चै त्र अप्रमा व्या नी ताः रव्य प्राः ३ ४४ १७ २ चं द्रां ए १९ म्ह्रे अधे गि गो दिर्ण १९ त्र त्र च को भान्य ने उद्य दिगा नि तो ताः रव्य प्राः ३ २४ १७ २ चं द्रा प्रा रा विश्व विय्व ति । क्राधिक त्यात् च क्रां शा अपास्य दे ग्रां रा २२ ९ एतन्त्रि उ पि नि प्रे प्रा विभक्ताः शान्न विद्यं भारयो गत यो गाः २५ अस्पित्व गतं ५१२ ९ एतन्त तरि न विष्य त्र प्रा दिन प्रि प्रा न द्वे न नद्व यो जी ने २६ २१ भे ज्य ते त्य दे न त्र दे मान्द्रे यो जन्त दर्भ्य ते त्य मित्रा प्रया व्य क्रा व १० २० २० २० तक्त दिन वस्यात्य तरि दिन प्रि प्रा व्य प्र द पाल्य जातं चे त्री अम्पाब प्या वी बुलनाम यो गो पाटे २० ३२ २ वर्त ते एव स्वत्र अप्यत दिने स्त्य रि एक्य जित्य त्य त्य दे न स्त्य रि एक्या तत्य त्य स्तात् चैत्री अमावस्याधविका १७ पत्ने ३५ उत्तराभा प्रपराघ विका १७ पत्न ३५ उत्तराभा प्रपदायविका २७ प यंत्रगज ७४ हो ३६ बाला योग धविका ३६ एतते ४७ जमाणि वित्ते निय्धं तरपतानि ७२ नत्त्र जांतरं प्रतानि ६२ योगो तर पत्त ५० घमाए। मासिस्न स्राग्तरत्वान्न देग्रः ११ एवं सर्वत्र त्रेयं ॥ अप्रयक्ष र्रण्य त्वरांक्षतः ॥ सप्तां गुल भंगे तर पत्त ५० घमाए। मासिस्न स्राग्तरत्वान्न देग्रः ११ एवं सर्वत्र त्रेयं ॥ अप्रयक्ष र्रण्य त्वरांक्षतः ॥ सप्तां गुल भंगे तर पत्त ५० घमाए। मासिस्न स्राग्तरत्वान्न देग्रः ११ एवं सर्वत्र त्रेयं ॥ अप्रयक्ष र्रण्य त्वरांक्षतः ॥ सप्तां गुल भंगे ते ध्रायानयनं ॥ त्रांवु जानाव मिन्दतार विभिद्धि नन्तरा जा मंतदन्त्र शक्त के प्रत्वाच्या ॥ स्राप्य वनन्त्र वतिसन्न न्वर्गते तत्व क्रंते । ध्रायाफल व्यास्या भाव त्या पत्ते विवर्झ २० व्यास्या ॥ स्राप्य वर्ग कोर्य व्याप्य स्तान्त प्राप्त स्राप्य पिर्य ये घर्ण्या १४ १९ सम्र गुला १९ १९ भावा दिकं छ्व्वे सर्य वर्ग कोर्य व्याप्य स्तान्त प्राप्त सिर्ण्य प्रिय ये घरण्या १४ १९ सम्र गुला १९ १९ भावा दिकं छ्व्वे सर्य कोर्य व्याप्य स्तान्य वनि अव्यात्र गां या ६२३ ९ एवं सर्वत्रापि ते प्रा श्व प्रत्र गि वत्त देश्व स्ता भ्यत्त स्त्र अत्ताधा मसां गुल त्रां के छिराया ६६३ ९ एवं सर्वत्रापि ते प्रे ॥ श्राय सप्तां गुल झां स्तरा नत्ता स्त्रां काः ध्रायां गुला घार्ण ते प्रात्त प्राप्त भाव्य या १७ वि न के च्वे होत्ते व्याय स्ता म्यात्व स्त्र काः ध्रायां गुला घार्ण ते प्रात्त प्राप्त भाव्य था। सप्तां गुल स्रां वी थ ध्या या प्रसज्य साम्राप्त स्था काः

- बते ९० विष्रोध्यपात ग्यत्वा तरु छा या फलन्या के एक छा या या यही न्वा तया नाज छंजु प्रभव वर्ग विन नेत एव

भाश्यादत्यसम्भभिवित्रज्यतता तब्यं द्वार्य्यागु स्त्रग्वेताः छा या भवति ॥ उदाहरएंग ॥ ममांगु स भंकु छाया ६६ १३६ दार्ट्र् पुरागु २९९१ १० ममभक्ते तब्यं दार्ट्र् एंग् उत्तर्थ छाय्य प्राज्ञ यते भूत्रग्रे सा धा ९४७१ ॰ अत्राप्यानयने एव्मेव ॥ श्रुष्ट्रे मेत्रो छा भ्ये हार्य्यागु स्त्रांगु स्त्राप्यानयने ॥ र्ष्ट्रे स्त्र धा ९४७१ ॰ अत्राप्यानयने एव्मेव ॥ श्रुष्ट्रे मेत्रे भ्ये हार्य्यागु स्त्रांगु स्त्रायानयने ॥ र्ष्ट्रे स्त्रां धा ९४७१ ॰ अत्राप्यानयने एव्मेव ॥ श्रुष्ट्रे मेत्रे भ्ये हार्य्याग्र स्त्रां भ्यान्यते विद्यो भ्यतद्वा भन्ने मेत्र धा ९४७१ ॰ अत्राप्यानयने एव्मेव ॥ श्रुष्ट्रे मेत्रि हार्या भन्न द्विद्या भन्यते विद्या भन्न मेत्रं भाष्या ॥ र्द्रे स्त्राद्वा द्वार्या भद्र देव्या क्या स्त्रां हार्या भन्न दि ग्रिया भज्जे देव्या भिन्न दि तां झा २९ रते यां हार्ट्यां जुल ए को कियती छाया भवति उन्त्र तां रा २९ नवते छा ता २९ एते यां छाया पुस्तग सिदितज्जातः प्राप्तं जुल ए को कियती छाया भवति उन्त्र तां रा २९ नवते छा ता २९ एते यां छाया पुस्तग सिदितज्जातः प्राप्तं जुल एको कियती छाया भवति उन्त्र तां रा २ नवते छा ता २९ एते यां छाया पुस्तग सिदितज्जातः प्राप्तं जुल एको कियती छाया भवति उन्त्र तां रा २९ नवते छा र हो म्र तां धानानां सप्तां जुल एवं ते कियती छाया भू २३ र्यु वन्त्र या पि भन्न स्त्रं अप्य यंत्रे ए प्र्वन्ते स्व स्त्र यता रा दे स्त्र रा तां धानानं सप्तां जुल एवं दे दिर्या राज्य न प्यं कयि स्त्रादिताना मनु विभ्यत्वान्यं यंत्रे एत्न सत्र व डित्रायाः ॥ राग्वे स्वपाराय भुव स्व भुजाय मप्यं का यित्वाच तडन्त्र ता छा वन्ते एत

१ अनेयाहारक्रांगुलक्षंतुत्वर्ग्रभ्भः विम्नोत संस्ताहारक्रोमतामा नाहारक्रांगुलका बुताक्राया गुलाग्ना ५६२८ मध्यहरक्रमतांका ५२०तेष्ठ् यप्रागुलक्रंकोक्राया तुम् । तेभवनिउन्त्रताक्रा २२ भवे त्वतुता २८ ९तेसां तायरप्रस्तगरते । वित्तप्रताया नां प्रांगुलक्षा २८ अत्याम लगतुण कुत्वर्गे ४९ विभ पं ४५ वविश्वा ५३॥समंद्रयेक्ष्मिमणापिविन्दं धांतरसमसमादत्तं च रद्भादतंवा निजमानअतं क वविश्वा ५३॥समंद्रयेक्ष्मिमणापिविन्दं धांतरसमसमादत्तं च रद्भादतंवा निजमानअतं क बावदेशेदिततां गताज्ञः ५४ व्याख्या॥सं आदिकाना- मग्रं यंत्रेणविश्वातृंगतायाज्ञत्त्ये तानाप बावदेशेदिततां गताज्ञः ५४ व्याख्या॥सं आदिकाना- मग्रं यंत्रेणविश्वातृंगतायाज्ञत्त्ये तानाप वां भूभ्य खपादाग्यू अज्ञाविन्द्ध्यत्वा तडन्त्रतां राग् न् तेभा दीनां मन्य येत्राणविश्वातुंगतायाज्ञत्त्ये तानाप वां भूभ्य खपादाग्यू अज्ञाविन्द्ध्यत्वा तडन्त्रतां राग् क् तेभादीनां मग्रं यंत्रेणविश्वात्वा मन्त्रत्र नाग वां श्रंक हथस्य मध्यादन्य तरस्य विद्यायराग् क्रिंगादीनां प्रयत्ने वित्तायत्व विद्यायत्व विद्यायत्व प्र विद्यात्र क्ष त्वात्र विद्य श्रयवातता विद्यर्थत्र प्रयत्त्व त्राण्यात्र त्यात्वा श्रयत्व प्रयत्व म्यार्थ त्वात्र स्वात्र विद्यर्थतः प्रद्यतन्त्र व्यत्त्र प्राण्य त्यात्वा श्रयत्व प्रयत्व प्रयत्य त्वा विद्यदिक्ता दययतः प्रदत्व व्यत्य व्यत्तं भारीनां मयं अज्ञाधिदेश्य विश्वात्वयाराय स्वर्य वयेविन्द्र द्यत्व व्यत्त्व अप्रयातता देवत्त्व व्यत्यत्त्व नेशायत्व ज्वस्पाप येत्र गर्य स्व वयेवन्द्र द्यत्यतः दृवत्व व्यत्य व्यत्त व्यत्यत्त्व नेश्व द्यात्र विद्याययाय क्षत्र स्वाप्य येत्य स्वर्य यात्र क्रायविन्द्र द्यात्र सिद्य विद्यत्व ययन्यत्त्व नेश्व दिर्णाण विद्याययाय द्यात्त्व नेशायात्र स्वाय्य्याय्य्य कार्यात्व द्यात्र सिद्यात्र स्वाय्यत्त्व विद्यत्व अत्रीराहण्णं नेर्णयः व्यक्तते सति निज्य वयुर्वातंत्र त्याय्य कार्यात्व द्यात्र सिद्यत्ते नर्ग स्व

*उंरा*घा

रां को : छापां लब्ज ५१२२ अन्नेत सिख उथा दि मे साता छापा ५२२ अन्नेत प्रयंत ज्या दे रि ईद्रसी छाया भवति मका एका स्वेयः तदुपर्श्व नगां श्य वर्तने न तो स्वयणणम गवना मुपरि प्राप्ता उन्नत ज्या र ६२ एख नगे शेख छ जा ग्रमा रोप पुर्व स्थिति र प्रयंत र प्रस्न का मे तिया भर या पु च स्थान स्थार गि न ज्य २२ एख नगे शेख छ जा ग्रमा रोप पुर्व स्थिति र दि प्रति र प्राप्त का भर्तने या भर या पु च स्थान स्थार गि न ज्या त्र के भू मे प्रत स्वाय र ये दि र ते स्वीय र चिन्हे यो रते र प्राप्त का भर्तने या भर या पु च स्थिति स्वाय मान २ स्प्रे अने का ता २९ एने कि र ते स्वीय र चिन्हे यो रते र प्राप्त का स्थान स्था मा स्थान का मान २ स्य उप स्थान या स्थान के उन्च मान भागतं एवं सर्व प्र का सन्दार गि हिन्ते र व व प्रमान च यद् स्था दयमा रूण शोरं स्ववंग्राध्ने दिति जे निधाय चिन्हे मगा या दे खता सक्त स्वी ॥ कुर्या द्वि प्र स्य रया स्थातालां द्राके छ वा मं मकरान ने च ३० ५ दी क्र त्वां क ये । स्व कु जे नवे थे तं लग्त मसाद्य ग यदस्य यदे नच के वित्र जे झरावेटां तरं रवि गे प्राप्ति कि जिन्हे के जे नवे थे तं लग्त मसाद्य ग य दस्य यदे नच के वित्र जे झरावेटां तरं रवि गे प्राप्ति कि कि के जे मा र स्थित ते त्व राम स्थिते व्व प्राप्त य दस्य यदे नच के वित्र जे झरावेटां तरं रवि गे प्राप्त सि स्ता उन्हे रा ने व्य त्य र च ते त्व र का सन्द ते अन्तां तरे एगा स मिद च कुर्या त गल च्यो दि ना दि सु फ्र लंग्र दस्य का सा स्था दरा न का कद से पत्र स्था त र प्र क्यांच्या रवा ॥ के र लव कर्या राज कि स्वाति जे उद्य रे य्वा या निष्ठा य का कट से पत्र स्व गाग्रं नगे नवति त व च चिन्हे यी न र हुत् ते समा हिन्हा र भी ए यह स्था का सा खा ये उपा म का का द से प्र र सि जा त २ शेलेंदव १० ज्यविषे १३ वह्ता १२ नवे १ ११ म्यराः १९ भौमादिषं व तेर्टना समधासाध्मेलताः १ न्युन त्यवध्यापिव क्रिएगेन्हपवर्जिता इत्यारिअप्यांतरोकाः कार्राशा उत्मेलभोम वध्य अन्नेष्टानि त्रांत्र या उद्य असे

चताध्वमानेए मं ४६ विक्रंकत्वामकरानने स्पाप्रयेत एवं क्रते सतिक्षम् क्रजे यन्त्रयं लगतिवस्त्रये सस्ययहस्पा ती प्यत्र खाव्यागर गंसायनंभवति तत्रकालांशतातमितं ग्रेड्याः त्र्युविक्ताः कात्तांशायुत्तरोक्तभवति ७ स्य वितम्यतस्पर ५९ व्रत्रश्रभ्यो १० एतेष्ठर्रात्तात्त्रात्त्रास्य स्वियर्थप्रवान्यनं ॥ ततात्मत्र यूर्त्या स्व तरंबन्न. े रॅंबजस्यिते यहेरविरेवट मुझ्येति ॥ततो खर्ट्या भीष्ट यहस्या दये गरापमाने दिनादिका समान् "लर्ग्न कियोगे मंत्रिण क कालस्या अधिके ऐव्यकालः स्पत् इतिभावाधी इदमग्रेव् सते गश्च ने दिरुएएंग् संवत् १७४ आ भीन अद्र १५ गृहदिने अईरात्रम्मपेसापने। रविछक्के साधिते। रविश्व १२९३ भक्ति ५१२९३२ भक्तिव अता २४/४२ रव्यंग्रीक रचिति नापरिधतेमकराननं चतुः सन्न त्यपिकशतेख १५४ सग्तं तत्रचिक् क्रतेष्ठ गतेर्वक्रताह्य अस्वीद्यवसात् मानमहत्वे, प्रेषोकालां रगतान् एर्वन्वन्तत् प्राक्ष एष्ट्रभागे गण्यित्वामकरा ननंस्थाप्यं ॥तन्त्रजाता १६६ भागाः एवं इते त्रा खुः जे कन्यलिकं सायनं ५१२४१० उपविष्टं एन छु अस्पा व स्तस्भूद्यात्वे क्यमुचाते क्यमुखयेगरं तरंभागदिकं ५ मध्या ६० सवर्शातं २०० वजेवसात् रविष्ठ मामतियागेन दक्ष मक्तं ततोलव्यादनारिकाल ११३४१ % यदिलमाइनो गरुमादा गतकातः वदि

लग्तादधिवलदारोष्यः कालः गतं ३१३४१ १० मिस्रात् ७११ भूषोध्यते ततीश्रस्तिनणुद्र राचंद्रेउ दयात् गतघरी १०पत ४८ समये खुकेदियो जात ३ति सिद्र । एवमन्य त्रापि । श्रययंत्रे एभोमा दिपंचक स्पालतानंगइषेद्नितप्रखगस्पचालकालेग्हीकोंभवोन्त्रतांशान् धिस्नाननंतेयनिवेश्पविद्यासु उ जेपरेभाषावगस्पलग्तं ५९ गतांविपित्वा मकरास्पमंशोर्भागविधायापे म् जदेशे जनमगाग्रे नविधा य चिन्हें इयस्पांतर जानीभागान् ६॰ कालां शकेरिए स्वगस्पहीना स्तु त्वा न रोष विभजे अगवात् वि रवेगण्वेद्धिवालद्याः कालाभवे झानतरेगते सिन् ६९ भानयाकी खाग्या गइएदिने इषग्रहर्षान ल मनसमये एकस्य में विद्यात् नानीयात् ततामकरा ननमंकपित्वार्धस्य भागमंशं अपरे किनेनिवेशप अनःमगानने नर्भवाश्वारण म्हित्र दियस्प हर्वापर चिन्द्रेपा रतरो द्वान्भागानंशानिष्टग्रहस्पकालां अवेहीनान्वा अपरोधं घराव हि ननं पत्त्व चंग्र भजेत रवेण्वेदधिकीग्रदीभवतिनदाएम्यः कालः अपचेहीनोभवति तरागतकालः ॥अत्रीदाहरणं मवेष्ण्य लक्ष संवत् २४३४ अप्राफ्तिनवय ३० गुतरिनेऽर्धराचममयेस्फ्रेलेरविछक्रीयंत्रेरासाधितीरविः सायनभाष्ट अभाषयहरयका ५४ अक्तिभण्ड॰ छन्नः भारर् ७३ अक्तिः रू एत्पारे भरत तत्वालछन्नासमये स्रवएन त्वान तांशाः

^२'चे दं ज**ला रव्ये राप्**रे कुने निभायं मत राष्ट्रे ३ भर उपर लगे सति

4 80

т н

भि माच्याः ६० तत्र नस्त नमे समानीते आपर कु जै श्र आत्त अत्रं साय मं भारू १० खग्त वति म कराननं तु ३५० उपरि ज मं तर्जे चिन्ह दयां तरात् छन्न स्पर्क खोशाः पात्ये तै व करवा न्य पतं ति त घ शाखे य मेवां तर सवएप व कत्वात् भक्ति योगेन अज्यते = ६१०५ सच्यादिना दिकालः २०४२ ७४ २ रू यत्वानि पदिर धेर धक्रे भ य मेवां तर सवएप व कत्वात् भक्ति योगेन अज्यते = ६१०५ सच्यादिना दिकालः २०४२ ७ ४ रू यत्वानि पदिर धेर धक्रे भ भ भाषपा २५ मध्ये यो ज्यं ६ ज्ञातं एता च ता आ श्विन श्रुद्ध २ रह तिया शान्ति दिने गत घ टी २० प से ७ तत्य ज्वला श समये छन्न स्पास्तः पश्चिमा यात्र विषा तिपरः राताः संतु कवी श्वराणां स्वर्था पपत्ये गरित प्रवर्ण त्वाल ल्या समये छन्न स्वात्त स्वात्र प्रात्त त्वाच ता आ श्विन श्रुद्ध २ रह तिया शान्ति दिने गत घ टी २० प से ७ तत्य ज्वला श समये छन्न स्वात्त के विकास यात्र विषाति परः राताः संतु कवी श्वराणां स्वर्था पपत्ये गरित प्रवर् भाः श्रीस्माक मे तात्त्व से देवत्य परो पत्ता राय विधानमान्न ६२ इतिश्री वंत्र राज ग्यं थर्नगत्वा भावा १२४१४ भाः श्रीस्माक मे तात्त्व से देवत्या परो पत्ता राय विधानमान्न २० इतिश्री वंत्र राज ग्यं थर्नगति १२४१४ भाः श्रीसाक हो ता स्वात्व देवत्य परो पत्ता राय विधानमान्न २० इतिश्री वंत्र राज ग्यं थर्नगी स मान्नायं यंत्र राज हो को वहारो ए ५० ॥ अयवल पर्य त्रे श्वतार्थ रिया न गां ए के जल्या पत्र भि गुरातां तस्पा शकेत्व हो सिहरे र व्यभागे त्र भागानि रेका गुरा संग्र राज ग्रे भत्ता ग् तरो यनाहाः ॥ इति वहार्य त्रे गिर्ह र रव्यभागे त्र भागानि रेका गुरा संग्र राज राज राज हो दिम ता च वर्धाः यष्ठ प्रतत्यां गुराणा ता स्यात्व स्प्र ति मितां ग्रहा राज राज राज राज

मंछन

₹यत्रतचिन्हतः खेखनुतस्नमाएँ ॥न्वेयंग्रमानेनुचय।नितंक स्ततुत्पसंख्याघटिकात्रमाए ヽ"रणेचानुकयंत्रं॥ अयभ्रते। द्यंत्रं विद्यर्कमुख्य ॥ स्दीर्सच्यविक्रञ्मनुग्रहगजन्त्री शाग्र एगः प्रत्मभान्ति सः खार्क २२ गुएग भचच कुलिका भन्ता २९६० रहरा प्रत्ननेः यात् देशिग्र एग हतं खर्ग्व २९० हत्वच्यं ष्ट्रयुद्ध्यार्व तः २९० त्र रोण्येच सपीपगंच तऽभयार्थं सिष्ठके ताय् या २ तफा संत्रय मी त्यमध्यमवय रूपं गांक अकड किवा जातं ह्वातु वियो जित तंज भवा असे एग संता र येत्र ए बद्दा २९ त्वर्ग्य गांक अकड किवा जातं ह्वातु वियो जित तंज भवा असे एग संता र येत्र ए बद्दा २९ त्वर्ग्य गांक अकड किवा जातं ह्वातु वियो जित तंज भवा असे एग संता र येत्र ए बद्दा २९ त्वर्ग्य गांक अकड किवा जातं ह्वातु वियो जित तंज भवा असे एग संता र येत्र ए बद्दा २९ त्वर्ग्य गांक अकड किवा जातं ह्वातु वियो जित तंज भवा असे एग संता र येत्र ए बद्दा २९ त्वर्ग्य गांक अकड किवा जातं ह्वातु वियो जित तंज भवा असे या संता र येत्र ए बद्दा २९ त्वर्ग्य गांक अकड किवा जातं ह्वात् वियो जित तंज भवा असे या संता र येत्र ए बद्दा २९ त्वर्ग्य त्वात्वर्ग २० त्वर्ह्ता रेण्ठं तदेष्व त्व वियिग या त्वार्ग्व वियो जित्त र भवा यर्व सरे र र त्वर्ग्य का त्वर्ग्य गांक प्रता न यत्व या ॥ संवत् २९ ९९ साधा स्त्री सिहाम वध्य वासरे र र प्रसा गालि ति तं जी वर्णरा मे एग्रता प्रधे राव यं पहनार्थी ॥ जी गापा सजी सहरम

Digitized with financial assistance from the Government of Maharashtra on 11 June, 2017





•